Kashmiri Pandit Sabha
JAMMU (Tawi)

Hindi
154
29.4.89

कम्बन्

एस. महाराजन

भारतीय साहित्य के निर्माता

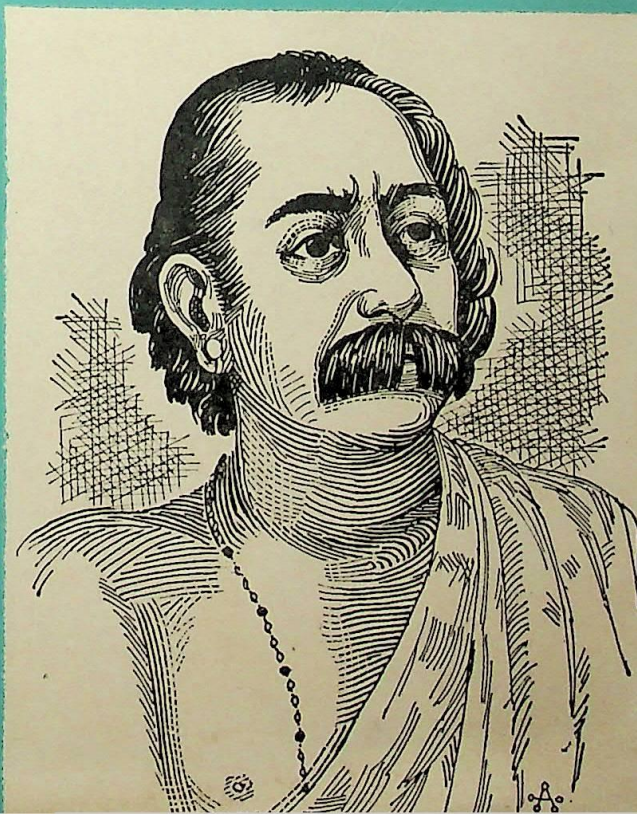

कम्बन्, जो संभवतः महानतम तमिल कवि कहे जा सकते हैं, नवीं सदी ईस्वी में हुए थे। उनके महान् काव्य ने शताब्दियों पर अपनी पकड़ बनाए रखी है; क्योंकि वे उन कालातीत समस्याओं का काव्यमय उच्चार करते हैं जो हर युग में उद्भूत होती हैं और जिनके उत्तर कल्पान्त तक मानव-आत्मा को आकृष्ट करते रहेंगे। उन्हें ठीक ही कवि-चक्रवर्ती कहा गया है।

अमरीका के एक प्रसिद्ध कवि एडवर्ड ल्यूडर्स कम्बन् के अंग्रेजी अनुवाद पढ़कर कहते हैं, "इन उद्धरणों के शीघ्र-वाचन से भी मुझे यह स्पष्ट हो जाता है कि अनुवादक उच्च-स्तर के कवि और महाकाव्य पर काम कर रहा है। विश्वजनीन मानवीकरण के लिए कवि कम्बन् की विशिष्ट पकड़ उच्च भावात्मक बातों को भी मानवीय सूक्ष्मता से संबद्ध कर देती हैं।"

लेखक, मद्रास उच्च न्यायालय के न्यायाधीश, न्यायमूर्ति एस. महाराजन्, कम्बन् और उनकी कविता के एक महान् प्रेमी हैं और यह पुस्तिका उसकी गवाहीदेगी।

आवरण-सज्जा : सत्यजित् राय।

रेखाचित्र : के. आनन्द द्वारा; कम्बन् कषगम, करैकुडि, द्वारा प्रकाशित रेखाचित्र के आधार पर।

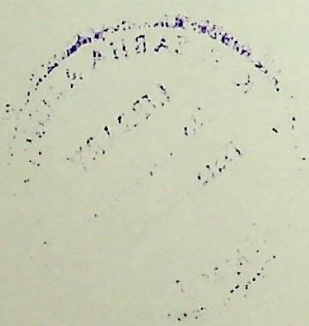

कम्बन्

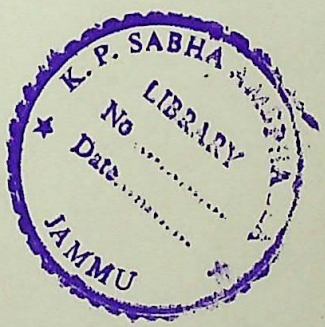

भारतीय साहित्य के निर्माता

कम्बन्

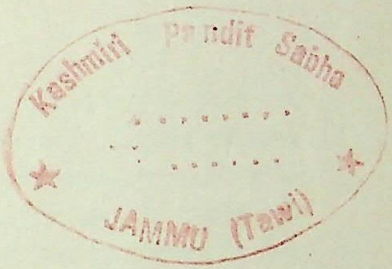

लेखक :
एस० महाराजन

अनुवादक :
महेन्द्रकुमार वर्मा

साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली

Kamban : Hindi Translation by *Mahendra Kumar Varma* of S. Maharajan's English Monograph. Sahitya Akademi, New Delhi (1979). Price Rs. 2.50

मूल्य : दो रुपये पचास पैसे

© साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली

साहित्य अकादेमी
रवीन्द्र भवन, ५३, फ़ीरोज़शरोड, नई दिल्ली-१

ब्लाक ५ बी, रवीन्द्र सरोवर स्टेडियम, कलकत्ता-२९

२९ डी० एल्डम्स रोड, तेनामपेट मद्रास-१८

१७२, नैगाम क्रॉस रोड, दादर, बम्बई-१४

मुद्रक : रूपाभ प्रिंटर्स, दिल्ली-३२

Kashmir Pandit Sabha
JAMMU (Tawi)

आमुख

इन उद्धरणों के शीघ्र-वाचन से भी मुझे यह स्पष्ट हो जाता है कि अनुवादक उच्च स्तर के कवि और महाकाव्य पर काम कर रहा है। विश्वजनीन मानवीकरण के लिए कवि कम्बन् की विशिष्ट पकड़ उच्च भावात्मक बातों को भी मानवीय सूक्ष्मता से संबद्ध कर देती है। वे मानवीय अनुभूति के संसार पर लिखते हैं और कवितामय गीत के उदात्तीकरण द्वारा वह प्राप्त करते हैं जिसे पाने के लिए समग्र विश्व का महाकाव्य प्रयत्नशील है—दिव्य और कालातीत का पार्थिव और अनुभूतिजन्य से परिणय।

मैं अनुवाद-कौशल से प्रभावित हूँ जो, तमिल से कर्कश और विदेशी इंग्लिश में पूरी तरह उपयुक्त अनुवाद की असंभाव्यता को समझकर पछताते हुए भी, सुरुचि और उल्लेखनीय उत्साह सहित मूल के विशिष्ट गुण को प्रतिबिंबित करता है। उसका इंग्लिश में क्रियान्वयन प्रभावोत्पादक और स्वागतार्ह है। कम्बन् स्पष्टतः एक ऐसे कवि हैं जिन्हें श्री महाराजन् के सावधानीपूर्ण सुरम्य अनुवाद के जरिए जानकर इंग्लिशभाषा-भाषी संसार संपन्न हो जाएगा।

इंग्लिश-विभाग,
ऊटा विश्वविद्यालय,
साल्ट लेक सिटी, ऊटा ८४११२,
संयुक्त-राज्य अमेरिका।

एडवर्ड ल्यूडर्स

विषय-सूची

प्रस्तावना	९
कम्बन् का युग	११
बालकांड	१४
अयोध्याकांड	२५
अरण्यकांड	५०
किष्किधाकांड	६४
सुन्दरकांड	५८
युद्धकांड	७२
उपसंहार	८२
संदर्भ ग्रन्थसूची	८६

प्रस्तावना

बीसवीं सदी के तमिलनाडु में कम्बन् को जो अतिशय लोकप्रियता प्राप्त है उसके आधार पर कोई भी विदेशी यह अनुमान लगा सकता है कि कम्बन् एक समकालीन कवि हैं जिन्होंने आज की गंभीर समस्याओं पर काव्यरचना की है। इस प्रकार के अनुमान में ग्यारह सदियों की चूक हो जाएगी, क्योंकि कम्बन् नवीं सदी ई. में रहे और दिवंगत हुए। उनके महान् काव्य ने शताब्दियों पर अपनी पकड़ बनाए रखी है, क्योंकि वे उन कालातीत समस्याओं का काव्यमय उच्चार करते हैं जो हर युग में उद्भूत होती हैं और जिनके उत्तर कल्पांत तक मानव-आत्मा को आकृष्ट करते रहेंगे।

कम्बन् के पीछे सहस्राधिक वर्षों की एक अविच्छिन्न काव्यपरम्परा थी। उन्हें वह लाभ नहीं मिला जो वसंतागम के तमिल कवियों को प्राप्त था। कम्बन् के प्रादुर्भाव से पहले, बीसियों कवि-पुंगव तमिल-भाषा का प्रयोग कर चुके थे; जब वह लचीली और प्रतिनिनादिनी ही थी तभी ईसा-पूर्व के संगम कवियों ने उसे एक नाजुक स्वल्प-भाषित्व और संयम प्रदान कर दिया था। दूसरी सदी ईस्वी के तिरुवल्लुवर ने उसमें वह स्पष्टता, यथार्थता और संक्षिप्तता उत्पन्न की जिसके कारण उनके पद्यों के विषय में डॉ० ग्राउल बरबस कह उठे 'चाँदी का काम किए हुए सोने के सेव।' छठवीं और नवीं सदी के बीच, वैष्णव संतों (अलवार) और शैव संतों (नयम्मार) के द्वारा भाषा में असाधारण लोच तथा ऊष्म गतिमान गीत के गुण भर दिए गए। ऐसा लगता था मानो कम्बन् के प्रादुर्भाव से पहले भाषा के हर संभव-गुणों का पूरी तरह उपयोग किया जा चुका था। किंतु इन बाधक-तत्त्वों के बावजूद, कम्बन् की प्रतिभा ने भाषा को उद्गार की एक नवीन शक्ति प्रदान की और उसके द्वारा काव्य के निर्दोष पूर्णत्व का उपार्जन किया।

उन्होंने रामायण को चुना, क्योंकि, महाभारत से भिन्न, सरल राम-कथा उन जटिलताओं से मुक्त थी जो काव्य के मुक्तिदायी प्रभाव से पाठक का ध्यान अलग हटातीं। अलवारों के भक्तिमय गीतों के जरिए तमिल जनता कई शताब्दियों से रामकथा की प्रमुख रूपरेखा को जानती थी और कथा के विविध

प्रसंगों का आनन्द लेती थी। कम्बन् जानते थे कि इस प्रकार की सुपरिचित पृष्ठभूमि का लाभ यह था कि वे पाठक का सम्पूर्ण ध्यान कहानी से अलग हटा सकते थे और उसे अपनी सर्जनशील, वर्णनात्मक, नाटकीय व गीतमयी प्रतिभा के आश्चर्यों पर केंद्रित कर सकते थे। वस्तुतः अपनी रामायण की प्रस्तावना में वे सगर्व उद्घोष करते हैं कि उन्होंने अपने कथानक के लिए रामायण को चुना है जिससे काव्य की महानता और दिव्यता प्रदर्शित की जा सके। इस दावे को वे अद्भुत सफलता के साथ पूरा करते हैं।

वस्तुतः, कम्ब-रामायण के जन्म के बाद से ही तमिल-काव्य का पूरा भविष्य बदल गया, और पिछली ग्यारह सदियों से यह महान् कृति तमिल-जनता की काव्यानुभूति पर अतिगहन प्रभाव डालती रही है। विद्वानों की एक लंबी शृंखला, कम्बन् के समय से लेकर हमारे समय तक, प्रवचनों के द्वारा जन-साधारण को भावविभोर करती रही है। इन प्रवचनकारों के भरणपोषण के लिए तमिल नरेशों के द्वारा भूमिदान की गई। केरल, कर्णाटक और आंध्र स्थित समीपवर्ती क्षेत्रों में उपलब्ध शिलालेख यह बतलाते हैं कि कम्ब-रामायण का प्रचार-प्रसार उन लोगों में भी था जिनकी मातृभाषा तमिल नहीं थी। इस प्रकार कम्बन् जनसाधारण की शिक्षा और संस्कृति के एक अत्यन्त शक्तिशाली साधन बन गए। उन्होंने दक्षिण की जनता के दृष्टिकोण, आचरण तथा सौन्दर्यवादी एवं धार्मिक प्रवृत्तियों को एक आकार दिया; उनकी रामायण चिरंतन राष्ट्रीय स्मृति का एक अंग बन गई। सभी कवियों और विद्वानों ने उन्हें कविचक्रवर्ती कहकर सराहा और वे इतिहास में विद्वत्तम कवि के रूप में प्रसिद्ध हुए। कम्ब-रामायण के लोकप्रिय प्रवचनकार महीनों तक लगातार प्रवचन देते हैं और आश्चर्य है कि आज भी बीस से लेकर चालीस हजार तक स्त्री-पुरुष व बच्चों की विशाल भीड़ इन प्रवचनों में उपस्थित होती है और एकाग्र चित्त से आनन्द-मग्न होकर कम्बन् के गीतों को सुनती है। उस कवि के विषय में अवश्य ऐसा कुछ कालातीत होना चाहिए जिसने सहस्राधिक वर्षों से लोगों का ध्यान अपनी मुट्ठी में रखा है। कम्बन् कभी भी पुराने नहीं पड़ सकते क्योंकि वे आने वाले कल की आवाज में हमसे व सारी दुनिया से बात करते हैं।

कम्बन् का युग

कम्बन् के युग के विषय में विद्वानों के बीच काफी वाद-विवाद है। एक दृष्टिकोण से, जो कि अधिक तर्क-संगत मालूम पड़ता है, वे नवीं सदी ईस्वी में हुए थे, और दूसरे दृष्टिकोण से वे तेरहवीं सदी में विद्यमान थे।

किन्तु विद्वानों के बीच यह मतैक्य है कि कम्बन् तन्जौर जिले में थिरुवझुंदूर जिले के निवासी थे, और सदायप्पा नामक एक जमींदार उनका महान् प्रशंसक और सम्रक्षक था एवम् कम्बन् के सर्वोत्तम गुणों को पूर्णतः उद्भावित करने के लिए हम इस सम्रक्षक के कुछ कम ऋणी नहीं हैं।

जनसाधारण की कल्पना ने कम्बन् के नाम के चारों ओर अनेकों आख्यान रच डाले हैं और ये आख्यान जो कि ऐतिहासिक सामग्री के रूप में पूर्णतः मूल्य-हीन हैं, लोगों के उस प्रयास की ओर संकेत करते हैं जो उन्होंने अपने महान् कवि की प्रतिभा का विश्लेषण और मूल्यांकन करने हेतु किए हैं।

एक आख्यान के अनुसार कम्बन् चोलराजा के दरबार के एक गौण कवि ओत्कूतर के समकालीन थे। अंलकार शास्त्र और छंद रचना के ऊपर प्राप्त अपने अधिकार के जरिए ओत्कूतर अपने समय के साहित्यिकों के ऊपर तानाशाही रवैया रखता था; उस समय के छोटे-मोटे कवियों का, जो अज्ञानवश व्याकरण, वाक्य रचना या अलंकार शास्त्र की छोटी-सी भी भूल कर देते थे, संहार करने के लिए राजा भी उसे सहन करते थे। किन्तु कम्बन् के प्रादुर्भाव के साथ ही जिनकी गहन काव्य प्रतिभा ने व्याकरण के स्वीकृत साँचों को तोड़ दिया था और जिन्होंने ऐसे-ऐसे शाब्दिक सुर आविष्कृत किए जो ओत्कूतर के पारम्पारिक मानदंडों से आगे बढ़कर थे, ओत्कूतर का राजा के ऊपर प्रभाव कम होने लगा और कम्बन् चोलराजा के दरबार में राजकवि हो गए।

एक दिन राजा ने राम की पौराणिक कथा का एक काव्यमय संस्करण तैयार करने के लिए दोनों कवियों से प्रार्थना की। ओत्कूतर अत्यंन्त प्रामाणिकता से अपने काम में जुट गया और निम्न श्रेणी के पद्यों की एक परिश्रमजनित कृति तैयार करने में लग गया। कम्बन् को अपनी कृति प्रारम्भ करने की कोई जल्दी नहीं थी बल्कि वे अपना समय आमोद-प्रमोद में बिताते रहे। कुछ समय बाद राजा

ने दोनों कवियों को बुलाया और उनकी प्रगति के बारे में पूछताछ की। कम्बन् ने कहा कि वे छठवें सर्ग तक आ गए हैं और उस पुल के सम्बन्ध में लिख रहे हैं जो कि राम और रावण के युद्ध के पूर्व राम की वानर-सेना भारत और लंका के बीच बना रही थी। ओत्कूतर, जो इस मनगढ़न्त कहानी को सुन रहे थे, जानते थे कि कम्बन् ने तो अभी पहला सर्ग लिखना भी शुरू नहीं किया है। इसलिए उसने कम्बन् को सेतु निर्माण के दृश्य से सम्बन्धित एक गीत सुनाने के लिए ललकारा। कम्बन् ने तुरन्त श्रमविहीन स्फूर्ति के साथ नीचे लिखे गीत का मूलपाठ मुखाग्र ही सुनाना शुरू कर दिया—

वानर-सेनापति कुमुद ने
शिलोच्छलित सागर में फेंका एक गुरुतर गिरि;
जो, नर्तक के तालबद्ध पदचापों सहित,
चट्टानों पर लुढ़कता-पुढ़कता, हुआ भ्रांत, मथित;
और उछली सागर के बूंदों की एक आकाशगामी फुहार,
जिससे स्वर्ग के निवासी उछल पड़े खुशी से,
इस आशा में कि पुनः सागर से निकलेगा अमृत।

कम्बन् को इस प्रकार बिना किसी तैयारी के ही सफलता-पूर्वक गीत प्रस्तुत करते हुए देखकर ओत्कूतर झुँझला गया और उन पर यह दोष लगाया कि उन्होंने अपने गीत में 'थुमि' शब्द का प्रयोग किया है। कम्बन् ने कहा कि इसका अर्थ 'बूंद' होता है। ओत्कूतर ने आक्षेप किया कि इसके लिए उपयुक्त शब्द 'थुलि' है, न कि 'थुमि' किन्तु कम्बन् का कथन था कि यह शब्द लोगों में प्रचलित है। ओत्कूतर ने इस प्रयोग को सिद्ध करने के लिए ललकारा। कम्बन् तुरन्त ही अपने प्रतिद्वन्द्वी और राजा को लेकर शहर में गए। उन तीनों ने एक ग्वालिन को देखा जो अपने घर के सामने दही मथ रही थी और अपने चारों तरफ खेलते हुए बच्चों से कह रही थी, 'भाग जाओ, बच्चो, नहीं तो दही की बूंदें (थुमि) तुम्हारे ऊपर उछलकर गिरेंगी।' यह कहकर वह ग्वालिन आश्चर्यजनक रूप से गायब हो गयी। ओत्कूतर समझ गया कि विद्या की देवी सरस्वती स्वयं ग्वालिन का रूप रखकर आई थीं, कम्बन् के शाब्दिक आविष्कार को सत्य सिद्ध करने के लिए।

निराश होकर ओत्कूतर अपने घर गया और उस रामायण के सातों सर्ग फाड़कर फेंकने लगा जो उसने अत्यन्त सावधानी से एक शब्दकोष की सहायता से परिश्रम-पूर्वक बनाई थी। मौके कि बात है कि कम्बन् उसी समय अपने प्रतिद्वन्द्वी के घर गए और देखा कि केवल आखिरी सर्ग उत्तरकाण्ड नहीं फट पाया है। विशिष्ट शालीनता के साथ उन्होंने अपने प्रतिद्वन्द्वी का हाथ पकड़ लिया, उसे उत्तरकाण्ड फाड़ने से रोका और उस काण्ड को अपनी उस रामायण के अंतिम सर्ग के रूप में समाविष्ट कर लेने की अनुमति ले ली जो कि अभी लिखी

जानी थी।

यह वांछनीय है कि हम कम्बन् के संदेश को उस समाज के कल्याण की दृष्टि से देखें जो गहराई की सीमा को खो देने के खतरे में है। कम्बन् के लिए जीवन के अर्थ का प्रश्न असीम गांभीर्य लिए हुए है, और अपने महाकाव्य में वे जीवन के अस्थायी चिन्तनों को इतने प्रभावी रूप से निश्शब्द कर देते हैं कि वे हमें 'परम-चिन्तन' की आवाज को लगातार सुनते के लिए समर्थ बना देते हैं। सत्यम् शिवम् सुन्दरम् की उनकी अन्तः स्फूर्त और सशक्त प्रस्तुति हमारी स्वयं की आत्मा को सम्बल देती है, अहम् कि कठोरता को पिघला देती है और हमारे भीतर 'आनन्द' की एक नई मानसिक दृष्टि उत्पन्न करती है। आशा है कि कम्बन् के इंग्लिश अनुवाद के द्वारा इस 'आनन्द' का थोड़ा बहुत हिस्सा प्राप्त हो सकेगा।

बालकांड

राम की पहली लड़ाई

कम्बन् के द्वारा वर्णित राम की पहली लड़ाई पर हम एक उड़ती नजर डालेंगे। राजा दशरथ की इच्छा के विरुद्ध महामुनि विश्वामित्र किशोर राम और लक्ष्मण को राजा के पास से भयावह निर्जन में ले जाते हैं। जंगलों की लुभावनी हरियाली और पहाड़ियों पर से लहरातीं, समतल भूमि पर थोड़ा रुकतीं और सीधी चट्टानों पर से नीचे गिरतीं हुई नदियों में से तीनों पात्रों को ले जाकर कम्बन् शून्य अरण्य की भयावहता को प्रदर्शित करते हैं। नदियों की एक के बाद एक विरति और गति उन्हें नर्तकी के नूपुर की तालबद्ध झनकार की याद दिलाती है। उसके बाद वे मैत्रीविहीन, शुष्क, दग्ध और आर्द्रताविहीन मरुभूमि में आते हैं। गूढ़ व्यंग्य सहित कम्बन् मरुस्थल की शुष्कता को दो अतुलनीयों के मस्तिष्क से तुलना करते हैं—अर्थात् परमतत्त्व की खोज करने वाले और वेश्या—परमतत्त्व की खोज करने वालों से इसलिए की परमात्मा की निष्काम खोज के दौरान वे कामना की उष्णता से पार हो चुके हैं और विरागी बन गए हैं, वेश्याओं से इसलिए कि वे अपनी कामनाएँ किराये पर चलाती हैं और कामना का थोड़ा सा भी चिह्न उनमें नहीं रह जाता। हम देखते हैं कि कवि ने अपनी तीक्ष्ण बुद्धि से दो विरोधी तत्त्वों के बीच में एक आश्चर्यजनक कड़ी बड़ी कुशलता से जोड़ दी है।

इस प्रकार की भयानक निर्जनता की पृष्ठभूमि में विश्वामित्र ताड़का राक्षसी के अमानवीय उत्पातों के विषय में राम को बतलाना शुरू कर देते हैं।

इसके पहले कि विश्वामित्र यह बतलाएँ कि वह दूर की पहाड़ी पर रहती है लाल बालों वाली एक विशाल काली स्त्री आयी। वह जलती हुई आग की लपटों से युक्त काजल की पहाड़ी के समान दीख रही थी, उसकी भौंहों के किनारे क्रोध से काँप रहे थे। झुर्रीदार ओठों से उसका गुफा के समान मुंह बन्द था। अपने गले के चारों ओर वह हाथियों की माला पहने थी, हरएक जोड़ी की सूड़ एक दूसरे में फँसी हुई थी। वह बहुत जोर से गरजी जिससे स्वर्ग, आकाश और सातों लोक काँपने लगे और जिससे स्वयं वज्र भी स्तब्ध हो गया।

निम्नलिखित गीत में कवि राक्षसी की वेगशक्ति का संकेत देते है—

उसने उड़ते हुए बादलों को पकड़ लिया
और, अपने हाथों से निचोड़ते हुए,
उन्हें निगल गई;
विशाल पहाड़ियों को उसने चूर-चूर कर दिया
लात मार कर;
अपने बड़े-बड़े ओंठ उसने काटे जोर से
अपने बड़े-बड़े दाँतों से
जिनमें से हर एक लगता था अर्धचंद्र-सा;
उसने झपटकर उठाया अपना त्रिशूल
और गरजी,
'यह घुसेगा तुम्हारी छाती में।'

विश्वामित्र ने सोचा कि अब राम के द्वारा कदम उठाए जाने का समय आ गया है।

'हे रत्नमय !' ऋषि ने अनुनय की, 'उसने ज्ञेय बुराइयों के सारे मानदंड तोड़ डाले हैं; उसने हमें जिन्दा छोड़ा है क्योंकि वह यह समझती है कि हम खाने के लिए अयोग्य सिकुड़ी-सिमटी चीजें हैं। यही एक बात उसको रोके है। क्या आप इस राक्षसी को एक स्त्री और एक सुकुमार युवती समझेंगे जिसकी पीठ पर चोटियाँ लहरा रही हैं।'

अग्नि-ज्वाला सी वह राक्षसी समझ गई कि ऋषि राम के कान में फुसफुसा रहे हैं और उसने अपनी सफेद आँखों की लपकती आग के साथ अपना बैंगनी अग्नि-त्रिशूल उनकी ओर फेंका।

किसी ने नहीं देखा राम को
बाण का स्पर्श करते हुए
या अपना मनोरम धनुष झुकाते हुए;
किंतु देखे उन्होंने
गिरते हुए टुकड़े चूर्णित त्रिशूल के,
जिसे लिया था राक्षसी ने महामृत्यु के वृक्ष से
और सीधा फेंका था।

तब अन्धकार के समान काले रंग वाली उस स्त्री ने शब्दवेग से अगणित पत्थरों की वर्षा की जिनसे समुद्र भी पट सकते थे। वीर नायक ने बाणों की वर्षा करके उन्हें निष्प्रयोजन कर दिया। तब राम ने कर्कश वचन के समान तीक्ष्ण और उत्तापक बाण छोड़ा जो उसकी छाती को भेद कर उसके दिल के आरपार हो गया, जिस प्रकार दुर्जन से कहा गया सज्जन का सुवचन। उसके

बींधे हुए हृदय से निकला हुआ खून सारी मरुभूमि में फैल गया। ऐसा लगता था मानो सन्ध्या का गुलाब आकाश से अलग होकर धरती पर गिर गया हो।

राम की इस पहली लड़ाई में राक्षस जाति के खून के पिपासु यमराज ने उस खून का पूर्वास्वादन कर अपने ओंठ चटकारे।

महाबली की कहानी

ताड़का के वध के उपरान्त विश्वामित्र अपने संरक्षितों को मरुस्थल के उस पार एक सुन्दर उपजाऊ प्रदेश में ले जाते है। राम उनसे पूछते हैं कि यह किसका प्रदेश है। यहाँ पर विश्वामित्र के मुख से एक संक्षिप्त नाटकीय कथा सुनाने का कम्बन् को मौका मिल जाता है।

पुराने समय में महाबली नामक एक महान् राजा का इस प्रदेश पर शासन था। अपनी शक्ति के द्वारा उसने स्वर्ग और पृथ्वी को अपने अधीन कर लिया। अपनी ताकत बढ़ाने के लिए उसने एक ऐसा यज्ञ करने का विचार किया जिसे देवता भी नहीं कर सकते थे। इसलिए उसने अपना राज्य शिष्टजनों को सौंप दिया और महान् यज्ञ प्रारम्भ किया। इस यज्ञ की जानकारी मिलने पर देवता लोग विष्णु भगवान् के पास गये और उनसे यज्ञ को असफल करने की प्रार्थना की, जिससे कि महाबली और अधिक शक्तिशाली नहीं बन सके। विष्णु भगवान ने तुरन्त यह प्रार्थना स्वीकार कर ली।

ब्रह्माण्ड की रचना करने वाले उन्होंने एक बौने का अवतार लिया। जिस प्रकार से विशाल वटवृक्ष एक छोटे से बीज में स्थित रहता है, उसी प्रकार इस वामन रूप में था अनन्तत्व।

वामन ने सम्पूर्ण ज्ञान और शास्त्रों को सीख लिया। मनन से उनका स्वरूप दीप्त था। यज्ञोपवीत धारण कर, मंत्रों का उच्चार करते हुए और अपनी हथेली पर जलती हुई धूप लेकर वामन महाबली की सभा में गए। महाबली ने उनका सम्मान सहित स्वागत किया और कहा कि उनके आगमन से वह कृतार्थ हुआ है।

राजा ने पूछा, 'मैं तुम्हारे लिए क्या कर सकता हूँ ?' 'मुझे तीन पग जमीन दे दो, यदि तुम्हारे पास है तो', वामन ने उत्तर दिया। 'स्वीकार है', राजा ने उद्घोष किया; किन्तु उसके गुरु और मंत्री शुक्र ने राजा को रोका और कहा, 'इसका रूप छलयुक्त है, हे राजन् ! इसे केवल एक बौना मत समझो। सावधान, प्राचीन काल में सम्पूर्ण विश्व और ब्रह्माण्ड को निगल जाने वाले का ही यह रूप है।'

'उस कल्याण की कल्पना करो जो स्वयं भगवान् के याचना करने वाले हाथों में दान देने पर मुझे मिलेगा', राजा ने कहा जिसका आदर्श था याचना करने वालों को स्वच्छन्दता से बिना हिचकिचाए दान देना।

अतुलनीय गहनता और औचित्य से युक्त अपनी काव्य रचना में, जो अनुवादक की कला को पराभूत कर देती है, कम्बन् निम्नलिखित पंक्तियाँ महाबली के मुख से कहलवाते हैं—

मृतक नहीं हैं
मरे हुए,
किंतु
मरे हुए वे हैं
जो,
बिना मरे,
जिंदा हैं
हथेली फैलाए हुए
भीख हेतु।
और जिंदा किन्हें कहेंगे,
मेरे दोस्त,
दान देने वालों के सिवा,
जो मरने पर भी
रहते हैं हमेशा जिंदा ?

इन शब्दों के साथ महाबली ने अपने मंत्री की सलाह अस्वीकृत कर दी और वामन से तीन पग जमीन नापने और लेने के लिए कहा। सम्पत्ति के हस्तान्तरण हेतु उन दिनों पंजीकरण कार्यालय न होने के कारण दान देने वाला दान लेने वाले के हाथ पर जल डालकर हस्तान्तरण करता था।

अनन्त ईश्वर ने अपना बौना हाथ फैलाया और राजा ने उस पर जल डाला। जिस क्षण जल ने हाथ का स्पर्श किया, उसी क्षण वामन ने बढ़ना शुरू किया। जब वामन सामान्य मनुष्य जैसे ऊँचे हो गए तब देखने वालों की भीड़ प्रशंसात्मक दृष्टि से देखती रही, किन्तु प्रशंसा की जगह डर ने ली जब वे और-और ऊँचे होते गए, आकाश को छूने लगे और उससे भी ऊँचे हो गए।

रखा हुआ पैर बड़ा होने लगा
जब तक कि उसने सारी पृथ्वी न ढाँक ली
और पृथ्वी छोटी दिखाई देने लगी।
उठाया हुआ पैर
आकाश से भी बड़ा हो गया
और उसकी सीमा में सब आ गए,
और तब वह वापस लौटा
क्योंकि उसके लिए अब कहीं जगह न थी।

कथा की सीख बतलाते हुए विश्वामित्र ने कहा कि भगवान का लौटता हुआ पैर महाबली के सिर पर रखा गया जिससे उसका अहंकार नष्ट हो गया और वह परमतत्त्व में विलीन हो गया।

कम्बन् की सौन्दर्यानुभूति तब तक सन्तुष्ट नहीं हो सकती थी जब तक कि वे कथा का कोमल अन्त न कर देते। इसलिए वे आगे लिखते हैं कि महाबली को लीन करके और उसका राज्य देवताओं को देकर भगवान विष्णु स्वयं विश्राम करने के लिए अपने क्षीरसागर वापस चले गए।

जैसे ही श्याम
विश्राम-हेतु लेटे
क्षीर-सागर में,
वैसे ही अर्धांगिनी लक्ष्मी ने
उनके चरणों का मृदु स्पर्श किया,
और वे कठोर चरण,
जिन्होंने सारे लोक मापे थे,
लजाए और लाल हो उठे
उसके मृदु स्पर्श से।

इस प्रकार के मार्दव के द्वारा ही कम्बन् भावनात्मक गहनता के साथ अनन्त शक्ति और अनन्त कोमलता की पहेली को बूझने में सफल होते हैं।

राम का प्रेम

इस प्रकार की कहानियाँ सुनते हुए राम और लक्ष्मण मिथिला पहुँचते हैं, जहाँ राम और सीता का विवाह होने वाला था।

वाल्मीकि रामायण में विवाह के समय तक ये दोनों एक दूसरे को नहीं देखते हैं। वस्तुतः वाल्मीकि की सीता अनसूया से अपने विवाह की कहानी बताते हुए कहती हैं कि विवाह के समय वे केवल छह वर्ष की थीं। इसलिए उस उम्र में प्रेम करने की बात ही नहीं उठती।

इसके विपरीत विवाह के पूर्व, यहाँ तक कि धनुषभंग के पूर्व भी, इन दोनों को प्रेम करने लायक परिपक्व बतलाकर कम्बन् असाधारण गीतात्मक सौन्दर्य से भरा हुआ एक प्रेम-दृश्य प्रस्तुत करते हैं।

सीता की चरम सुन्दरता का वर्णन करते समय कम्बन् सम्पूर्ण सौन्दर्य शास्त्र का उपयोग कर डालते हैं। कम्बन् के अनुसार सीता के जन्म के पूर्व सुन्दरता की देवी पूर्णता प्राप्त किए हुए आभासित होती थीं। वे जायमान की अपेक्षा जीव बन गई थीं। युग-युगों से सृष्टि की करोड़ों सुन्दरियों के करोड़ों सुन्दर रूपों को संक्षिप्त और आत्मसात् करती हुई वे विकसित हुई थीं। सुन्दरता की उत्कृष्टता

को आत्मसात् करने के बाद आत्मसात् करने के लिए देवी को और कुछ नया नहीं मिला और इसलिए उनका विकास रुक गया। किन्तु जब सीता का जन्म हुआ तब सौन्दर्य की मोहकता में एक नवीन शालीनता जुड़ गई और वह पहले की अपेक्षा अधिक दीप्ति से दीप्त हो गई।

जब विश्वामित्र और लक्ष्मण के साथ राम मिथिला की सड़कों पर से गुजर रहे थे तब उन्होंने सीता के इस सौन्दर्य की झलक राजमहल की खाई में प्रतिबिम्बित देखी। जैसे ही उन्होंने प्रतिबिम्ब के ऊपर से नजर उठाकर देखा, वैसे ही उन्होंने महल की अटारी पर सीता को खड़े हुए पाया। इन दोनों प्रेम-ग्रस्त जीवों के सूक्ष्म आत्म-मिलन का कम्बन् ने आकर्षक रूप से वर्णन किया है।

युगल नयन से नयन मिले,
और एक ने दूसरे को पी लिया,
स्तब्ध हो गई उनकी अनुभूतियाँ,
राजकुमार देखते खड़े रहे राजकुमारी को
और राजकुमारी खड़ी देखती रहीं राजकुमार को।

विश्वामित्र और लक्ष्मण जो पीछे-पीछे आ रहे थे अब राम के बराबर आ गए। अपनी तल्लीनता से जग कर राम खोए-खोए से उन लोगों के पीछे-पीछे राजा जनक के महल में गए। सीता का मस्तिष्क और संतुलन और सारा सौन्दर्य चारों ओर घूम रहा था तथा राम की आकृति का अनुसरण कर रहा था।

राम की आकृति के अदृश्य हो जाने पर, जिससे कि सीता की आत्मिक दृष्टि जुड़ी हुई थी, सीता का मन स्वच्छन्द रूप से और निरुद्देश्य भटकने लगा।

चन्द्रोदय के साथ ही राम के लिए उसकी अभिलाषा ने उसे तप्त कर दिया। उसके बिस्तर पर बिछे हुए कमल के फूल के साथ-साथ वह भी मुरझाने और निस्तेज होने लगी। उसके शरीर पर लगाया हुआ शीतल चन्दन-चूर्ण उसे पिघली हुई आग के समान जलाने लगा। कम्बन्, जो इस मधुर वेदना की सृष्टि करते हैं, अपने आपको सीता के मन में प्रक्षेपित कर लेते हैं और गहरी आह भरते हैं, 'प्रेम रोग के लिए कोई औषधि हो सकती!'

इसी बीच में वे तीनों जनक के महल में पहुँच गए जहाँ राम को सोने के लिए अटारी में एक कमरा दिया गया। विश्वामित्र और लक्ष्मण राम को अकेला छोड़ देते हैं और नीचे एक कमरे में सोते हैं। प्रेम की भावना के लिए राम अजनबी हैं। जब वे सीता के विषय में विचार करते रहते हैं तभी उनके विचारों की तीव्रता को बढ़ाते हुए अंधेरा हो जाता है। उदय होता हुआ चन्द्रमा उनकी अवस्था को और भी अधिक गंभीर कर देता है। क्या वे अकेले हैं? कम्बन् कहते हैं, नहीं। एकान्त, अन्धकार, चन्द्रमा, उनकी व्यथित आत्मा और उनकी सीता उनके साथ हैं। राम क्रन्दन कर उठते हैं—

उसकी कटि
रथ-सी दृश्यमान;
वे दीर्घ-शर नेत्र;
और अंकुरित स्तनयुगल;
आह, वह अंतर्मुखी मुस्कान—
क्या क्रूर यम को चाहिए
यह सारी शस्त्रसज्जा ?

पीड़ित करने वाले इन विचारों के साथ-साथ राम अन्तहीन-सी मालूम होने वाली रात का अधिकांश भाग बिता देते हैं और फिर सो जाते हैं। कम्बन् जो, वाल्मीकि के विपरीत, राम का ईश्वर के रूप में चित्रण करते हैं, राम को सताने वाली मानवीय वेदना से विचलित हो जाते है। प्रेम पीड़ित राम कम्बन् को यह इंगित करने की प्रेरणा देते हैं कि यह भगवान के अवतार की ही महिमा है कि वे मनुष्य पर दया करके इस पृथ्वी पर आते हैं, काल और स्थान की सीमा में अपने को बाँधते हैं और मनुष्य के उद्धार के लिए अपने-आपको कष्ट में डालते हैं। अनूद्य सौन्दर्य-युक्त शब्दों में कवि राम के जागने का वर्णन करते हैं—

पसीने से भरे हुए सूरज ने,
चढ़कर अपने रथ में
प्रकाश के पहियों वाले,
पश्चिमी समुद्र में डुबकी लगाई और नहाया;
और फिर निकला शीतल ताजगी-भरा
पूर्वी आकाश में;
और अपने मृदुल ज्योति-करों से
स्पर्श किया राम के चरणों का
और उन्हें नींद से जगाया।
और राम तट पर पहुँचे
उस अनंत पीड़ाकर रात्रि के—
सच्चिदानंद ने, जो सो सकते थे
अनंत सागर में
अपनी सहस्र-दीपशिखा-दीपित शय्या पर,
चुना उसके बदले में
पीड़ा से करवटें बदलना
स्थान और काल की इस संकुचित शय्या पर।

उस भव्य कविता को मूल में पढ़ते समय पाठक को करोड़ों समुद्र के ध्वनि-प्रवाह का अनुभव होता है। इस कविता में उत्प्रेरित संगीत को इतना भर दिया

गया है कि उससे उत्पन्न होने वाली लय हमें अभिभूत कर लेती है और इस प्रकार से अभिभूत पाठक कार्य और कारण के कारागार से अपने को छूटता हुआ पाता है।

सहस्रधनुषभंग

मिथिला के राजा जनक ने प्रतिज्ञा की थी कि वे अपनी पुत्री सीता का उसी व्यक्ति से विवाह करेंगे जो उनके धरोहर में धरे हुए महान् शिव-धनुष की डोरी खींचकर झुका सकेगा। अनेक शूरवीर राजाओं ने कोशिश की किन्तु असफल रहे।

मुनि विश्वामित्र राम का जनक से परिचय करवाते हैं और धनुर्विद्या में राम के महान् कौशल को बतलाकर यह सुझाव देते हैं कि उनके पालित को भी धनुष झुकाने का मौका दिया जाए।

जनक ने राम की ओर देखा और तब फिर अजेय धनुष की ओर। वे उदास और सशंक हो गए। उन्होंने अपनी प्रतिज्ञा की विचारहीनता के लिए अपने-आपको बुरा-भला कहा तथा सीता के भविष्य के प्रति चिन्तित हो गए।

किन्तु विश्वामित्र ने राम की ओर साभिप्राय देखा—

उठे राम
जिस प्रकार उठती है ज्वाला
यज्ञाग्नि में से,
मिलने आहुत घृत से;
'धनुष टूट गया' सानंद देवता चिल्लाए
और संतों ने दिये आशीर्वाद।
सुमेरु-पर्वत-सा धनुष पड़ा था,
उसे उठा लिया उन्होंने सहज ही;
वैसे ही उठाया जैसे वे उठाते
प्रफुल्लित पुष्पहार
पहनाने सीता के गले में।
अपलक नेत्रों से लोग देखते रहे,
वे नहीं देख पाए
कि कब राम ने पैर से धनुष अड़ाया
और कब खींची डोरी कुशलता से;
धनुष उठाते राम को—देखा उन्होंने,
धनुष टूटते हुए—सुना उन्होंने।

संदेह-निवारण

सीता राजमहल में थीं और राम के द्वारा धनुष तोड़े जाने का उन्हें पता नहीं था। उन्हें प्रेम से आहत कर देने वाले किशोर की आकृति उनके मन में गहराई से अंकित हो चुकी थी।

जब कामपीड़ित सीता राम के लिए उत्कंठित रहती हैं तभी उनकी दासी नीलमलया अन्धाधुंध दौड़ती हुई उनके पास आती है, उसके हीरे के कुंडल धूप में चमक रहे थे और इन्द्रधनुषी आकृतियाँ बना रहे थे, उसकी ढीली होती हुई साड़ी और उसके विखरे हुए बाल 'उसका पीछा कर रहे थे।' वह खुशी में अपने-आपको भूल चुकी थी और चिल्ला रही थी, गा रही थी, नाच रही थी; सीता को नमस्कार करना या उन्हें शुभ समाचार देना तक भूलकर।

सीता नीलमलया से पूछती हैं, 'तुम्हारे मन में किस बात की खुशी है ? मुझे भी बताओ।' उत्तेजित दासी तुरन्त होश में आ जाती है, सीता को प्रणाम करती है और उनसे बतलाती है कि किस प्रकार राम नामक एक राजकुमार ने शिव-धनुष को खिलौने के समान उठा लिया और तोड़ दिया। वह आगे बतलाती है कि वे अयोध्या के राजा दशरथ के कमलाक्ष पुत्र हैं और उनके साथ उनके छोटे भाई तथा ऋषि विश्वामित्र भी हैं। राम के दोनों साथियों के संदर्भ से सीता के संदेह का निवारण हो जाता है; वे आश्वस्त हो जाती हैं कि धनुष को तोड़ने वाला वही है जो चोरी-चोरी उनके हृदय में प्रविष्ट हो गया है। यह आश्वासन सीता के शरीर पर सार्थक प्रभाव डालता है; उनके शरीर का वह भाग जिसपर सोने का कटिबंध बँधा हुआ था उठता और गिरता है, कटिबन्ध को दो टुकड़े में तोड़ते हुए कम्बन् की कम्पनमापी सुई स्पन्दनशील ग्रहण-शक्ति के द्वारा प्रत्येक गूढ़ कम्पन को सूचित करती है।

विवाह का आमन्त्रण

मधुरिम आशा की इस मनोदशा में सीता को छोड़कर कम्बन् हमें राजा जनक के पास ले चलते हैं जिनका आनन्द धनुषभंग के समय होने वाले विस्फोटक शब्द से भी बढ़कर है। वे विश्वामित्र से पूछते हैं कि विवाह तुरन्त कर दिया जाए या दशरथ के आने तक ठहरा जाए। ऋषि के आदेशानुसार जनक दशरथ को आमंत्रण भेजते हैं।

मिथिला की ओर

जैसे ही दशरथ अपने लोगों के साथ मिथिला की सीमा पर आए, वैसे ही जनक ने परिजनों सहित उनका स्वागत किया और उन्हें शहर में ले गए। तब

नगर में चारों ओर राम की शोभायात्रा निकाली गयी जो पुष्पों और रत्नों से सजे हुए थे और एक रथ पर चढ़े हुए थे जिसने उन्हें मिथिला में चारों ओर घुमाया था।

यह शोभायात्रा उस विवाह-मण्डप के सामने समाप्त होती है जहाँ वशिष्ठ और विश्वामित्र राह देख रहे हैं। राम मण्डप में प्रवेश करते हैं और ऋषियों को दण्डवत् प्रणाम करते हैं। वे अपने गले में हीरों का हार पहने हुए हैं और जब वे प्रणाम करते है तब वह हार झूलता है और उनके श्याम शरीर पर प्रकाश की किरणें डालता है। रंगों का यह विरोधाभास कवि को विमोहित कर लेता है जो कहते हैं कि राम ऋषियों के चरणों का स्पर्श करने वाले उस वर्षामेघ के समान हैं जो विद्युत से प्रदीप्त है।

वर्ण शब्द और सजीव बिम्बावलि तथा क्षुद्रतम महत्त्वपूर्ण सूक्ष्मताओं का उपयोग करते हुए कम्बन् प्रस्तुत करते हैं एक छायांकन नहीं, एक चलचित्र नहीं, एक बहुरंगी फिल्म नहीं; बल्कि हमारी आँखों के सामने खेला जाने वाला एक त्रिरायामी नाटक।

प्रेमियों का मिलन

जब सब अभ्यागत अपनी-अपनी जगहों पर बैठ चुके, तब वशिष्ठ जनक को सुझाव देते हैं कि वधू को लाया जावे।—जब सीता धीरे-धीरे आती हैं तब जमीन पर उनके रत्नों के बहुरंगी बिम्ब पड़ते हैं; ऐसा लगता है मानों पृथ्वी माता ने इस डर से कि जमीन के खुरदरेपन के कारण सीता के कोमल चरण छिल न जाएँ फर्श पर रंग-बिरंगी पंखुड़ियों की दरी बिछा दी हो।

सीता को देखकर होने वाली प्रमुख अभ्यागतों की प्रतिक्रियाओं को बतलाकर ही कम्बन् थोड़े से ही गहन तूलिकाक्षेपों द्वारा उन लोगों का व्यक्तित्व स्पष्ट कर देते हैं।

मधुगीतरूपिणी वधू जैसे ही पास आई सभी ने हाथ उठाकर उन्हें नमस्कार किया, केवल राम और ऋषियों को छोड़कर। क्योंकि, कवि के तर्क के अनुसार, सभी मनस्वी सीता को देवी मानते थे और जो मन ने सोचा वही शरीर ने तुरन्त किया।

यद्यपि नीलमलया के द्वारा किया गया राम का वर्णन काफी समाधान-कारक था, फिर भी उनके तादात्म्य के विषय में अभी भी सीता के मन में तनिक संदेह था। उनकी ओर देखना सीता के लिए उद्दण्डता पूर्ण होता। अपने कंकणों को ठीक करने के बहाने वे कनखियों से राम की ओर एक उड़ती हुई चोर नज़र डालती हैं; अब उन्हें विश्वास हो जाता है कि जिन राम को वे प्रत्यक्ष देख रही हैं वे पूरी तरह वही हैं जिन्हें परोक्षरूप से हृदय ने धारण किया था।

उस क्षणांश में भी जिसमें सीता उनकी ओर देखती हैं, राम का सुनील सौन्दर्य सरिता के समान सीता के विशाल नेत्रों में भर जाता है।

इसी समय दशरथ के आदेशानुसार विश्वामित्र घोषणा करते हैं कि अगले दिन ही विवाह संपन्न होगा।

भोग और योग का संश्लेषण

दूसरे दिन प्रातःकाल विवाह-संस्कार के लिए आवश्यक सभी सामग्री के साथ वशिष्ठ तैयार रहते हैं। फूलों से सजे हुए वर और वधू विवाह-मंच पर अपना स्थान ग्रहण करते हैं। जब एक दूसरे का स्पर्श करते हुए राम और सीता साथ-साथ बैठते हैं, तब कम्बन् हमारे कानों में फुसफुसाकर कहते हैं कि ये दोनों भोग और योग के महत् संश्लेषण के समान दिखाई दे रहे हैं। कवि का विश्वास है कि पार्थिव आनन्द और अलौकिक आनन्द में कोई सहज विसंगति नहीं है और दोनों को एक सामञ्जस्यमयी पूर्णता में जोड़ा जा सकता है।

विवाह के साथ ही विश्वामित्र का काम पूरा हो जाता है। महाकाव्य से उनका निर्गमन कम्बन् द्वारा एक गीत में वर्णित है जो संगीतात्मक पूर्णता के साथ विश्वामित्र की काम पूरा किए जाने की उदात्त सन्तोष भावना को व्यक्त करता है।

जब राजसी वर
और जनक की प्रियकोकिला
परम आनंद के उर्वर क्षेत्र में रत थे,
तब विश्वामित्र ने वैदिक विधि से,
उन्हें आशीर्वाद दिया
और उत्तरदिशा में अपनी यात्रा पर चल पड़े
अपने आश्रम की ओर
उत्तुंग ऊँचाईयों में
सुवर्णशिखर मेरु-पर्वत की।

विश्वामित्र के इस निष्क्रमणचित्र के साथ ही कवि एक ऐसे व्यक्ति को विदा करते हैं जिन्होंने महाकाव्य के लिए अत्यन्त सार्थक मेल करवाया था।

अयोध्याकांड

अब परदा उठता है अयोध्या में जहाँ कुबड़ी मंथरा और कैकेयी के षड्यंत्र के फलस्वरूप राम को राजमुकुट से वंचित होना पड़ता है। राम के वन-निष्कासन से रावण द्वारा सीताहरण की और अंततः दुष्टता और निरंकुशता के मूलोच्छेद की पृष्ठभूमि तैयार की गयी है।

कम्बन् अयोध्याकांड का प्रारंभ एक ऐसी स्तुति से करते हैं जो भाषा में पूर्णत्व लिए हुए है—

तत्त्व,
जो आकाश से समागत है,
व्याप्त है
सम्पूर्ण सीमा-विहीन
ब्रह्माण्ड में;
और भगवान् रहते हैं इस ब्रह्माण्ड में
तल्लीन और निर्लिप्त,
जिस प्रकार आत्मा और चेतना
तल्लीन हैं शरीर में, फिर भी हैं निर्लिप्त।
वे भगवान् ही हैं
राजकुमारों के राजकुमार,
योद्धाओं के पदत्राण पहनने वाले,
जिन्होंने; व्यथित और अपमानित होकर
अपनी राजरानी विमाता और
एक कुबड़ी बूढ़ी से;
छोड़ दिया राजदंड
पार किया जंगल और सागर
और बचाया देवों को
निरंकुशता से।

अनुवाद की निर्मम यंत्रणा से जिसकी लय और आकृति बिगड़ गयी है ऐसी

इस कविता का मूलपाठ हमें धार्मिक भावना और आनंदमयी दृष्टि को विज्ञान-सम्मत विचार से जोड़ने वाली कम्बन् की शक्ति का अहसास कराता है।

मंत्रिमंडल की बैठक

मिथिला से लौटकर दशरथ ने अयोध्या में सुखपूर्वक कई दिन बिताए। उनके योग्य और गुणी पुत्रों के विवाह के साथ ही उनका सांसारिक जीवन पूर्णत: संपन्न हो गया था। एक दिन वे हाथी पर सवार होकर अपने महल से मंत्रिमंडल कक्ष की ओर रवाना होते हैं और सभी मन्त्रियों को वहाँ बुलाए जाने का आदेश देते हैं। उनके प्रधान मन्त्री वशिष्ठ सब से पहले आते हैं। दूसरे मन्त्री मत्रि-मंडल कक्ष में यथाक्रम प्रवेश करते हैं, पहले वशिष्ठ को सिर झुकाते हैं और फिर हाथ जोड़कर दशरथ को प्रणाम करते हैं। वशिष्ठ और दशरथ का प्रत्यभिवादन मिलने पर वे अपनी-अपनी जगह पर बैठ जाते हैं। दशरथ उनकी ओर कल्याण-मयी दृष्टि से देखते हुए कहते हैं कि वे अपने विमल पूर्वजों का अनुकरण करना चाहते हैं जिन्होंने वृद्धावस्था में प्रवेश करने के बाद अपना राज्य अपने पुत्रों को सौंप दिया और आध्यात्मिक प्रकाश की खोज में जंगल में चले गए।

दशरथ मंत्रिमंडल से उनके प्रस्ताव के ऊपर विचार करने और सलाह देने को कहते हैं।

राजा के शब्दों को ध्यान से सुनने वाले वशिष्ठ उनके प्रस्ताव पर ज्ञान और सूझबूझ, मंत्रियों के ऐकमत्य और नागरिकों के हितों की पृष्ठभूमि में विचार करते हैं। तब वे कहते हैं—

यह सचमुच आपका पवित्र कर्तव्य है,
आपका कथन आपके उच्चकुल के योग्य हैं।

वशिष्ठ के द्वारा अपने प्रस्ताव के समर्थन किए जाने पर राजा दशरथ खुशी से फूले नहीं समाते।

वृद्ध मंत्रियों के चेहरे उन उभरे हुए अक्षरों के समान थे जिनपर समर्थन लिखा हुआ था। दशरथ के कहने से सुमंत्र राम को लेकर आते हैं।

राम वशिष्ठ के सामने सिर झुकाते हैं और तब दशरथ के चरणों में प्रणाम करते हैं जो प्रेमविभोर होकर राम को गले से लगा लेते हैं और उनकी आँखों से प्रेमाश्रु बहने लगते हैं।

दशरथ अपने पूर्वज नरेशों की परम्परा समझाते हैं जिन्होंने अपने जीवन की संध्या में अपने-अपने पुत्रों को मुकुट सौंप दिया था और अपनी आत्मा के संगोपन हेतु रवाना हो गए थे।

पिता की इस प्रार्थना को सुनकर कमलनयन पुत्र ने न तो मुकुट की इच्छा की और न ही उसे दुत्कारा। वे समझ गए कि शासन करना उनका कर्त्तव्य है।

राजा का जो आदेश है वही मेरे लिए विधि है यह बात अपने मन में सोचकर राम ने राजाज्ञा मान ली।

तुरन्त दशरथ ने राम को फिर से गले लगाया और मंत्रियों से घिरे हुए अपने महल की ओर रवाना हो गए।

पृथ्वी के भिन्न-भिन्न देशों के राजाओं के पास यौवराज्याभिषेक के निमंत्रण भेजे गए; वे गरुड़ चिह्न वाली स्वर्णमुद्राओं से मुद्रित थे।

उत्सवमयी नगरी

राम यौवराज्याभिषेक के लिए तैयार हो रहे हैं। अयोध्या के नागरिकों ने अपनी सुन्दर नगरी को उसी प्रकार सुन्दर बना लिया जिस प्रकार मानो कोई सूरज को चमकाए या विश्वपालक विष्णु की चौड़ी छाती पर स्थित प्रकाशमान मणि को स्वच्छ करे।

रथों और हाथियों से सड़के भर गयीं। जब सोने की झूल वाले हाथी चलते थे तब वे अपने माथे पर दीप्तिमान् सूर्य धारण किए हुए उदीयमान सूर्य वाले गिरि के समान दिखाई देते थे।

जब सारी नगरी हर्षोन्मत्त थी तब सामने आई दुष्ट कुबड़ी मंथरा, रावण-नियुक्त दुष्टता की मूर्ति के समान। इस उत्सव के कारण वह जलभुँज गई। उसका मस्तिष्क काँपने लगा, उसके क्रोध ने गहरी जड़ें जमा लीं, उसका दिल दुखने लगा उसकी आखों से क्रोध की चिंगारियाँ निकलने लगीं, उसके शब्द क्रोध में उबलने लगे।

तीनों लोकों को दुख में डुबा सकने वाली यह स्त्री भरत-माता कैकेयी के महल में दौड़कर पहुँची। उसने अपने ओंठ सिकोड़े और याद किया वह दृश्य जब बालक राम ने खेल-खेल में उसके कूबड़ को अपने धनुष से निशाना बनाया था। वह उस लड़के को गद्दी पर बैठता हुआ नहीं देख सकती थी जिसने उसकी कुरूपता का मज़ाक उड़ाया था। राम के होने वाले अभिषेक को न होने देने के लिए कैकेयी को मनाने हेतु उसने उनके शयनकक्ष में प्रवेश किया।

कवम्न्-कृत परिशोधन

कम्बन् कैकेयी को, वस्तुतः अपने महाकाव्य के प्रत्येक पात्र को, मूल रूप में वाल्मीकि से अलग-थलग साँचे में ढालते हैं। वह सुन्दर, शालीन, उदात्त और उदार है और उसकी भावनाएँ इतनी शुद्ध हैं कि अवचेतन रूप से भी वह अपने पुत्र भरत और सौत के पुत्र राम के बीच कोई अंतर नहीं समझती। यह परिशोधन प्रस्तुत करके, कम्बन् मंथरा के छल भरे आघातों के विरुद्ध कैकेयी को अधिक सुसज्ज करते हैं तथा अपने लिए अधिक ललकार भरी समस्याएँ पैदा कर लेते हैं।

किन्तु वे मनोविज्ञान के गंभीर व सूक्ष्मतर स्तर पर समस्या को हल करके इस ललकार का विश्वासपूर्वक सामना करते हैं। वह दृश्य जिसमें कैकेयी के अबोध और अदूष्य मस्तिष्क को विषैला बनाने में मंथरा सफल हो जाती है, स्वयं एक महाकाव्य है; और जिस गूढ़ तरीके से कैकेयी को बुराई की ओर खींचा गया है उससे सम्बद्ध कम्बन् की विशद नाटकीय योजना की उपलब्ध स्थान की सीमा के अन्तर्गत चर्चा नहीं की जा सकती। इस समय इतना कहना ही पर्याप्त होगा कि मंथरा जैसी धूर्त विशेषज्ञ, मानव हृदय की लोलुपता के आधार पर नहीं, बल्कि उदात्त भावना के आधार पर तर्क प्रस्तुत करके कैकेयी को बदल देती है। वह पूछती है, 'जब दीन दुखी लोग दुख और गरीबी से मजबूर होकर तुम्हारे पास आयेंगे और दान माँगेंगे, तब क्या बदले में तुम उन विपत्तिग्रस्त लोगों की मदद के लिए कौशल्या से सोना माँगोगी अथवा याचना करने वालों से 'नहीं' कहोगी ? यदि उसका लड़का राम राजा बन जाता है तो सारा संसार कौशल्या का हो जाएगा और फिर क्या तुम उसके द्वारा दिए गए दान पर जीवित रहोगी ?'

जैसे ही दुष्ट मंथरा ने ये शब्द मुँह से निकाले, कवि कहते हैं, वैसे ही उदात्त रानी का पवित्र हृदय विषाक्त हो गया; बुराई के विनाश हेतु पाये गए देवताओं के वर के कारण। उसने मंथरा से पूछा कि भरत के लिए राजमुकुट कैसे प्राप्त किया जाय। उस स्त्री ने, जिसका दिमाग भी उतना ही टेढ़ा था जितना कि शरीर, उन्हें उन दो वरदानों की याद दिलाई जो दशरथ ने साम्परण राक्षस को जीतने के समय कैकेयी को दिए थे और उसने आगे भी सुझाव दिया, 'एक वर से तुम अपने बेटे के लिए राज्य माँग लो, और दूसरे से राम को चौदह वर्ष के लिए वन में भिजवा दो।' बिना समय खोये हुए कैकेयी इस योजना को कार्यान्वित करने में लग गई।

जब कैकेयी ने ये दो वरदान माँगे तब दशरथ को बड़ा धक्का लगा। उन्होंने राम के वनवास की शर्त पर जोर न देने के लिए प्रार्थना की; किन्तु कैकेयी झुकने को तैयार न थी।

जब विलाप करते हुए महाराज धरती पर लोट रहे थे तब उस अविचलित रानी ने कहा, 'यदि आप प्रदान करोगे तभी मैं वरदान स्वीकार करूँगी; नहीं तो राजा, मैं अपने आपको मार डालूँगी।' दशरथ के सामने यह बात साफ हो गई थी कि कैकेयी अपनी इच्छा पूरी करवाने पर तुली हुई है। प्रक्षुब्ध होकर वे वर-दान दे देते हैं।

'पतित है यह दुष्टा', वे चीखे,
'स्वीकार है, स्वीकार है, तुम्हारी प्रार्थना।
मेरा बेटा राज्य करे जंगल में,
और मर कर मैं राज्य करूँ स्वर्ग में।

कभी-भी कभी-भी तुम और तुम्हारा बेटा
अपकीर्ति के सागर को पार नहीं कर पाओगे'।

कैकेयी की नींद

जैसे ही उन्होंने ये शब्द कहे वैसे ही पक्की धार वाली छुरी के समान तीक्ष्ण आघातक महती वेदना ने उनके हृदय को छेद दिया और वे अचेत हो गए। जहाँ तक अविचलित हृदय वाली रानी का प्रश्न है, काम के पूरा हो जाने के सन्तोष से उसका हृदय भर गया और वह गहरी नींद में सो गई। मनोविज्ञान का यह एक सूक्ष्म तथ्य है कि अत्यंत व्यस्त मस्तिष्क जब एकाएक तनाव से मुक्त हो जाता है तब गहरी नींद की अवस्था में पहुँच जाता है। कैकेयी को निद्रा की शान्ति में पहुँचाकर और दशरथ को वेदनामयी मूर्च्छा में डालकर कवि इस तथ्य की नाटकीय अभिव्यक्ति प्रस्तुत करते हैं।

प्रकृति का विरोध

यद्यपि कैकेयी को नींद में आराम मिलता है फिर भी कवि कम्बन् के अनुसार उनके विश्वासघात पूर्ण कार्य के विरोध में समस्त प्रकृति विद्रोह कर देती है।

रात्रि प्रभात में बदल जाती है। कवि कहते हैं कि शीतल रात्रि-बाला शीघ्र चली गई मानो मनुष्यों को अपना चेहरा दिखाने की लज्जा के कारण और मानों उस स्त्री के व्यवहार से शर्मिन्दा होकर जिसने विवाह के दिन से ही दशरथ की आत्मा के रूप में व्यवहार किया था किन्तु जिसने पति को वेदनाग्रस्त देखकर जरा सी भी दया नहीं बतलाई।

दिन निकलने के साथ ही साथ आकाश के तारे भी गायब हो गए। तारों से भरा हुआ आकाश उस विशाल चँदोवे के समान लगता था जिसमें मोतियों की लड़ियाँ टँकी हों और जो अपनी कांति से सम्पूर्ण धरा को नहला रहा हो। अब चूँकि विहसित-कमलाक्ष राम का राज्याभिषेक टल गया था, चँदोवे की क्या जरूरत रही ? जब तारे जल्दी-जल्दी आकाश में छिपने लगे तो ऐसा लगा मानो राम के द्वारा अभिषेक का केयूर पहने जाने के पूर्व ही सारा चँदोवा जल्दी-जल्दी हटाया जा रहा है।

सूर्य निकलता है। घने धुएँ के समान छाया हुआ बैरी अंधकार भागता है। सूर्य के वंशज दशरथ का जीवन, महल के बुझते हुए दियों के समान बुझ रहा था। मानो विश्वासघातिनी कैकेयी की पाप भरी दुष्टता से कुपित होकर, क्रोध से लाल, उत्तप्त सूर्य उदयाचल से निकला।

अभिषेक-हेतु जनसम्मेलन

अयोध्या के लोग, जो इस शयनकक्ष की घटना से अनजान थे, राम के अभिषेक की आन्दपूर्वक प्रतीक्षा कर रहे थे। प्रत्येक अपनी-अपनी प्रकृति और प्रौढ़ता के अनुसार अभिषेक के पहलू का आनन्द ले रहा था। प्रौढ़ महिलाएँ कौशल्या के मातृ-हृदय से राम की उन्नति का अवलोकन कर रही थीं। साधु-सन्त वशिष्ठ के अनासक्त आनन्द के साथ इस घटना को देख रहे थे। तरुण स्त्रियाँ इस आह्लादमय अवसर की अपनी तल्लीनता में सीता के समान थीं। अपनी खुशी में सीता लक्ष्मी के समान थीं। वृद्ध पुरुष, जो परलोकोन्मुख थे, अपनी गंभीरता में दशरथ के समान थे।

सारी दुनिया के राजा और राजकुमार अयोध्या में आकर भर गए, सीतापति का राज्याभिषेक देखने के लिए।

प्रफुल्ल-कमल

जब अयोध्या की सड़कों पर अभिषेक देखने हेतु लोगों की भीड़ उमड़ रही थी, तब वशिष्ठ ने, जो राजमहल के अन्दर पवित्र संस्कार हेतु व्यस्त थे, सुमन्त्र से राजा को बुलाने के लिए कहा। सुमन्त्र राजा के महल में गए और उन्हें वहाँ न पाकर कैकेयी के महल में गए। कैकेयी ने उन्हें आदेश दिया कि राम को तुरन्त यहाँ लाया जावे। राम ने कैकेयी के सामने पहुँचकर दण्डवत् प्रणाम किया। कैकेयी ने उनसे कहा, 'राजा की आज्ञा है कि तुम्हारा भाई भरत उनके राज्य पर शासन करेगा और तुम वन में जाओगे मुनियों के साथ जटाजूट धारण करके रहोगे, तप करोगे, पवित्र नदियों में स्नान करोगे और चौदह वर्ष बाद वापस आओगे।'

इस हृदयहीन आदेश को सुनकर राम प्रसन्न हुए। कवि कहते हैं कि राम का चेहरा जो आदेश सुनने के पहले ताजगी और मोहकता में कमल के समान था, आदेश सुनने के बाद खिले हुए कमल से भी अधिक प्रफुल्लित हो गया। राम ने कहा—

यदि यह राजा की नहीं तुम्हारी आज्ञा होती
तो क्या मैं उसे नहीं मानता ?
इसी समय मैं लेता हूँ बिदा
और प्रस्थान करता हूँ वन के लिए।

राम जानते थे कि उनके पिता भीतर के कमरे में हैं, किन्तु वे उनसे बिदा लेने नहीं गए। उन्होंने अपने पिता की ओर मुंह करके प्रणाम किया और कैकेयी के चरणों में पुनः दण्डवत् करके अपनी माता कौशल्या के कमरे में गए। हम चलते--

चलते यह जान लें कि वाल्मीकि-रामायण में राम-वन-गमन के पहले दशरथ से मिलते हैं जो राम को अन्दर बुलाकर कहते हैं 'ये दो वरदान देने के लिए कैकेयी ने मुझसे छल किया है। इसलिए तुम मेरी आज्ञा मत मानो और अयोध्या के राजा बन जाओ।' यह सलाह दशरथ को उपदेश देने के लिए वाल्मीकि के राम को प्रेरित करती है और वे दशरथ से वचन-भंग न करने के लिए आग्रह करते हैं। इस अजीब विदाई दृश्य को कम्बन् काट देते हैं, वास्तविक कलात्मक कारण से। प्रथमतः, अलग होने की करुणा अधिक नाटकीय एवम् तीव्र होगी यदि राम अपने शोकग्रस्त पिता से बिना बिदा लिए वन चले जायेंगे। द्वितीयतः, राम के लिए दशरथ का प्रेम और सत्य के लिए दशरथ का प्रेम इन दोनों के बीच इतना बड़ा संघर्ष है कि एक की अधिकता से दूसरे की पूर्णता खंडित होती है।

सद्‌गुण की आहें

चामरपंख की हवा कोई नहीं कर रहा था,
कोई नहीं पकड़े था श्वेत राजछत्र
उनके सिर के ऊपर,
हृदयहीन नियति चल रही थी उनके सामने
और सद्‌गुण था उनके पीछे
सिसकता और आहें भरता हुआ;
एकाकी राम आए
उस नारी के सामने
जिसका मातृ-हृदय आशापूर्ण आनन्द से धड़क रहा था
और चाहता था नीलगिरि-सम राम को
सिर पर उज्जवल मुकुट पहने आते हुए देखना।

जैसे ही राम ने धीरे से अपने वनवास का वृत्तांत सुनाया, कौशल्या टूट गईं।

अपनी दुखी माँ को राम हाथों में ले लेते हैं और सान्त्वना देने की कोशिश करते हैं। वे कहती हैं, पूरी तरह इस संसार पर भरत का राज्य रहें। वह सद्‌गुण से पूर्ण सम्पन्न है और तुमसे भी बढ़कर है। किन्तु जिन्हें बुरी सलाह दी गई है उन राजा के सामने मैं दीन होकर प्रार्थना करूँगी और तुम्हें वन नहीं जाने दूँगी।' इन शब्दों के साथ ही वे कैकेयी के महल में दौड़ती हुई जाती हैं जहाँ वे दशरथ को जमीन पर अचेत पड़े हुए देखती हैं।

इसी बीच प्रतीक्षा करने वाली नागरिकों की भीड़ को वशिष्ठ यह दारुण समाचार सुनाते हैं। अपनी उन्मत्त अवस्था में लोग दशरथ पर तरह-तरह के आक्षेप लगाते हैं और कहते हैं कि राम का अभिषेक करके निवृत्त हो जाने की उनकी इच्छा एक चाल है।

वे घोषणा करते हैं—

हम राम के चारों ओर रहेंगे
और उनके पीछे जायेंगे,
हम साँपों से भरे जंगल में रहेंगे—
और जंगल भी थोड़े समय में
बन जाएगा एक सुन्दर नगर।

जब नागरिक अपने भाग्य पर रो रहे थे, तब लक्ष्मण यह जानकर कि उनकी सुन्दराक्षी विमाता ने राम को वनवास देने के लिए और अपने बेटे के लिए राज-मुकुट सुरक्षित करवाने के लिए दशरथ को मोहित कर लिया है, क्रोध से उफन पड़े।

'यहाँ मैं खड़ा हूँ', वे गरजे,
'उन लोगों का नाश करने
जो युद्ध चाहते हैं
और धरती को उनके भार से मुक्त करने;
उनके शव इकट्ठा करने
एक के ऊपर एक,
जब तक कि उनका ढेर आकाश तक न पहुँचे;
राजमुकुट रखने उनके सिर पर,
केवल जिन्हें मैं राजा मानता हूँ।
जो चाहे सो आवे
मेरी इच्छा को लाँघने।'

कोमल शब्दों की शीतल फुहार करते हुए राम लक्ष्मण के पास आये। कवि कहते हैं कि वे बुझाने के लिए कठिन आग को सान्द्र करने वाले नील मेघ के समान आये।

लक्ष्मण के क्रोध को शांत करके राम वन-गमन की तैयारी करने लगे।

क्रंदन-स्वर

परिप्रेक्ष्य की तीक्ष्णता ने अयोध्या के गृहों को आक्रान्त कर दिया। ठगी-सी गृहणियों ने अपने घर के कामकाज बन्द कर दिये।

रसोइयों से धुआँ निकलना बन्द हो गया;
छतों पर नहीं रही
जलते चंदन की सुगन्ध;
तोतों को दूध के प्याले मिलना बन्द हो गया;
झूलों पर नहीं थे

झुलाने वाले हाथ स्त्रियों के,
रोते हुए बालक।

यह है महान नाटक, साहित्य जो रसोई और छत, दूध के प्याले और झूले को भी चलता-फिरता बोलता बना देता है।

अयोध्या की सड़कें प्रायः गीत और आनन्द से परिपूर्ण रहती थीं। किन्तु अब ?

मृदंगध्वनि
बन्द हो गई;
मुखर वीणायें मूक हो गईं;
शान्त थी खुशियाँ मनाती भीड़ की आवाज;
और केवल क्रंदनध्वनि से ही
परिपूर्ण थे राजमार्ग।

राम सीता के महल में गये। उनके पीछे-पीछे शोकमग्न नागरिकों की भीड़ थी। राम ने अपने साथ वन चलने से सीता को रोकने की कोशिश की यह कह कर कि वह जंगल की गर्मी नहीं सह सकेंगी। सीता ने जवाब दिया—

क्या विशाल वन होगा अधिक दाहक
तुम्हारे वियोग की अपेक्षा ?

जब राम विचार में खोये खड़े थे, सीता अन्दर गईं और निडरतापूर्वक वृक्ष की छाल से बनी हुई एक साड़ी पहन ली, बाहर आईं और राम के पास खड़ी हो गईं, मजबूती से उनकी लम्बी भुजा थामे हुए।

बाल्मीकि-रामायण में सीता स्वयं तापसी वस्त्र नहीं पहनती हैं बल्कि कैकेयी जबर्दस्ती उन्हें पहनवाती हैं। इन वस्त्रों के मोटेपन को देखकर सीता को धक्का लगता है और उन्हें देखकर 'वह उसी प्रकार काँपती हैं जिस प्रकार जाल को फैले हुए देखकर हिरण काँपता है'। इस क्रूर-हृदय दान के लिए वशिष्ठ और दशरथ कैकेयी की निन्दा करते हैं; किन्तु कैकेयी कानों में तेल डाल लेती है। दूसरी तरफ कम्बन् सीता को स्वयं प्रसन्नता-पूर्वक मोटे वस्त्र पहनवाते हैं और इस प्रकार वनवास में राम का अनुगमन करने के सीता के निश्चय को एक नाटकीय अन्त प्रदान करते हैं।

वन के लिए प्रस्थान

जब सीता और लक्ष्मण के साथ राम ने वन के लिए प्रस्थान किया तब संध्या हो गई थी। सुमन्त्र ने उन्हें बीस मील दूर एक सुगन्धित कुंज तक रथ में बैठाकर पहुँचा दिया। वहाँ राम रात बिताने के लिए उतर गए। उस कुंज में जब राम ऋषियों के साथ बातचीत कर रहे थे तभी दस मील व्यास का एक

नागरिक मंडल कुंज पर आया और उसे चारों ओर से कम्बल के समान आवृत्त कर लिया। वे लोग नदी के किनारे रेत में, हरी घास में और हर उपलब्ध जमीन के चप्पे-चप्पे में जम गए।

जब वे लोग सोने लगे तब उनकी जानकारी के बिना राम ने जंगल में और आगे जाने की इच्छा प्रगट की तथा ऐसा करने के पहले उन्होंने सुमन्त्र से अयोध्या वापस जाने और 'तीनों माताओं' को प्रणाम कहने और भरत के साथ हमेशा बने रहकर उसका दुख दूर करने के लिए कहा। भरत के लिए राम की इस अद्भुत करुणा से विचलित होकर कवि कहते हैं—

ऐसा कहा उन्होंने
जो, शास्त्रों से छुपकर,
वन में रहने लगे।

कम्बन् का अभिप्राय यह है कि केवल शास्त्रीय ज्ञान सत्य की खोज के लिए एक बाधा है। इस प्रकार का ज्ञान मनुष्य के अहं को घनीभूत करता है और सत्य को उससे दूर रखता है। हम शास्त्रों में जितना अधिक घुसेंगे उतना ही अधिक सत्य के विषय में चकरायेंगे। इसलिए भगवान ने, मनुष्य के हित के लिए शास्त्रों को छोड़ने का और वन जाकर अपने सम्बन्ध में अधिक विश्वासपूर्ण प्रमाण देने का निर्णय लिया। और वनगमन से भगवान की सत्यता मनुष्य के लिए इस प्रकार प्रदर्शित होती है।

कृत्रिमतापूर्ण नगर में ईश्वर की अपेक्षा मनुष्य की कला अधिक दृष्टिगोचर होती है। शहर में अपनी उपलब्धियों की चमक को देखकर मनुष्य अपनी दाम्भिक शक्तियों के नशे में चूर हो जाता है। किन्तु जब मनुष्य शहर को छोड़कर जंगलों और पहाड़ों में जाता है एवम् रंगबिरंगी पत्तियों वाले उन्नत वृक्षों को अथवा पहाड़ियों के ऊपर से नीचे बहते हुए वन्य निर्झरों को देखता है, तब वह अपना छोटापन महसूस करता है, अपने अहंकार की उपलब्धियों को भूल जाता है और ईश्वर के अदृश्य अस्तित्व से अभिभूत हो जाता है। चूंकि वन में जाने से मनुष्य का मन अपने अहंकार से हटकर ईश्वर की ओर उन्मुख होता है, इसलिए कम्बन् ठीक ही कहते हैं कि भगवान अपने को शास्त्रों से छुपाते हैं और वन में रहना पसन्द करते हैं।

यह गंभीर विचार कवि के मन में उस समय आता है जब भगवान के अवतार राम अयोध्या नगरी को छोड़ते हैं और सघन वन में जाने की तैयारी करते हैं। भरत के साथ रहने का और उसका दुख दूर करने का सुमन्त्र से कहा गया राम का वचन मानव स्वभाव से सम्बद्ध क्षुद्रता और ईर्ष्या से इतना उन्मुक्त है कि कम्बन् यह स्मरणीय कथन करते हैं जिससे राम के दिव्यत्व के सम्बन्ध में पाठक को ठोस प्रमाण मिल जावे—'ऐसा कहा उन्होंने जो, शास्त्रों से छुपकर,

वन में रहने लगे'। इस पद्य में अन्तर्निहित भावनामयी सूक्ष्म दृष्टि की गहनता से ही इसकी सम्पूर्ण उदात्तता व्युत्पन्न है यह चतुराई या कला नहीं है, किन्तु प्रतिभा है।

मैना और मिट्ठू

अब सुमन्त्र सीता की ओर उन्मुख होते हैं जो जंगल के आनन्दमय दिनों के विषय में सोच रही थीं। वे सुमन्त्र से कहती हैं, 'पहले राजा और मेरी सासों से प्रणाम कहना। तब मेरी प्रिय बहनों से मेरी सुनहली मैना और मिट्ठू की देख-रेख करते रहने को कहना।' जो दुख को नहीं पहचानती और जिसे वन्य-जीवन की कठिनाइयों और विपत्तियों के विषय में कुछ भी नहीं मालूम, उस सरल व कृत्रिमतारहित सीता की बच्चों जैसी प्रार्थना से सुमन्त्र विचलित हो जाते हैं। जब वे सीता के करुणाजनक अज्ञान के विषय में सोचते हैं तब उनकी आँखों में आँसू आ जाते हैं। सीता अचरज करती हैं कि क्या उन्होंने सुमन्त्र से कुछ बुरा कहा है। वे सोचती हैं, 'मैंने तो केवल इतना ही कहा था कि पक्षियों की देखरेख की जानी चाहिए। इसमें रोने की क्या बात है'। रोने का कारण न समझ पाने पर सीता स्वयं रोने लगती हैं।

उदास मन से सुमन्त्र राम से विदा लेते हैं और अयोध्या को अकेले वापिस जाते हैं।

ईश्वरीय चन्द्रमा

सोते हुए नागरिक-वृंद को छोड़कर, राम जंगल में आगे जाने के इस अवसर का लाभ उठा लेते हैं। अब गहरा अँधेरा छाया हुआ है और इस अँधेरे में राम का संरक्षकत्व कौन कर रहा है ? कवि कहते हैं—

सीता का पातिव्रत्य,
स्व-गुणों का पौरुष,
छोटा भाई और धनुष—
ये थे परित्राण-शस्त्र-कवच
जो बने संरक्षक धरा पर अवतीर्ण महानता के
जिसने किया रात्रि के अंधकार में प्रस्थान।

जब ये तीनों अंधेरे में टटोलते हुए आगे बढ़ रहे थे, तब ऐसा लगता था मानो अन्धकार ने एक बाधक दृढ़ता धारण कर ली है, वह बुराइयों के मित्र राक्षसों के साथ मिल गया है और अपनी इस मित्रता के कारण इन तीनों के मार्ग को रोक रहा है। इस प्रकार फुसफुसाकर कम्बन् अच्छाई और बुराई के भावी संघर्ष का संकेत देते हैं।

दूर हटाते हुए
कालिमामय अन्धकार को,
आया ईश्वरीय चन्द्रमा,
मानो आकाश ने, जलाकर लालटेन,
अपने हाथों से उसे ऊपर उठाया हो।

अन्धकार में होने वाली इस तीर्थयात्रा में और बुराई के विरुद्ध होने वाले धर्मयुद्ध में कवि पाठक को किसी सूक्ष्म तरीके से लपेट लेता है। उस समय निकलने वाले चन्द्रमा को ईश्वरीय कहकर कम्बन् हमारे द्वारा ली गई आराम की साँस और कृतज्ञता को व्यक्त करते हैं। सम्पूर्ण महाकाव्य में हम सनातन विधि और क्रम और अच्छाई की सतत चेतना पाते हैं।

जब रात में चन्द्रमा निकलता है तब कवि चाँदनी में चलने वाली तीनों आकृतियों के मौखिक छायाचित्र प्रस्तुत करते हैं। राम अंजनधौलगिरि के समान चल रहे हैं। लक्ष्मण उन्हीं के समान ऊँचाई-नीचाई वाले किन्तु स्वर्णपवित गिरि के समान हैं। जमीन पर चाँदनी इतनी कोमलता से फैली है मानो चन्द्रमा ने बिल्कुल सफेद कपास के तागे फैला दिए हों जिससे कि सीता के कोमल चरण जंगल में बिना क्षत-विक्षत हुए चलते रहें। इस उज्ज्वल परिप्रेक्ष्य में इन तीनों को छोड़कर कवि कम्बन् हमें सुमन्त्र में साथ अयोध्या के उद्वेजक दृश्य में ले जाते हैं।

•

अश्रुकूप

जैसे ही सुमन्त्र अयोध्या वापस आए वैसे ही दशरथ ने पूछा, 'राजकुमार दूर हैं या पास ?' 'ऊँचे-ऊँचे बाँसों वाले सुदूर जंगल में राजकुमार चले गए,' सुमन्त्र ने उत्तर दिया। जिस क्षण दशरथ ने सुना 'राजकुमार चले गए,' उसी क्षण उनकी आत्मा भी चली गयी। दशरथ की त्रासदी कम्बन् के हृदय को गहराई तक विक्षुब्ध कर देती है और कैसा अश्रुकूप उन्होंने खोदा है !

दशरथ के शरीर से लिपटी हुई शोकाकुल पत्नियों का दृश्य कवि को दशरथ की गरिमा पर गहराई से सोचने को मजबूर करता है। अपनी जान की कीमत पर उन्होंने अपना वचन निभाया और एक आदर्श के लिए मरकर उन्होंने अमर जीवन पा लिया। जिसमें दशरथ बैठे थे उस शरीर-रूपी नाव ने उन्हें सुरक्षापूर्वक सांसारिक-जीवन-रूपी समुद्र के पार परमानंद के तट पर पहुँचा दिया; वह भ्रम-रूपी मत्स्यों से साफ बचकर निकल गयी और अपनी सवारी को अनन्तता में उतार कर वापिस आ गयी जिससे उसकी नाव्यता सिद्ध हो गयी। जब पत्नियाँ मृत शरीर से लिपटी हुयीं थीं तब ऐसा लगता था मानों वे इस विश्वसनीय नाव में इस विश्वास से सवार हो गयी हैं कि यह उन्हें भी उसी स्थल पर ले जाएगी।

यात्रा

अयोध्या की दुःखान्त घटनाओं से बिल्कुल अनजान सीता और राम अत्यन्त आनन्दपूर्वक वन में चलते रहते हैं। मानों छुट्टी मनाते हुए वे प्रकृति के मेले का आनन्द लेते हैं। उनकी इस पिकनिक यात्रा से सम्बन्धित नाजुक और प्यारी गैर-जिम्मेदारी को कम्बन् उदात्त सौन्दर्य और मोहकताभरी कविताओं में व्यक्त करते हैं; राम सीता के साथ घूम रहे थे, बिजली के साथ घूमने वाले सुन्दर मेघ के समान। जब वे गंगा के उत्तरी किनारे पर पहुँचे और मुनियों के साथ आनन्द-पूर्वक बातचीत कर रहे थे तभी निषादराज गुह राम को नमस्कार करने के लिए आया। वह हजारों नावों का मालिक था और घातक धनुष धारण किए हुए था। उसके कंधे पत्थर से बने हुए थे और उसकी जाँघे आबनूस से। वह बहुत ऊँचा था और अपनी ऊँचाई से गंगा की गहराई भी माप सकता था। लाल चमड़े का एक टुकड़ा वह अपनी कमर में लपेटे हुए था जो शेर की पूँछ के चमकदार पट्टे से कसा हुआ था। वह मूँगों की माला पहने हुए था, मानों दाँतों से गुथे हुए; वह एक नूपुर पहने था, मानों कंकड़ों से गुँथा हुआ; उसकी एक शिखा थी, मानों अन्धकार के गुच्छे से गुँथी हुयी; शेर के समान उसकी बरौनियाँ घनी थीं, मानों कि धान से गुँथी हुई। उसके कमरपट्टे से एक खूनी कटार लटकी हुई थी। वह विषधर नाग के समान दिखाई दे रहा था किन्तु एक बच्चे के समान रुक-रुककर बोलता था। उसकी कमर इन्द्र के हीरे से बने हुए भाले के समान मजबूत थी। छलकपट से अनजान, दिल से साफ और माँ से भी अधिक ममतामय गुह ने अपनी भेंट के रूप में मछली और शहद राम के सामने रखे।

वाल्मीकि से भिन्न, कम्बन् के राम और ऋषि-मुनि शाकाहारी थे और शाकाहार को एक सद्गुण और संस्कृति का प्रमाण-चिह्न मानते थे। मछली खाने की निषाद की प्रार्थना से वहाँ पर एकत्र ऋषि-मुनियों को बहुत धक्का लगा और अपमान-सा प्रतीत हुआ। राम ने मुस्कुराते हुए उन लोगों से कहा कि गुह के द्वारा लाई हुई भेंट प्रेम-रस-सिंचित है और इस कारण वह पवित्र हो गयी है व यह समझ लेना चाहिए कि उसे अत्यन्त स्वादपूर्वक खा लिया गया है। गुह ने राम से पूछा कि उन्होंने अयोध्या क्यों छोड़ी और लक्ष्मण ने सारी दुःखभरी कहानी बत-लाई जिससे गुह की आँखों में आँसू आ गए। गुह की सघन भक्ति ने राम को विचलित कर दिया और उन्होंने उसे अपना भाई मान लिया। वे उससे कहते हैं—

अभी तक हम चार भाई थे,
और अब हम पाँच भाई हो गए,
क्या भ्रातृत्व की भी कोई सीमा है ?
प्रेम संख्या को बढ़ा देता है।

कवि की यह कितनी मधुर भावना है कि भ्रातृत्व जन्म पर आधारित नहीं है किन्तु प्रेम पर आधारित है और प्रेम का विस्तार होने से भ्रातृत्व की सीमाओं का भी विस्तार होता है, दोनो का कोई अंत न होने के कारण ।

गुह से विदा लेकर तीनों प्रातःकाल चित्रकूट पर्वत पहुँचे । सारा दिन उन्होंने नदी के किनारे झाड़ों की छाया में बिता दिया । तब सायंकाल हुआ ।

प्रेम संस्कार

जब ये तीनों एक पहाड़ी झील के किनारे ध्यानमग्न थे तभी अंधेरा छा गया और लक्ष्मण राम और सीता को एक पर्णकुटी में ले गए जो उन्होंने एक पहाड़ी की ढलान पर उन दोनों के लिए बनाई थी । इसे लक्ष्मण ने अपने राजपुत्रीय हाथों से बनाया था । उन्होंने पहाड़ी के किनारे से बाँस निकाले थे, उन्हें बराबर-बराबर काटा था, उन्हें कतारों में गाड़ा था, उनके ऊपर छप्पर लगाया था और उसे गड़े हुए बासों से बाँध दिया था । उन्होंने छप्पर पर घने सागौन के पत्ते छाये थे और ऊपर से फूले हुए बेंत डाले थे । उन्होंने चारों ओर दीवाल बनाई थी और दीवाल पर मिट्टी छापी थी तथा उसकी सतह को पानी से चिकनाया था । इस पर्णकुटी के साथ ही साथ उन्होंने इसी सामग्री से सीता के लिए एक निजी कमरा भी बनाया था और उसकी दीवालों को लाल मिट्टी से सुशोभित किया था और उसमें जंगली झरने के किनारे से चुने गए चमकदार पत्थर जड़े थे ।

लक्ष्मण द्वारा प्रेमपूर्वक बनाई गयी इस कुटी को देखकर राम आनन्द-मग्न हो गए । वे सीता और लक्ष्मण के द्वारा अपने ऊपर बरसाये गए प्रेम से विचलित हो जाते हैं और विचार करते हैं कि प्रेम की ऐसी अतःस्फूर्त भेंट उन्हीं को मिलती है जिन्होंने सब कुछ खो दिया है ।

जनकसुता के राजकीय चरणों ने
जंगल का रास्ता पैदल चला;
मेरे छोटे भाई के अनुपम हाथों ने
यह पर्णकुटी बनाई;
धरती पर उसे क्या नहीं मिल सकता
जिसने स्वयं सब कुछ छोड़ दिया है !
राम तब लक्ष्मण की ओर देखते हैं और पूछते हैं—
कब सीखा तुमने, मेरे भाई,
इस प्रकार बनाना ?

और इस प्रकार कहते हुए उनकी कमल-सरीखी आँखें अश्रुबिन्दुओं से धुँधला गयीं । राम सोचते हैं कि अच्छाई के संस्थापक के रूप में उनकी ख्याति अनुचित है क्योंकि वास्तव में उसका आधार उनका बलिदान नहीं बल्कि लक्ष्मण का बलि-

दान है। उन्हें इस प्रेम संस्कार की दशा में छोड़कर, कम्बन् हमें भरत के पास ले चलते हैं जो अपने मामा केकय नरेश के पास केकय देश में गए हुए हैं।

क्रूरव्यथा

राजा दशरथ से दोनों वरदान पाने के बाद कैकेयी रातभर आराम से सोती रही और सुबह उठी तथा तुरन्त भरत को लाने के लिए उसने केकय देश को दूत भेजे। संदेश पाकर भरत शीघ्रतापूर्वक अयोध्या वापिस आए, यह जाने बिना कि राम को वन भेज दिया गया है और दशरथ स्वर्गवासी हो गए हैं।

उन्होंने नगर को सुनसान पाया। किसी अशुभ की आशंका करते हुए भरत राजा से मिलने उनके महल में दौड़कर पहुँचे किन्तु राजा कहीं दिखाई नहीं दिए वे कैकेयी के पास गए और उनसे पूछा कि राजा कहाँ हैं? कैकेयी ने उन्हें गले लगाया और कहा, 'दुःख मत करो, तुम्हारे पिता स्वर्ग चले गए हैं।' उसके उत्तर की निर्ममता ने भरत को चौंका दिया और दशरथ की मृत्यु के समाचार ने उन्हें स्तब्ध और अचेत कर दिया। कुछ देर बाद सचेत होकर वे जोर-जोर से विलाप करने लगे। तब समाधान के लिए उनके विचार राम की ओर गए। वे बोले, 'अनन्त गुणों से युक्त राम ही मेरे पिता, माता, भाई और स्वामी हैं। जब तक मैं उनके पवित्र चरणों में दण्डवत् नहीं कर लूँगा तब तक मेरे मन को इस क्रूर व्यथा से छुटकारा नहीं मिलेगा।" राम के प्रति भरत की श्रद्धा से कैकेयी क्रुद्ध हो गयी जो गरजती हुई आवाज में बोली—

साथ उन दोनों के—
पत्नी और भाई—
वह अब वनवासी है।

जिस मामूली तरीके से कैकेयी ने ये शब्द कहे उससे उत्तेजित होकर भरत ने पूछा, 'अब और कितने षड्यंत्र खुलना है? और मेरे कानों में कितनी और व्यथाएँ प्रविष्ट होंगी? राजा की मृत्यु कैसे हुई? और राम वन क्यों चले गए?' कैकेयी ने उत्साहपूर्वक जवाब दिया, 'एक वरदान के द्वारा मैंने राम को वन भिजवा दिया और दूसरे से तुम्हारे लिए राज्य प्राप्त कर लिया। यह सब न सह-कर राजा ने प्राण त्याग दिए।'

इन शब्दों को सुनने से पहले, भरत के हाथ अंजलिबद्ध प्रणाम की मुद्रा में सिर के ऊपर थे, किन्तु इन शब्दों को सुनकर—

उनके जुड़े हुए हाथ
नीचे आ गए कानों को बंद करने;
उनकी भवें ऊपर नीचे होने लगीं
और नाचने लगीं उग्रता से;

उनकी साँस में भर गयीं आग की चिनगारियाँ
निःश्वसित और उच्छवसित!
भर गया आँखों में खून प्रवहमान।

इस पद्यांश में कम्बन् रोष के भौतिक चिह्नों का नाटकीकरण करते हैं। क्रोध की शारीरिक प्रक्रिया के इतने अधिक सजीवरूप में बहुत कम वर्णन किये गए हैं। लालच से राम के मुकुट को हड़प लेना भरत की दृष्टि से पापाचरण था, किन्तु उसी स्थान पर दुष्ट कैकेयी को मारे बिना छोड़ देना भी उतना ही पाप-युक्त होता। फिर भी वे उसका मुँह चीर देने से अपने आप को रोक लेते हैं, कि कहीं इस काम से राम नाराज न हो जाएँ।

निराशा से भरत सोचते हैं कि इस नीच षड्यंत्रपूर्ण संसार में सभी मूल्य नष्ट हो चुके हैं; किन्तु बाद में शांतिपूर्वक राम और दशरथ के बलिदान की याद करके सद्गुण में उनका विश्वास फिर से जाग्रत् हो जाता है। वे कहते हैं—

यदि एक ऐसे राजा है जो अपना जीवन त्याग सकते हैं
अपना वचन निभाने के लिए,
यदि एक ऐसा वीर है जो वनवासी है
केवल एक हृदयहीन शब्द से मजबूर होकर,
यदि एक ऐसा भरत है जो राज्य करेगा
अचानक ही प्राप्त,
तो दोष नियति का हैं, सद्गुण का नहीं
जो अभी भी प्रदीप्त है प्रोज्ज्वल।

भरत का यह विश्वास कि सम्पूर्ण जीवन सद्गुण के उन्नत नियमों से पोषित है, कम्बन् के द्वारा अनुपम शक्ति और भव्यतायुक्त शब्दों में व्यक्त किया गया है। शब्द और ध्वनि के चुनाव के ऊपर कवि का अधिकार उदात्तीकरण करने वाला है और उनका शब्दार्थ-संयोजन उन्हें तमिल कवियों में सबसे अधिक अननूद्य बना देता है। जिस महती घृणा के साथ भरत अपने को अन्य पुरुष में इस कविता में उल्लेख करते हैं वह उनके पवित्र नाम को पापी का प्रासंगिक अर्थ प्रदान करती है। कम्बन् इस प्रकार की नाटकीय स्थितियाँ निर्मित करते हैं और अपने सजीव पात्रों में इतना वाणी-प्रवाह भर देते हैं कि वे पाठक के भीतर विशिष्ट बातों के साथ आंतरिक निकटता की भावना भर देने में समर्थ हो जाते हैं।

भरत कैकेयी के साथ रहने से इंकार कर देते हैं क्योंकि वे कहते हैं कि वह अवर्णनीय क्रूरता भरे मन वाली पापिन है। वे कौशल्या के पास जाते हैं और कहते हैं कि सूर्यवंश 'भरत नामक एक कलंक' के कारण कलंकित हो गया है; क्यों कि उसके कारण ही कैकेयी ने राम को निकाल दिया है। महती वेदना के इन शब्दों को सुनकर कौशल्या के मन में उसी क्षण भरत से तादात्म्य की भावना

उत्पन्न हो जाती है। रोती हुई वे अपने को सम्हालती हैं और भरत को अपने गले से लगा लेती हैं मानोकि वह, जो राजमुकुट छोड़कर वन चला गया था, वापिस आ गया है और उनके सामने खड़ा है। इसी समय वशिष्ठजी भरत के पास आते हैं और उनसे कहते हैं, 'शक्तिशाली राजा के बिना राज्य वैसा ही है जैसा कि देदीप्यमान,सूर्य के बिना दिन और प्रकाशमान चन्द्र के बिना ताराविहीन रात्रि। तुम्हारे पिता स्वर्गवासी हैं, तुम्हारे भाई ने राजमुकुट त्याग दिया है जो, तुम्हारी माता की प्रार्थना के कारण तुम्हें मिला है। पुत्र, इस राज्य का शासन अब तुम सम्हालो।' इन शब्दों को सुनते ही भरत काँपने लगे। उद्दीप्त क्रोध के साथ उन्होंने पूछा कि क्या सद्गुणी व्यक्तियों को इस प्रकार का परामर्श देना उचित है ?

आगे उन्होंने कहा कि राम को वापिस लाया जावे और चिरन्तन प्रथा व विधि के अनुसार उन्हें राजमुकुट पहनाया जावे। 'यदि आप एक शब्द भी ज्यादा बोलेंगे तो मैं अपने आपको मार डालूंगा,' वे बोले। वशिष्ठ और दूसरे लोग, जिन्होंने ये शब्द सुने, भरत की उदात्त न्याय भावना तथा राम के प्रति किये गए अन्याय को ठीक करने की व्यग्रता से प्रभावित हुए। भरत ने अपने छोटे भाई शत्रुघ्न को बुलाया और उसे ढिंढोरा पीटकर यह घोषणा सभी जगह करवाने को कहा कि लोगों को उनके न्याययुक्त राजा वापिस मिलेंगे। इस घोषणा को सुनकर मृत नगर पुनर्जीवित हो गया। कम्बन् की धारणा है कि प्रेम हटा देने से ही दुःख उत्पन्न होता है तथा प्रेम भर दिये जाने से वह दूर हो जाता है। कवि कहते हैं—

रथ, अश्व और गज समूह से अनुसृत भरत पैदल गए। (जबकि वाल्मीकि के भरत रथ में बैठकर राम से मिलने व उन्हें वापिस लाने की उत्सुकता के कारण बहुत जल्दी-जल्दी गए थे।)

जब अपनी सेना के साथ भरत गंगा के किनारे पहुँचे, तब दूसरे किनारे पर स्थित गुह ने तुरन्त यह निष्कर्ष निकाला कि यह सेना राम के विरुद्ध आयी है।

कम्बन् का गुह निष्कारण प्रेम और भक्ति का साक्षात् रूप है। वह हमारे मन में एक बालक की अदूषित भावना और अप्रतिहत प्रतिक्रिया की प्रतीति कराता है। राम के प्रति उसकी स्वामि-भक्ति उसे उत्तेजित होकर बिना सोचे-विचारे काम करने से रोकती है।

उसके कमरपट्टे से तलवार लटकी हुयी थी,
अपने ओंठ काटते हुए, आँखों में क्रोधाग्नि भरे हुए,
तीखे शब्दों का उच्चार करते हुए,
अपना नगाड़ा बजाते हुए, अपना बिगुल फूंकते हुए,
वह खड़ा था,

उसके कंधे आगे बढ़ने के लिए उचक रहें थे,
निकट सम्बन्धियों के समान सहारा देने।

गुह अपने योद्धाओं को इकट्ठा करता है और कहता है—

यह गहरी तरंगित नदी—
क्या उनमें इसे पार करने और जिन्दा रहने का साहस है ?
क्या हम ऐसे धनुष-धारी हैं जो भाग जाएँगे,
इन विशाल गज-समूहों को देखकर !
क्या राम ने मुझे 'मित्र' नहीं कहा था,
और क्या वह नहीं है शब्दों में एक शब्द ?

भरत की अनुदात्तता गुह को अत्यधिक उद्विग्न कर देती है। अपने योद्धाओं को दिए गए ओजस्वी भाषण में वह कहता है—

मेरे स्वामी को, जिन्होंने उन्हें राज्य दिया,
वे वन भी नहीं देना चाहते जहाँ हमारा राज्य है।

जब गुह गंगा के दक्षिणी किनारे पर खड़ा हुआ था, तब गंगा के उत्तरी किनारे पर सुमन्त्र भरत के पास गए और उनसे गुह का तथा राम के प्रति उसकी भक्ति का वर्णन किया। गुह से मिलने की अपनी व्यग्रता के कारण भरत तुरन्त शत्रुघ्न के साथ पानी तक पहुँच गए। निषाद प्रमुख ने अब नज़दीक से भरत को देखा—

वल्कल पहने हुए, धूलिधूसरित शरीर,
मुस्कान रहित चेहरा, प्रभाहीन पीले चन्द्र के समान,
उनकी वेदना इतनी द्रावक कि कठोरतम पत्थर भी पिघल जाएँ—
इस प्रकार थी शोकाकुल आकृति जिसे गुह ने देखा,
और उसे देखकर, गुह खड़ा रहा चकित, मूक, सिसकते हुए,
उसके हाथ का धनुष जमीन पर फिसल कर गिरता हुआ।

इस धक्के से पुनः सचेत होकर गुह समझ गया कि भरत का अभिप्राय युद्ध करने का नहीं है। वह एकदम बोल उठा—

यह विश्वस्त राजकुमार मेरे स्वामी जैसा ही दिखता है
और वह जो पास खड़ा है
मेरे स्वामी के छोटे भाई जैसा लगत है।
वह वल्कल पहने है, उसकी वेदना है अनन्त,
वह राम की दिशा में करता है प्रणाम।
क्या मेरे स्वामी का कोई भाई
कभी दुष्ट आचरण का दोषी हो सकता है ?

गुह अकेले एक नाव में दूसरे किनारे पर जाता है और भरत को प्रणाम

करता है जो गुह को प्रणाम करते हैं और उससे बतलाते हैं कि वे दशरथ द्वारा की हुई भूल को सुधारने, और राम को वापिस ले जाने और राजा बनाने आए हैं। जैसे ही वह यह शब्द सुनता है, गुह भरत के चरणों को जोर से पकड़ लेता है और कहता है—

हे यशस्वी !
सचमुच तुम्हारी महानता इतनी अधिक है
कि, विचार करने-वालों की आँखों में,
एक हजार राम भी तुम्हारी बराबरी नहीं कर सकते।

भरत गुह से कहते हैं, 'कृपया मुझे वह स्थान बतलाओ जहाँ मेरे बड़े भाई ने विश्राम किया था।' गुह उन्हें उस स्थान पर ले जाते हैं जहाँ कुश से ढकी हुई शिला को बिस्तर बनाकर राम सोये थे। भरत तुरन्त काँपते हुए धरती पर गिर पड़ते हैं और दुख में खो जाते हैं। तब भरत पूछते हैं, 'यदि यह उन महापुरुष के सोने का स्थान है, तो उन लोगों ने अपना समय कहाँ बिताया—एक तो जिनका राम के लिए असीम प्रेम है और दूसरे जो राम का अनुसरण करते हैं ?' गुह ने उत्तर दिया—

जब सुन्दर श्याम राजकुमार और सीता
यहाँ साथ-साथ सोए थे।
लक्ष्मण पहरा देते रहे, हाथ में धनुष लेकर,
गहरी गरम साँसें भरते हुए,
आँखों से आँसू बहाते हुए;
अपलक वे पहरा देते रहे
जब तक कि रात्रि का अंत नज़र आने लगा।

गुह का प्रतिवेदन उतना ही मर्मस्पर्शी है जितना कि लियर की पीड़ाओं के लिए कारडेलिया की प्रतिक्रिया का केन्ट को दिया गया जेंटलमैन का प्रतिवेदन।

भरत की प्रार्थना पर, भरत की ६०,००० सेना को तथा अयोध्या के दुखी नागरिकों को गुह ने गंगा के उस पार पहुँचाया। तब तीनों माताओं और मंत्री सुमन्त्र और अपने भाई के साथ भरत एक नाव पर सवार हुए। गुह उस नाव को चला रहा था जो 'पतवार रूपी सुन्दर तैरने वाले पैरों से' चल रही थी।

रानियों से परिचय

जब वे नदी पार कर रहे थे तब गुह ने रानी कौशल्या की ओर संकेत करके भरत से पूछा कि वे कौन हैं। भरत ने उत्तर दिया, 'ये वे महान् आत्मा हैं जिन्होंने उन्हें पैदा किया जिन्होंने सारे संसार को पैदा किया, ये वे हैं जिन्होंने, क्योंकि मैं पैदा हुआ था, इसलिए सम्पूर्ण राज्य का वैभव त्याग दिया।' गुह कौशल्या के

चरणों में गिर गया और सिसकने लगा, इस पर रानी ने पूछा कि यह कौन है। उत्तर में भरत ने उन्हें बतलाया कि ये गुह हैं, राम के परम मित्र, तथा लक्ष्मण शत्रुघ्न और मेरे बड़े भाई। जब गुह रो रहा था, तब भरत और शत्रुघ्न की आँखें आँसुओं से गीली हो गयीं। कौशल्या ने एक गीत द्वारा उन्हें शान्त किया, जो गुरु गंभीर आशीर्वाद की आत्मा से अनुप्राणित है। जब हम मूल गीत को पढ़ते हैं, तब वातावरण सहस्रों देवदूतों के पंखों से अनुकम्पित हो जाता है जो मानव के आहत हृदय पर एक प्रशामक हवा झलते हैं। नीचे मूल गीत देवनागरी में दिया जाता है

नैवीर् अलीर्, मैन्तीर् !
इनित्तुयराल्, नटिरन्त्व्
काटुनोक् कि
मेइवीरर् पेयर्न्ततुवुम्
नलमायिन्राम् अन्ट्रे
विलङ्गल् तिन्तोळ
कैवीरक् काळिरनय
काळै इवन् तन्नोटुम्
कलन्तु नीविर्
ऐवीरुम् औरुवीरै
अहलिटत्तै नेदुगालम्
अळित्तिर् एन्द्राल्।

संगीतात्मक उपलब्धियों की कम्बन् की विविधता विचित्र है। वस्तुतः किसी भी अन्य इंग्लिश कवि की अपेक्षा वे अधिक बड़ी संगीतात्मक ईकाई से काम लेते हैं। इस पद्य में, जिसमें चार चरण हैं, प्रत्येक चरण में १९-२० वर्ण हैं। इतने अधिक वर्णों और शब्दों को एक साथ नियंत्रित करने की शक्ति निश्चय ही विशिष्ट अधिकार का चिह्न है; और उन्हें इस प्रकार से संगीतमय क्रम में बद्ध कर देना कि सम्बन्धित भाव के साथ उचित सुर का मेल बैठ जाए, यह स्वयं में ही काव्य के ऊपर उनके प्रभुत्व का निश्चित प्रणाम है।

बीथोवन ने एक बार कहा था कि गेटे हमेशा डी-मेजर में रहते हैं। इसी प्रकार प्रत्येक वस्तु और प्रत्येक व्यक्ति कम्बन् के लिए एक विशिष्ट सुर में रहती है और कम्बन् भावुक तथा सूक्ष्मदर्शी पाठक पर आवश्यक प्रभाव डालने वाले संगीतात्मक वाक्यांशों और लयात्मक रचनाओं का आश्रय लेकर प्रत्येक के लिए उपयुक्त सुर में अपनी बात कहते हैं। कम्बन् का शब्दों का जादू या उनके सुर का राजत्व अनुवाद में नहीं आ सकता, किन्तु वर्णन खंडित न हो इसलिए कौशल्या के गीत का अनुरूप नीचे दिया जाता है—

दुख न करो, मेरे बच्चो, दुख न करो,

यह अच्छा ही हुआ कि सत्य के योद्धाओं ने
राज्य को छोड़ा और वन में आए,
मित्र बनाया इस महान योद्धा को
जो खड़ा है एक शूर हाथी के समान
पर्वत सी सुदृढ़ सूँड़ वाले,
और उसको अपना मित्र बनाकर,
तुम पाँचो एक होकर,
पृथ्वी पर राज्य करो
अनेकों वर्षों तक।

अपने दुख की परिपूर्णता में कौशल्या का मातृ-हृदय नीच निषाद को भी अपने राजसी पुत्रों के समान अपने में समेट लेता है। इस गीत मे एक ऐसी विचार पूर्ण काव्यमयी उदात्तता है जो पाठक को मानवीय क्षुद्रता से ऊपर उठा लेती है।

सुमित्रा की ओर संकेत करके, जो सद्गुण की मूर्ति सी दिखाई दे रही थी, गुह ने पूछा, 'कृपया बतलाइए कि प्रेम से भरी हुई ये महिला कौन हैं?' भरत ने जवाब दिया, 'ये उनकी छोटी रानी हैं जिन्होंने निर्दोष सत्य को जीवित रखने के लिए अपना जीवन त्याग दिया। ये वे ही महान् आत्मा हैं जिन्होंने उन अवियोजनीय भाई को जन्म दिया था और यह बतला दिया था कि पूज्य राम का एक भाई भी है।'

इस परिचय के बाद कम्बन् असमञ्जस में पड़ जाते हैं कि गुह का ध्यान कैकेयी की ओर जाएगा। जैसा कि प्रथित सौन्दर्यवादी टी. के. चिदम्बरनाथ मुदलियर कहते हैं, असमंजस की यह भावना अगले पद्य में भव्य उद्रेक के साथ चित्रित की गयी है।

जिसका पति श्मशान गया था;
जिसका पुत्र दुख के सागर में डूबा था;
गौरव-रत्नाकर राम
निष्ठुर वन चले गए थे
और जिस स्त्री ने मापे थे
अपने मन की लोलुप क्रूरता से
सारे लोक जो पुरातन काल में
रहस्यमय विष्णु के द्वारा अपनी ऊँचाई से मापे गए थे—
उस स्त्री की ओर इशारा करके
गुह ने पूछा, 'कृपया बतलाइए ये कौन हैं।'

अब कम्बन् भरत के मुँह से उनके मन की सभी दबी हुई भावनाओं को बाहर निकलवाते हैं। वे उत्तर देते हैं—

यही है सब बुराइयों को सोचने वाली,
प्रतिशोध की धाय,
यही है वह
जिसने मुझे निर्दयतापूर्वक जमीन पर पटक दिया है
उसकी अभिशप्त कोख में देर तक रहने के बावजूद भी,
यही है वह, केवल वह,
जिसका दुख-रहित चेहरा खिला हुआ है
उस संसार में जहाँ सब मृतक से लग रहे हैं।
अनुमान मत लगाओ कि वह कौन है ?
जो इस प्रकार खड़ी है
यही है वह जिसने मुझे जन्म दिया।

ये वे कटु शब्द थे जिन्होंने सभी लोगों के लिए एक विचित्र परिस्थिति पैदा कर दी थी। इससे उन्हें और पाठक को छुटकारा दिलाने के लिए कवि जल्दबाज़ी करते हैं और नाव के इस दृश्य पर परदा डाल देते हैं। वे तुरन्त दीर्घ विचारपूर्ण छन्द को बदलकर लघु संक्षिप्त छन्द पर आ जाते हैं।

इस निष्ठुर स्त्री को भी
गुह ने अपनी माता माना
और अपने पवित्र हाथों से उसे प्रणाम किया।
पंखहीन हंस के समान नाव
तेजी से किनारे पहुँची।

एक ऐसी स्थिति को बचाने के लिए कवि ने दुर्लभ नाटकीय कौशल का प्रयोग किया है जो किसी छोटे कवियों के हाथों से पतनोन्मुख हो सकती थी। समेटे गए पतवारों वाली नाव की पंखहीन हंस से तुलना इतनी अद्‌भुत है कि पाठक का ध्यान एक दुखदायी स्थिति से हटकर समुचित उपमा की रम्यता पर और किनारे उतरने की सुखमयी आवश्यकता पर चला जाता है।

पृथ्वी पर स्वर्ग

नाव से उतरकर भरत और उनके साथी पैदल ही भरद्वाज ऋषि के आश्रम में जाते हैं जो उनका खुले दिल से स्वागत करते हैं, उन्हें आशीर्वाद देते हैं और भोजन करवाते हैं। अपनी तपस्या के वैभव के कारण ऋषि मन ही मन संदेश भेजते हैं जिससे स्वर्ग उतर कर आता है और धीरे से पृथ्वी पर छा जाता है।

भरत और उनके परिजनों को इस मोहक पृथ्वी-स्थिति-स्वर्ग में छोड़कर कवि हमें चित्रकूट पर्वत पर ले जाते हैं जहाँ राम, सीता और लक्ष्मण छुट्टियाँ मना रहे हैं। एक दिन लक्ष्मण जब अपनी कुटी के आँगन में बैठे हुए थे तब

उन्होंने बहुत दूर कुछ धुँधली सी हलचल देखी। पास ही एक ऊँची शिला थी जो पृथ्वी की ऊपर निकली हुई लम्बी अग्नि-जिह्वा के समान थी। शिला पर चढ़कर और उसकी चोटी पर खड़े होकर लक्ष्मण ने उत्तर दिशा की ओर देखा। उन्हें धनुष बाणों का एक समुद्र दिखायी दिया। इसमें थोड़ा भी संदेह नहीं था कि यह भरत की सेना आ रही थी। गुह के समान जल्दबाज़, स्वामिभक्त और शीघ्र-क्रोधी होने के कारण लक्ष्मण ने भरत के उद्देश्य को गलत समझ लिया और शत्रु को रोकने के लिए तुरन्त कदम उठाने हेतु थोड़ा भी समय नष्ट नहीं किया। नीचे जमीन पर वे कूदे और चट्टानों पर अपने पैर पटकते हुए चट्टानों की धूल का एक बादल बना लिया। वे दौड़कर राम के पास गए और गरजे, 'आदर विहीन भरत अयोध्या की विशाल सेना के साथ आपकी ओर आ रहे हैं।' अपना कवच धारण करते हुए और उसे कसते हुए उन्होंने अपना धनुष उठाया और श्रद्धा-पूर्वक राम के चरणों का स्पर्श करते हुए वे बोले कि वे शीघ्र ही भरत की सेना को तितर-बितर कर देंगे। अपनी कल्पना में लक्ष्मण एक शस्त्र-संघर्ष देखते हैं जिसके खूनी दृश्य वे युद्धोचित, सचित्र रूप में वर्णन करते हैं।

और आप देखेंगे खून की नदियाँ
बहती हुईं और समुद्रों से मिलती हुईं,
सभी बुराइयों को धोती हुईं,
उलटाती और लुढ़काती हुईं द्वीप-गजों को,
बहाती हुईं रथों को।

कम्बन् जो जानते हैं कि छोटी सी भी बात को किस प्रकार नाटकीय रूप देना चाहिए, इस खून की नदी को बेकार नहीं जाने देते। वे लक्ष्मण से कहलवाते हैं—

और भी आप देखेंगे,
लाल राक्षस, तिरछी आँखों वाले बौने,
और बेसिर धड़
उफनती रक्तधारा में तरते हुए
और खुशी से नाचते हुए, देवताओं के समान,
और चिल्लाते हुए,
'राज्य तुम्हारा हो गया है !'

'राजा के आदेश से भरत पृथ्वी पर शासन कर रहा है,' लक्ष्मण ने कहा, 'और मेरे आदेश से वह नरक पर राज्य करने लगेगा।'

इन भयंकर धमकियों को सुनकर के राम चिन्तित हो गए। वे कहते हैं—

शास्त्र, चाहे कितने ही हों,
सद्गुण के विषय में केवल बोल सकते हैं।

किन्तु, भरत सद्गुण का आचरण करते हैं।
जो वे करते हैं वह सद्गुण है,
जो वे नहीं करते, वह नहीं है।
तुमने इस विषय पर नहीं सोचा है,
मेरे प्रति अपने प्रेम के कारण।
क्या तुम बुरा सोचते हो
अत्युच्च सद्गुण के उस देवता के विषय में,
पूर्णत्व की उस धुरी के विषय में ?
वे आए हैं, मेरे बच्चे,
मेरे प्रति सम्मान प्रकट करने,
और यह तुम्हें जल्दी ही मालूम हो जाएगा।

जब राम इस प्रकार बोल रहे थे तभी भरत ने शत्रुघ्न को अपने साथ लिया और राम को पास से देखने की उत्सुकता के कारण वे जल्दी-जल्दी दौड़े। उनके दोनों हाथ सादर प्रणाम की मुद्रा में ऊपर उठे हुए थे, उनकी देह गिरी पड़ रही थी, उनकी आँखें आँसुओं से धुल रही थीं। भरत उस चित्र के समान आए जो मानो यह बतलाने के लिए बनाया गया हो कि 'यह पीड़ा का चित्र है !'

राम ने भरत को ऊपर से नीचे तक देखा और लक्ष्मण की ओर मुँह करके बोले—

देखो, मेरे धनुष-टंकार करने वाले भाई,
अपनी दोनों आँखों से देखो
'युद्ध-पिपासु' भरत को
जो 'समर-सेना' के आगे-आगे हैं !

लक्ष्मण चकित से खड़े रहे, उनके अपशब्द स्तब्ध हो गए थे, उनके क्रोध और धनुष के साथ-साथ उनके आँसू भी जमीन पर गिर पड़े। भरत का शरीर दुबला और व्यथा से क्षीण था। राम की ओर दौड़ते हुए वे शिकायत भरे स्वर में बोले—

आपने सद्गुण के बारे में नहीं सोचा,
आपने दया को फेंक दिया,
आपने विधि का परित्याग कर दिया।

तब वे राम के चरणों में गिर पड़े मानो कि वे अपने मृत पिता को पुनर्जीवित होकर सामने खड़ा हुआ देख रहे हों। राम ने अपने आँसुओं से भरत के जटिल केशों को गीला कर दिया और उन्हें मृदुता पूर्वक उठाकर अपनी छाती से लगा लिया। इस दृश्य से विचलित होकर कम्बन् बोल उठते हैं—

इस प्रकार प्रेमाधार सद्गुण ने

आलिंगन किया
सम्पूर्ण न्याय के कोषागार का।

तब राम ने उनसे पूछा, 'महान् राजा कैसे हैं ?' और भरत ने उत्तर दिया, 'प्रभु, वे अब नहीं रहे। आपका वियोग ही वह रोग है जिसने उन्हें मार डाला। मेरी जननी कैकेयी के द्वारा लिया गया वरदान ही वह यम है जिसने उनका गला घोंट दिया।' इन शब्दों को सुनते ही राम की आँखों में चक्कर आ गया और उनके मस्तिष्क में भी, दोनों चकरी के समान घूमने लगे। धरती पर वे गिर पड़े—जो महत्तम से भी महत्तर थे।

वशिष्ठ ऋषि उन्हें यह कर समझाते हैं, 'मृत्यु भी, जन्म के समान, प्रकृति की एक क्रिया है। क्या इस सत्य को तुम भूल रहे हो—जबकि सभी विद्यमान शास्त्रों में तुम पारंगत हो ?' उनके शब्दों से आश्वस्त होकर राम पास ही एक वन्य निर्झर के पास जाते हैं, स्नान करते हैं और तीन बार जल से श्रद्धांजलि देते हैं।

स्थानाभाव के कारण आगामी हृदय-द्रावक दृश्यों का पुनः विवरण देने में लेखक असमर्थ है। भरत राम से राजदण्ड ग्रहण करने की प्रार्थना करते हैं। राम उनसे कहते हैं कि वे अपने पिता का आदेश चौदह वर्ष वन में रहकर पूरा करेंगे और इसी बीच उनके आदेश से भरत शासन चलाएँगे।

भरत का मुकुट

जैसे ही भरत ने आगे आने वाले चौदह लम्बे वर्षों के विषय में सोचा वैसे ही पीड़ा ने उन्हें फिर से जकड़ लिया, उनका ध्यान प्रभु के चरणों की ओर चला गया जो दिव्य महिमा के प्रतीक हैं, वही महिमा जो सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड और उसके क्रिया-कलापों को प्रेरित करती है। वे बोले, 'कृपया आप अपने पवित्र चरणों की पवित्र पादुकाएँ मुझे दे दें।' राम ने अपनी पादुकाएँ दे दीं जो इहलोक और परलोक के आनन्द से भरत को आनन्दित कर सकती थीं। रोते हुए उन्होंने सुसंस्कृत श्रद्धा के साथ पादुकाओं को अपने सिर पर रख लिया, मन ही मन यह सोचते हुए, 'यही मेरा मुकुट है।' भरत ने राम के चरणों में दण्डवत् प्रणाम किया और वापिस चले गए, राम के चरणों से रौंदी हुयी धूलि से दीप्त शरीर के साथ।

अभ्यागतों के प्रस्थान के साथ ही अयोध्या कांड पर पर्दा गिरता है और अरण्य कांड में उठता है।

अरण्यकांड

मुक्ति-दाता-चरण

अब इन तीनों ने चित्रकूट पर्वत छोड़ दिया और दण्डकारण्य चले गए जहाँ उन्हें विराध राक्षस मिला जिसने दोनों राजकुमारों को खा जाने की धमकी दी। राम ने राक्षस को एक लात मारी और उनके चरण का स्पर्श पाते ही उस राक्षस ने अपना पूर्व रूप धारण कर लिया और बतलाया कि वह इन्द्र के दरबार का तुम्बुरु नामक गवैया था और इन्द्र ने उसकी लोलुपता के कारण उसे शाप दिया था कि वह राक्षस बन जाए और राम के चरणों का स्पर्श पाकर ही उसे उसका पूर्व रूप मिलेगा। इस शाप को और अपनी मुक्ति को याद करते हुए, विराध राम की स्तुति में कुछ सुन्दर पद्य गाता है—

यदि ये तुम्हारे चरण हैं
जिनके विषय में शास्त्र गाते है
और जो सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड में फैले हैं
तो कितना विशाल और मनोरम होगा तुम्हारा विश्वरूप !

ईश्वर केवल अचेतन प्रकृति में ही नहीं रहते अपितु चेतन प्राणियों की चेतना और प्राण में भी रहते हैं। किन्तु यह एक रहस्य है कि ये प्राणी उन्हें नहीं जानते। ऐसा लगता है कि निर्माता और निर्मित के सम्बन्ध को परस्पर-विनिमय का नियम अनुशासित नहीं करता !

ऐसा कोई बछड़ा नहीं है जो अपनी माँ को नहीं जानता,
और कोई ऐसी गाय नहीं है जो अपने बछड़े को न पहचाने ;
हे प्रभु, आप विश्व की माता हैं
और अपने बच्चों को जानते हैं, हर एक को,
किन्तु, अफ़सोस, यह कैसी बात है
कि आपके बच्चे आप को नहीं जानते !
कौन से अज्ञान का जादू उनकी आँखों को अंधा बना लेता है ?
बतलाएँ मुझे आप जो बिना आये हुए आ सकते ।

अज्ञान और ज्ञानी सभी के हृदय में रहने वाले ईश्वर का ज्ञान तभी होता है

जब अज्ञानी को 'दिव्य ज्ञान' की प्राप्ति होती है। इसलिए ऐसा नहीं कह सकते कि ज्ञान प्राप्ति के समय ही ईश्वर आते हैं। उनके विषय में ज्ञान होने से पहले भी वे हृदय में रहते ही हैं। यही वह सत्य है जिसे कवि कम्बन् विराध के मुख से एक पहेली के रूप में कहलवाते हैं, 'आप जो बिना आये हुए भी आ सकते हैं।' कवि के अनुसार ईश्वर के आध्यात्मिक ज्ञान के पहले उनका भौतिक ज्ञान होता है।

विराध के चले जाने के बाद ये तीनों शरभंग मुनि के आश्रम की ओर जाते हैं। आश्रम के द्वार पर राम इन्द्र का चिह्न देखते हैं और यह पता लगाने के लिए भीतर जाते हैं कि इन्द्र वहाँ हैं या नहीं। वाल्मीकि की रामायण में इन्द्र जैसे ही राम को देखते हैं, वैसे ही बिना मिले हुए आश्रम छोड़ देते हैं जिससे कि पृथ्वी पर राम के कार्य में विलम्ब न हो। किन्तु कम्बन् इन्द्र को राम से मिलवाते हैं जिससे कि बुराइयों को नष्ट करने के लिए देवताओं के कहने से मनुष्य के रूप में अवतार लेने के लिए भगवान से इन्द्र आभार प्रगट कर सकें। इस प्रकार आयोजित मिलन से कवि को वह अवसर मिल जाता है जिससे वे विश्व की पृष्ठ-भूमि में पृथ्वी की घटनाओं को समझा सकें और मानव के पार्थिव दृष्टि-कोण को विस्तृत कर सकें।

इन्द्र राम की स्तुति में कहते हैं—

आप वह प्रकाश हैं
जो अन्तः प्रविष्ट होकर शोषित कर लेता है सब कुछ
फिर भी रहता है अशोषित।
शत्रु से तंग आकर
हमने आप के चरणों का आश्रय लिया
और आप से याचना की;
और प्रदत्त वरदान की पूर्ति हेतु
आप अवतरित हो गए हैं, हे प्रभु !
अहो आपके दोनों चरण कमल
अब स्थित हैं पृथ्वी पर !

कष्ट धारण

अपने भक्तों के प्रति प्रदर्शित भगवान की इस करुणा से इन्द्र विचलित हो जाते हैं कि उन्होंने अपना विश्वरूप त्याग दिया तथा काल और स्थान में अपने को सीमित करके मानवीय दुःख दर्द झेलना स्वीकार किया—केवल मनुष्य की मुक्ति के लिए।

इन्द्र आगे स्तुति करते हैं—

ऐसा कोई नहीं है

जो आप के ईश्वरीय तत्त्व से अस्पृष्ट है,
और ऐसा भी कोई नहीं है
जो उससे पूर्णतः स्पृष्ट है;
वह न प्रकाश है न अन्धकार,
न ऊपर है न नीचे,
वह वृद्धि के बिना नहीं है,
किन्तु वह वृद्ध भी नहीं होता है;
उसका न आदि है, न मध्य, न अंत,
न पूर्व न पश्चात्;
प्रभु ऐसा है आपके तत्त्व का स्वरूप;
तो कौन आपको दोष देता,
यदि आप हमें मुक्ति देना अस्वीकार कर देते
इस पृथ्वी पर आकर
धनुष का भार उठाकर
और धरती पर पैदल घूमकर
अपने गुलाबी पैरों से
जो कष्ट से लाल हो रहे हैं ?
हे सोने वाले
अनन्तता के कृष्णसागर में,
आपको क्या बदला मिलता है
हमें दुख से मुक्त करने का ?

अनन्तता का माप

अपनी भक्ति की गहनता में इन्द्र अनन्तता को मापने के लिए कल्पना का एक अत्यन्त विराट् चषक बनाते हैं किन्तु वे शीघ्र ही समझ जाते हैं कि यह चषक तो इस काम के लिए बिल्कुल अपर्याप्त है। वे कहते हैं—

लोकों की सृष्टि करने वाले ब्रह्मा
सभी ग्रहों के तत्त्वों से बनावें
एक विशाल मापक चषक,
और खड़े होकर स्फूर्ति सहित
आप को मापें वे युग-युगों तक
फिर भी आपकी अमाप्य महिमा रहेगी
अक्षय, अमापित।
पृथ्वी को कटोरा बनाकर,

सागर को क्षीर,
और मेरु पर्वत को मथनी,
आपने मथा सागर
अपने दुखते कर-कमलों से
और दिया हमें अमर बनाने वाला अमृत ।
तो राक्षस
कैसे न बनें आपके दास !

राम, लक्ष्मण और सीता तब अगस्त्य मुनि के पर्वतीय आश्रम की ओर रवाना होते हैं जहाँ निर्झरों का जाल बिछा हुआ था 'प्रत्यग्र मधु से भी मधुतर ।'

योगी दिग्गज

अगस्त्य मुनि की विद्वत्ता उतनी ही गहन थी जितनी कि विशाल । उनका न केवल कला, काव्य और अध्यात्म के ऊपर, अपितु विज्ञान, चिकित्सा, शस्त्र-विद्या, बाँध बनाना, सिंचाई जैसी लौकिक विद्याओं के ऊपर भी पूर्ण अधिकार था । सुदूर देशों से लोग तिरुनेलवेलि जिले की पौडीकै पहाड़ी पर स्थित अगस्त्य के विद्यापीठ में अध्ययन करने के लिए आते थे । वे ज्ञान और संस्कृति के शक्ति-स्रोत थे । उन्होंने जैसे ही सुना कि राम उनके आश्रम के पास आ गए हैं, वैसे ही वे उनका स्वागत करने के लिए दौड़ पड़े (जबकि बाल्मीकि के अगस्त्य राम को लाने के लिए एक दूत भेजते हैं) ।

तमिल परम्परा के अनुसार अगस्त्य ने उपलब्ध मानवीय ज्ञान को संक्षिप्त करके तमिल भाषा में कई ग्रन्थ लिखे थे, यद्यपि बाद में ये पुस्तकें नष्ट हो गई जबकि तमिलनाडु का अधिकांश दक्षिणी भाग समुद्र में डूबा । इसीलिए कम्बन् कहते हैं कि अगस्त्य ने तमिल के दण्ड से, विष्णु के समान, संसार की ऊँचाई को नापा ।

अगले गीत में कम्बन् एक सार्थक प्रतीकात्मक जन श्रुति का उल्लेख करते हैं । अत्यन्त प्राचीन काल में एक असुर जाति थी जिसने संसार के सारे आध्यात्मिक और नैतिक कोष इकट्ठे कर लिए थे और जो बाद में इनके साथ ही समुद्र की गहराइयों में जा डूबी । इस पर देवता अगस्त्य के पास गए और डूबे हुए कोष को निकालने की प्रार्थना की । अगस्त्य ने प्रार्थना मान ली; उन्होंने समुद्र का पानी अपनी हथेली पर लिया और उसे पीकर समुद्र सोख लिया,, तब देवताओं की प्रार्थना पर उन्होंने अपने पेट में भरा हुआ समुद्र का पानी मुँह से निकाल दिया और इस प्रकार छिपे हुए कोष फिर से मनुष्यों को उपलब्ध करा दिए ।

रसिक-मणि टी. के. चिदम्बरनाथ मुदलियर इस जनश्रुति का स्पष्टीकरण

पाँच शताब्दियों पूर्व मिरनडोला ने जो किया था उससे देते हैं। ग्रीक कला और साहित्य इतने सूक्ष्म और जटिल थे कि इटली के लोग ग्रीक परम्पराओं से अनभिज्ञ होने के कारण उन्हें बिलकुल गलत समझ लेते थे। सौन्दर्य-अनुभूति से विहीन इटली-वासी वैयाकरणों और भाष्यकारों के एक समूह ने ग्रीक कला की भव्य कृतियों पर अपनी रूखी बुद्धि का प्रयोग किया एवं ग्रीक संस्कृति में जो कुछ भी सुन्दर और शालीन था उस पर कालिख पोत दी। वस्तुतः ये पथ-भ्रष्ट भाष्यकार कलाशत्रु असुरों की एक जाति बन गए जिन्होंने अपनी अनुभूति-शून्यता के कारण ग्रीक मस्तिष्क की उज्जवल उपलब्धियों को शून्य बना दिया। इस अन्धकार युग में मिरनडोला ने जन्म लिया। उसने ग्रीक कला का गहन अध्ययन किया, इटली के वैयाकरणों और भाष्यकारों की गलतियाँ बतलाईं और ग्रीक संस्कृति की अन्तरात्मा को उद्घाटित किया। बहुधा संस्कृति के इतिहास में इस प्रकार की घटनायें पुनरावृत्त होती हैं, अत्यन्त कलात्मक और आध्यात्मिक क्रिया-कलापों के युग पर पश्चात्वर्ती भ्रष्ट-भाष्य का अन्धायुग छा जाता है। टी० के० चिदम्बर नाथ मुदलियर का यह विचार तर्क संगत ही है कि अगस्त्य ने असभ्यों के चंगुल से कला और ज्ञान को छुड़ाया होगा तथा उनके द्वारा समुद्र पिए जाने और देवताओं के कहने से उगले जाने की जनश्रुति उनकी उस सेवा की प्रतीक है जो उन्होंने परिमार्जन और नूतन संस्करण प्रस्तुत करके की थी।

अगले गीत में कम्बन् फिर से प्रतीकमयी भाषा में अगस्त्य की उपलब्धियों का उल्लेख करते हैं। 'ऐकात्म्य मार्ग' को खोजने वाले मनुष्य अगस्त्य के पास जाते हैं और पूछते हैं, 'ईश्वर के पास जाने वाला पीड़ा-रहित मार्ग कौन सा है ?' मौखिक उत्तर देने की अपेक्षा अगस्त्य ने एक विश्वासोत्पादक प्रदर्शन किया।

एक जादू के पहाड़ पर
जो आकाश को छू रहा था और जिसके चारों ओर थी
उमड़ते मेघों की एक चंचल माला,
अगस्त्य ने अपना पैर रखा और चढ़ गए,
तुरन्त पर्वत नीचे-नीचे दबने लगा
और पाताल तक पहुँच गया,
वे उसकी चोटी पर खड़े रहे विजयी
योगी दिग्गज समान।

इस प्रदर्शन ने अगस्त्य से प्रश्न पूछने वालों को आत्मिक विकास की प्रमुख समस्या हल करने का रास्ता बतला दिया होगा। मनुष्य और ईश्वर के बीच में जो चीज अड़ी है वह है मानवीय अहंकार जिसका उल्लेख कम्बन् आकाश छूने वाले विशाल जादू के पर्वत के रूप में करते हैं। किन्तु यह पर्वत, यद्यपि माया है,

फिर भी मानव मस्तिष्क का एक दुर्गम प्रक्षेप है और लोभ, क्रोध, भ्रम जैसे अज्ञात बादलों से आच्छन्न है। जिस क्षण मनुष्य इस पर अपना पैर मजबूती से रोप देता है और इसे नीचा कर देता है उसी क्षण वह ईश्वर को जान लेता है। यह एक रहस्यात्मक प्रक्रिया है जो, हठयोग की प्रक्रिया से भिन्न, शारीरिक पीड़ा से रहित है और इसे अगस्त्य ने ईश्वर का 'पीड़ारहित मार्ग' कहा है।

कम्बन् अगस्त्य से सम्बन्धित एक दूसरी जनश्रुति भी बतलाते हैं और यह सम्भवत: दक्षिण भारत को प्रभावित करने वाले किसी भूगर्भीय परिवर्तन पर आधारित है। हिमालय पर शिव और पार्वती का विवाह होने वाला था। इस विवाह को देखने के लिए वहाँ सारा संसार इकट्ठा हो गया जिसके परिणाम-स्वरूप इस अभूतपूर्व भार को न सहकर हिमालय नीचे धँसने लगा। शिव ने तुरंत बौने अगस्त्य को बुलाया और उनसे जल्दी दक्षिण दिशा में जाने को कहा। वजन बराबर करने के लिए अगस्त्य पोडीकै पहाड़ी पर चले गए और संतुलन बराबर हो जाने से धँसता हुआ हिमालय ऊपर आ गया। इस आख्यानात्मक तुला में जो तौले गए हैं वे पिण्ड नहीं हैं बल्कि जीवन-मूल्य हैं, और सांस्कृतिक शक्ति के रूप में अगस्त्य के मूल्य को साहसपूर्वक शिव और अवशिष्ट मानव जाति के बराबर माना गया है।

अद्‌भुत विद्वत्ता और आध्यात्मिकता वाले ये संत ही अपने आश्रम में आने वाले राम का श्रद्धापूर्वक स्वागत करने दौड़े जाते हैं। दौड़ते-दौड़ते अगस्त्य विचार करते हैं कि राम का आगमन उनकी समस्त तपस्या की चरम-परिणति का सूचक है। वे रोमांचित हैं क्योंकि उन्हें राम के रूप में ईश्वर के दर्शन होने वाले हैं और वे भाव-विभोर होकर कहते हैं—

ब्रह्मा चारों सस्वर वेदों को
और वेदांगों को
ज्ञान की विशाल चक्की में डालें
और पीसते रहें
कई-कई दिनों तक,
फिर भी वे सत्य को नहीं पकड़ सकते।
किन्तु वह निर्गुण यहाँ आया है शरीर धारण करके
मुझसे बात करने
आमने-सामने !

दोनों के मिलन का कम्बन् एक भव्य गीत में वर्णन करते हैं—

आने वाली उन्नत आकृति
झुकी चरणों में
उस आकृति के जो खड़ी थी स्तब्ध;

प्रेम-पूर्वक उन्हें गले लगाकर
आँखों से आनन्दाश्रु बहाते हुए
मुनि ने भावभीने शब्दों से स्वागत किया—
मुनि ने, जो अमर हो चुके थे
गीत गाकर
दक्षिण की अमर तमिल में।

राम के आगमन पर अगस्त्य-आश्रम के तपस्वियों ने उत्सव मनाया। राम के सम्मान में एक भोज दिया गया और भोज के अन्त में राम से कुछ दिनों तक आश्रम में रहने की प्रार्थना की। राम ने पापमयी शक्ति को मिटा देने की प्रतिज्ञा की और आश्रम से आगे जाने की तथा एक ऐसे महत्त्वपूर्ण स्थल पर रहने की आज्ञा माँगी जहाँ वे बीच में ही राक्षसों से आमना-सामना कर सकें। अगस्त्य ने उनकी योजना स्वीकार कर ली और उन्हें शिव धनुष और तरकस दिया जो कई वर्षों से उनके पास आदर-सहित रखा हुआ था। साथ में उन्हें वह विशाल बाण भी दिया जिसके द्वारा शिव ने त्रिपुर नष्ट किए थे। ये भेंट देकर, अगस्त्य ने यह सुझाव दिया कि राम पंचवटी में जाकर रहें जहाँ से गोदावरी नदी निकलती है। कम्बन् के अगस्त्य पंचवटी के भव्य दृश्य का विशद चित्रण करते हैं—

ऊपर उठते हुए झाड़, और उनके ऊपर,
ऊपर उठते हुए बाँस के झुरमुट, और उनके ऊपर,
ऊपर उठते हुए पर्वतों के शिखर,
किनारे से निकली हुईं ठंडी झाड़ियाँ,
झूलते हुए फूलों के गुच्छोंवाली
परस्परकलित,
समीप ही एक मृदुनिर्झर धीरे-धीरे बहता हुआ
लहराती हुई स्वप्निल तरंगों सहित—
इस पवित्र पृष्ठभूमि में, मेरे बेटे,
स्थित है पंचवटी।

इस वर्णन के साथ ही मुनि तीनों को विदा करते हैं जो मुनि का आशीर्वाद लेकर उत्तर दिशा में पंचवटी की ओर जाते हैं।

कोस पर कोस वे चलते गए
पार करते हुए
सुन्दर झरने···कुछ लेटे कुछ खड़े···
और पहाड़···कुछ एक कतार में चलते
और कुछ पास-पास बैठे···
कि उन्होंने दूर से देखा गृध्रराज को।

ममतामयी चिड़िया

पर्वत शृंखला में से एक काली पहाड़ी निकली हुई है और काली पहाड़ी में से एक भूखंड आगे की ओर निकला हुआ है जिस पर गिद्धों का राजा जटायु बैठा हुआ है। संयत वाल्मीकि जटायु को एक वटवृक्ष की शाखा पर बैठा हुआ बतलाते हैं और यह कहने के अलावा कि वह विशाल और शक्तिशाली है वे कुछ अधिक वर्णन नहीं करते। किन्तु कम्बन् उस पक्षी के ऊपर अपनी विस्तृत वर्णन-शक्ति और सजीव-चित्रण के कौशल का प्रयोग करते हैं, जो अगले कुछ दृश्यों में सीता को बचाने के लिए अपने प्राणों की आहुति दे देने वाला है। कलाओं में निष्णात, विद्याओं में संतुलित स्थिरमति, सत्यधर्मा और निर्दोष, तीक्ष्णबुद्धि वह परिपक्व राजनीतिज्ञ के समान दूर तक देखता है अपनी छोटी-छोटी आँखों से। वाल्मीकि-रामायण में जटायु अपना परिचय राम और लक्ष्मण से उनके पिता के परम मित्र के रूप में देता है किन्तु दशरथ के विषय में पूछना भूल जाता है। दूसरी तरफ, जटायु के द्वारा दशरथ के स्वास्थ्य के विषय में पूछताछ करवाकर कम्बन् पक्षी और मनुष्य के बीच की प्रेरणादायक मित्रता को एक अत्यधिक मर्मस्पर्शी शोकगीत के द्वारा प्रस्तुत करने का अवसर उत्पन्न कर लेते हैं। परिणामस्वरूप कल्पना और नाटकीय सहानुभूति के द्वारा जटायु पाठक के अधिक समीप ला दिया गया है और पाठक की भावनाओं को भी प्रभावी रूप से खींचा गया है।

जटायु अपने विशाल फैले हुए पंखों की छाया का आश्रय देते हुए इन तीनों को पंचवटी की राह बतलाता है और अगस्त्य के द्वारा वर्णन किए गए स्थल की ओर इंगित करके निरीक्षक उड़ान के लिए आगे बढ़ जाता है। अपनी स्वर्णवक्षा वधू और अपने दोनों पुत्रों पर विचार केन्द्रित रखते हुए जटायु आसमान के स्थानों को उड़-उड़कर देखता है। आदमी की खोल से बाहर निकलने की अद्वितीय क्षमता रखने वाले कम्बन् अब इन तीनों की ओर एक पक्षी के कोमल हृदय के भीतर से और उत्सुकता भरे नेत्रों से देखते हैं, और कहते हैं—

जटायु तीनों को देख रहे थे
जिस प्रकार ममतामयी चिड़िया देखती है
अपने चूज़ों को घोंसले के अन्दर।

यही वह क्षमता है जिसके द्वारा कम्बन् इस काल्पनिक और पौराणिक पात्र को जीवन, भावना और शक्ति प्रदान करने में और मनुष्य तथा पक्षी के बीच एक सेतु निर्माण करने में सफलता प्राप्त करते हैं।

शूर्पणखा का विचित्र प्रेम

जब राम और सीता इस मोहक वातावरण में आनन्दपूर्वक अपने दिन बिता रहे थे तभी उनके जीवन में एक अतिक्रमणकारी का प्रवेश होता है जो घटनाओं को तीव्रगति से आगे बढ़ाता है। रावण की छोटी बहिन शूर्पणखा नाम की राक्षसी पंचवटी के पास विशाल वन में एकछत्र राज्य करती थी। अदम्य षड्यन्त्रकारी भाग्य ने उसे वहाँ ला दिया जहाँ राम रहते थे। राम राक्षस जाति का विनाश करने के लिए पैदा हुए थे और कवि के अनुसार राम को उनके काम में सहारा देने के लिए शूर्पणखा पैदा हुई थी। परिणामस्वरूप दोनों का मेल हो जाना महाकाव्य में महत्त्वपूर्ण अर्थ रखता है। जैसे ही शूर्पणखा राम को देखती है वैसे ही उसे लगता है कि इस प्रकार का सौन्दर्य उसने पहले कभी नहीं देखा। वह उन्मत्त होकर उनसे प्रेम करने लगती है। वह आश्चर्य करती है कि इस प्रकार की सुन्दर आकृति, जिसे विषयों के उपभोग में ही लगे रहना चाहिए, क्यों तप करके क्षीण और मलिन हो रही है। वह अपने से ही पूछती है—

ध्यान ने कौन सा ध्यान किया था
इसे ध्यान में ललचाने के लिए !

वाल्मीकि की शूर्पणखा, जो लाल बालों वाली, बड़े पेट वाली और अतिशय कुरूप है, वासना के अतिरेक में राम के सामने जाने से पहले अपना रूप बदलना भूल जाती है। किन्तु कम्बन् की शूर्पणखा इतनी चालाक है कि वह अपनी जादुई ताकत का इस्तेमाल करती है और राम के सामने जाने से पहले एक सुन्दरी की लुभावनी आकृति धारण कर लेती है। वह एक मन्त्र पढ़ती है और तुरन्त उसका चेहरा और शरीर चन्द्रमा को भी मात देने लगता है। मधुर लय और गति वाले एक गीत में कम्बन् चमकीली लहराती हुई साड़ी पहने शूर्पणखा को राम के सामने लाते हैं। वह धीरे-धीरे आती है, मोर के समान चलते हुए, लुभावने अंग-संचालन के साथ। उसका सुनहरा रंग स्वर्ग के सदाबहार कल्पवृक्ष की मखमली कोमल कोंपलों के समान है। उसके गुलाबी ओंठ कामोत्तेजक मधु से रंजित लगते हैं। ओठों के पीछे चमकीले मोतियों की माला है। वह अपनी आँखें हरिणी की लजीली आँखों जैसी कर लेती है। यह खेद की बात है कि मूल पाठ के लुभावनेपन को अनुवाद में नहीं उड़ेला जा सकता। उस सुन्दरी की अलौकिक चंचलता को कम्बन् ने अपने काव्य में अत्यन्त चतुरता से कैद किया है, और इस गीत में जिस सौन्दर्य के दर्शन कराये गए हैं वह अगले गीत में सुनवाया गया है। शूर्पणखा के पायलों की झंकार उसकी करधनी से लगी हुई, छोटी घंटियों की रुनझुन, उसके कंठहार का खनकना और उसके केशों में गुथे हुए फूलों के ऊपर मंडराने वाले सुनहले भौंरों की गुँजार—ये सब प्रतिस्पर्धी ध्वनियाँ उद्घोष करती हैं,

'एक सुन्दरी आ रही है।'

यद्यपि कम्बन् प्रेम के विषय में अत्यधिक गहनता और वास्तविकता के साथ लिख सकते हैं, वे शूर्पणखा के विचित्र प्रेम का कई गीतों में हास्य-रस-पूर्ण वर्णन करते हैं। राम के द्वारा झिड़के जाने पर वह जमा हुआ बर्फ अपने उन्नत उरोजों पर छापती है किन्तु तपती हुई चट्टान पर फेंके गए मक्खन के समान वह पिघल जाता है। अन्ततः उसकी नाक, कान और 'विद्रोही' चूचुक काटकर लक्ष्मण उसे उसकी उद्दाम प्रेमवासना के लिए दण्ड देते हैं। वह चीखती है 'एक बड़े नगाड़े के समान जो यमराज के आदेश से राक्षस जाति के विनाश का उद्घोष करता है'।

शूर्पणखा रावण के राज-परिवार में उत्पन्न हुई थी। उसके पीछे राक्षस राज्य का सम्पूर्ण प्रभुत्व और संरक्षण था। उसे दूसरों को सताने की आदत थी, किन्तु सताए जाने की नहीं। एक साधारण मनुष्य के द्वारा अपमानित हो जाने के कारण उसकी राजकीय लज्जा उभड़ आई। दोषी न केवल अदण्डित था बल्कि अपने अपराध का मज़ा भी ले रहा था, जबकि महामहिम सम्राट् की बहिन धूल में लोट रही थी। रावण की आज्ञा से वन के बचाव के लिए नियुक्त राक्षस खर और दूषण को इस अपमान की जानकारी मिलने पर उन्होंने राम से युद्ध किया, किन्तु मारे गए।

लंका नगरी

उनके मारे जाने पर शूर्पणखा लंका नगरी के लिए रवाना हो गई। इस मौके पर ही कम्बन् रावण का उसकी सम्पूर्ण शान-शौकत में परिचय करवाते हैं। उसे उन्मुक्त दुर्गणों की शक्ति के प्रतीक के रूप में एक महा-राक्षस के समान चित्रित नहीं किया गया है; बल्कि कम्बन् उसका वर्णन करते हैं एक उदात्त, साहसी, आध्यात्मिक रूप से महान, परोपकारी और सुसंस्कृत व्यक्ति के रूप में, उसके व्यक्तित्व को दूषित करने वाला और उसका पतन करवाने वाला दुर्गुण केवल उसकी भ्रष्ट और अंधी कामुकता ही थी। उसके दरबार में बड़े-बड़े राजा दोनों हाथ जोड़कर उसके चारों ओर घूमा करते थे कि पता नहीं कब और किस पर उसकी कृपादृष्टि हो जाए। स्वर्ग का संगीतज्ञ तुंबुरु उसके कंधों की वीरता का सुमधुर गान करता था; नारद अपनी वीणा के तारों की मधुर झंकार से उसके कानों को सुख दिया करते थे, प्राचीन शास्त्रीय परम्परा की शुद्धता और उच्चता से बिना हटे। यह सारा संगीत एकदम रुक जाता है जब रावण के दरबार में घुसती है शूर्पणखा समुद्र को मथ देने वाले तूफान के क्रुद्ध वेग से। अपनी राजकुमारी बहिन के इस अपमान और अंगभंग से रावण तिलमिला उठा और गरजती हुई आवाज में पूछने लगा, 'यह किसका काम है?' शूर्पणखा, जो अपराधियों से अत्यधिक प्रेम करती थी, बोली, 'वे मनुष्य हैं जिन्होंने अपनी तलवार

निकालकर मेरा अंगभंग कर दिया, किन्तु वे कामदेव के समान हैं। क्या एक ही लोक में दो कामदेव एक साथ रहते हैं?' प्रशंसा के ये शब्द अंगभंग करने वालों के प्रति संदेहात्मक रूप में किसी भी प्रकार की कटुता से रहित थे और रावण के मन में शंका उत्पन्न कर सकते थे। किन्तु सीता का मोहक वर्णन देकर शूर्पणखा ने उसकी शंका को दबा दिया। उसकी योजना रावण की कुख्यात कामुकता का लाभ उठाकर उसे सीता-हरण के लिए मनवाने की थी जिससे वह राम और लक्ष्मण पर अपना एकाधिकार रखने के लिए स्वतंत्र हो जाती। सीता के सौन्दर्य का शूर्पणखा ने जो लुभावना वर्णन किया उससे रावण का हृदय उद्दीप्त हो उठा। कामोन्मत्त होकर रावण रात भर जागता रहा, सीता को पाने की योजना बनाते हुए। उसने अपने चाचा मारीच को बुलाया और उसे उसकी इच्छा के विरुद्ध भी इस बात पर मजबूर किया कि वह राम से सीता को अलग करके बदला ले, और इस प्रकार सीता-हरण में उसकी सहायता करे। मारीच ने एक स्वर्णमृग का रूप धारण किया, जिसकी सुनहली किरणें आकाश और पृथ्वी को आलोकित कर रही थीं, और पंचवटी की ओर रवाना हुआ। जब वह पंचवटी के निकट आया, तब सीता अपनी कुटी से बाहर निकल रही थीं।

उनकी कोमल कटि बल खाती हुई,
वे नाजुक कदमों से घूम रहीं थीं,
फूल चुनते हुए
अपने हाथों से
जो बिन-टूटे फूलों समान थे।

इस गीत का मूल पाठ यह प्रदर्शित करता है कि कम्बन् ने किस प्रकार सीता की शालीन गति में अपनी आत्मा डुबा दी है और उससे नाजुक कविता का निर्माण किया है। इस दृश्य में सीता राम से खुशामद करती हैं कि लक्ष्मण को भेजने की बजाय वे अपने हाथों से इस हिरण को पकड़ें। इस दृश्य को वर्णन करने वाले गीतों की ध्वनियों में कुछ स्त्रीसुलभ लुभावनापन है, व्यंजनों की अपेक्षा स्वरों का मनमोहक गान है। जैसे ही राम हिरण के पीछे गये, वैसे ही उसने अपने कान चौकन्ने किए, और अपने चारों पैर छाती से लगाते हुए कुलाँचे मारकर भागने लगा, वह पवन और मन से भी अधिक तेज भाग रहा था मानो की गति को भी और अधिक गति प्रदान कर रहा था। वह पहाड़ी पर चढ़ गया, बादलों के एक गुच्छे में कूद गया और जब कभी राम थक कर रुक जाते तभी वह उनकी पहुँच के भीतर आ जाता, और स्थिर खड़े रहने का बहाना बनाकर दूर, बहुत दूर भाग जाता। उसकी मोहिनी गति उन पुष्प-सज्जित वेश्याओं के समान थी जो अपने चंचल प्रेम-प्रदर्शन को स्वर्ण मुद्राओं की तरफ ही फेंकती हैं। जब पाठक हरिण की चपल गति में तल्लीन रहता है तभी कम्बन् एक समुचित किन्तु आघा-

तक उपमा के द्वारा उसे वास्तविकता के एक दूसरे धरातल पर ले जाते हैं और उसे किराये पर काम करने वाली उदास 'खुशदिल' लड़कियों की मानसिक गति का दर्शन करवाते हैं। एक लम्बे पत्ते की आकृतिवाले बाण के द्वारा राम ने हरिण को मार डाला। हरिण ने राम की आवाज धारण की और सहायता के लिए चिल्लाया, फिर गिर कर मर गया। अब राम समझे कि यह हरिण किसी गहरे षड्यन्त्र का एक हिस्सा था, जिसके विषय में लक्ष्मण ने पहले ही चेतावनी दे दी थी।

अपहरण

दुःख भरी इस झूठी आवाज़ से धोखा खाकर सीता ने समझा कि राम मुसीबत में फँस गए हैं। उन्होंने अनिच्छुक लक्ष्मण से काफी भलाबुरा कहा और राम के बचाव के लिए जाने हेतु उन्हें मजबूर किया। राम और लक्ष्मण की अनुपस्थिति में रावण एक वृद्ध और अपंग संन्यासी के रूप में आया तथा जहाँ सीता खड़ी थीं जमीन के उस टुकड़े सहित सीता को उठाकर अपने रथ में रखा और आकाश में उड़ चला। सीता के विलाप को जटायु ने सुना। पक्षी और राक्षस के बीच में एक भयंकर द्वन्द्व युद्ध हुआ, रावण ने अपनी तलवार से जटायु के दोनों पंख काट दिए और जटायु अचेत होकर गिर पड़ा। रावण शीघ्रता-पूर्वक सीता को लंका ले गया और उनके पवित्र शरीर का स्पर्श करने से डरते हुए उन्हें अशोकवन नामक एक सुन्दर वाटिका में काली राक्षसियों के बीच कैद कर रखा। कवि कहते हैं—

काली राक्षसियों के समूह के बीच बैठी हुई
सीता दीप्त थीं
एक चमकती हुई विद्युल्लता के समान
जो वर्षामेघों के सघनवृंद को करती है विभाजित।

इसी बीच में कुशंकाओं से भरे हुए मन वाले राम जल्दी-जल्दी आश्रम वापस आए और वहाँ सीता को न पाकर उन्हें बड़ा धक्का लगा। वे उस आत्मा के समान थे जो अपने शरीर से निकल जाने के बाद पिंजड़े की तलाश में फिर वापिस आती है और उसे गायब पाती है। वे असहाय खड़े रहे, विशाल धनुष और बाणों का भार सहन करते हुए। लक्ष्मण ने उन्हें एक रथ के जाने के चिह्न बतलाए और दुख में डूबे हुए वे दोनों उन चिह्नों के पीछे-पीछे लड़खड़ाते हुए आगे बढ़े। कुछ दूरी पर राम ने एक दारुण दृश्य देखा और दौड़कर आगे जाने पर उन्हें खून के डबरे में अचेत पड़ा हुआ जटायु दिखाई दिया। राम की आँखों से आँसुओं की धारा बहने लगी और वे जटायु के पवित्र शरीर पर गिर पर बेहोश हो गए। लक्ष्मण ने अपनी हथेली में लिया समीपस्थित झरने का 'मेघ-चुम्बित' जल

और उसे राम के चेहरे पर सींचा। राम होश में आए और जटायु की दशा पर विलाप करने लगे। पक्षीराज सचेत हुआ और अपनी आँखें खोलकर इस बात पर खुश हुआ कि उसने अपने पर लगा हुआ धब्बा धो डाला है। उसे ऐसा लगा मानो कि उसे अपने दोनों कटे हुए पंख और सप्तलोक फिर से मिल गए हों। रावण के मुकुट को टुकड़े-टुकड़े कर डालने वाली चोंच से उसने बार-बार धीमे-धीमे राम-लक्ष्मण को चूमा।

रावण किस प्रकार सीता को ले गया, राम से यह बतलाने में जटायु हिचकिचाया। काफी संकोच के बाद साहस करके उसने अपहरण का बहुत घुमाकर उल्लेख किया यह कहते हुए कि राम राक्षसों की जहरीली काई को समूल नष्ट कर दें। जब वह लड़खड़ाते हुए ये शब्द बोल रहा था, राम ने यह अनुमान लगा लिया कि किसी राक्षस ने सीता का अपहरण किया है और जटायु के पंख काटे हैं जिस समय वह बचाव के लिए झपटा होगा। राम क्रोधावेग से भर गए और बोले कि वे सारी दुनिया का नाश कर देंगे, उन देवताओं का भी जो आलस्यपूर्वक बैठे देखते रहे। राम के मन की उन्मत्त अवस्था से स्तब्ध होकर जटायु ने उनके अदम्य क्रोध को दूर करने के लिए एक बड़ी शल्यक्रिया आरम्भ की। वह जानता था कि तीखे शब्द राम के दिल को चोट पहुँचाएँगे, किन्तु ऐसे शब्दों का प्रयोग करने के अलावा और कोई रास्ता नहीं था, क्योंकि ये शब्द ही अभीष्ट फल प्रदान कर सकते थे। उन्होंने राम को इस बात का दोष दिया कि उन्होंने बेचारी सीता को अकेली छोड़कर एक चमकीले सींगों वाले हरिण के पीछे भागकर अपने कुल पर कलंक लगाया है। 'दोष तुम्हारा है न कि संसार का', उसने कहा। इन गर्म शब्दों का राम पर तुरन्त असर हुआ और उनका क्रोध कम हुआ। राम ने कहा, 'महानुभाव, कृपया बतलाएँ कि राक्षस किस दिशा में गया है।' जब राम ये शब्द कह ही रहे थे तभी गृद्धराज को चक्कर आया, उसकी बोली बंद हो गई, वह अचेत हो गया और मर गया।

यद्यपि वाल्मीकि का जटायु राम को यह बतला देता है कि सीता का अपहरण रावण ने किया है, कम्बन् नाटकीय संशय का एक नवीन तत्त्व जोड़ देते हैं कि अपहरणकर्त्ता का नाम बताने के पहले ही जटायु अपनी अन्तिम साँस छोड़ देता है। साथ ही, जटायु को खून के डबरे में पड़े हुए देखकर राम सन्देह करते हैं कि मांसाहारी गिद्ध ने सीता को मारकर उसे खा लिया होगा, और इसलिए वे उसे बाण से मारने को उद्यत होते हैं। इस मौके पर जटायु राम से प्रार्थना करता है कि वे उसे न मारें और बतलाता है कि किस प्रकार जब वह सीता को बचाने झपटा तब रावण ने उसके दोनों पंख काट डाले। दूसरी ओर, कम्बन् के राम जटायु के विषय में सम्मान के अलावा और कुछ सोच ही नहीं सकते जिसे वे अपने पिता की द्वितीय आत्मा समझते हैं, और इस प्रकार इन दोनों के बीच

के घनिष्ठ मृदु सम्बन्ध का मनोहारित्व ऐसे किसी भी सन्देह से दूषित नहीं होता है जैसा कि वाल्मीकि के राम के मन में उत्पन्न होता है। अपनी गहन मानवीय नाटकीय योजना से कम्बन् ने जटायु को एक अविस्मरणीय पात्र बना दिया है।

किष्किधाकांड

जिसने दशरथ की मृत्यु से खाली हुए स्थान को भर दिया था उस जटायु के दाह-संस्कार को करके, राम और लक्ष्मण सीता को ढूँढ़ते हुए चारों ओर घूमने लगे। अन्ततः वे किष्किधा के पहाड़ी प्रदेश में पहुँचे जहाँ हनुमान ने उन दोनों का ससम्मान स्वागत किया। हनुमान उनकी शालीनता से मुग्ध हो गए और समझे कि ये स्वर्ग से आ रहे हैं। इनके द्वारा हनुमान में इतना परिवर्तन हो गया कि उनके ज्ञान के द्वार सुपरिमार्जित हो गए और पृथ्वी के सारे पदार्थों ने एक नया अर्थ व सौन्दर्य धारण कर लिया। इनके चरणों के स्पर्श से ही आग उगलने वाले पत्थर कोमल हो जाते थे और मानों सरस प्रसूनों में परिवर्तित हो जाते थे। जिस दिशा में ये जाते थे, तृण वृक्ष आदि सभी झुक जाते थे मानों श्रद्धापूर्वक नमक कर रहे हों। हनुमान कह उठे, 'क्या ये सद्‌गुण के देवता हैं !'

हनुमान द्वारा कहे गए थोड़े से ही शब्दों से ही राम समझ गए कि वे एक सुसंस्कृत व्यक्ति हैं, जिनमें दुर्लभ गुणों का संयोग है—शक्ति, मस्तिष्क की परिपक्वता, विद्वत्ता, दृढ़ता और लौकिक सूझबूझ। वस्तुतः कम्बन् के अनुसार हनुमान 'सद्‌गुण को उसके अकेलेपन से छुटकारा दिलाने के लिए इस संसार में आए थे।' राम ने लक्ष्मण से कहा, 'काव्य जिसे अपने शब्दों के जाल से नहीं बाँध सकता उस पूर्णता ने अथवा रहस्य के जाल से बाँधने वाले आध्यात्मिक ज्ञान ने इस वानर का रूप धारण किया है और पृथ्वी पर अवतार लिया है।'

हनुमान अपने स्वामी वानरराज सुग्रीव के पास गए और उससे राम के उच्च वंश, उनकी त्याग-भावना और वर्तमान दुखद स्थिति के बारे में बतलाया। हनुमान की बातें सुनकर सुग्रीव विचलित हो गए और राम से तुरन्त मिलने की इच्छा प्रगट की। दोनों एक टेढ़े-मेढ़े पहाड़ी रास्ते से नीचे गए और जैसे ही वे एक मोड़ से घूमे उन्होंने राम को कुछ दूर बैठे देखा। राम की आकृति को देखकर सुग्रीव सम्मोहित खड़ा रहा। राम को देर तक एकटक देखने के बाद वह बोला, 'देवताओं के स्वामी मनुष्य का रूप धारण करके आए हैं और मनुष्य बनकर देवताओं के ऊपर मानव जाति की विजय सिद्ध कर दी है।'

राम ने सुग्रीव का मित्र और सहायक के रूप में स्वागत किया। जब उन्होंने

यह जाना कि सुग्रीव के बड़े भाई बाली ने उसकी पत्नी छुड़ा ली है और वह सुग्रीव को सता रहा है, तब उन्होंने तुरन्त बाली को मारने का आश्वासन दिया।

द्वन्द्व-युद्ध

द्वन्द्व-युद्ध प्रारम्भ हुआ और दोनों भाई उग्र रूप से लड़ने लगे। अन्ततः बाली ने सुग्रीव को एक जोरदार घूंसा मारा जो थककर गिर पड़ा। इसी समय पास की झाड़ी से एक बाण आया और बाली के सीने में घुस गया। उसके सीने से एक खून का फव्वारा निकला जो भल-भल करते हुए एक झरने के समान बहने लगा। उसे देखकर सुग्रीव विचलित हो गया और अचेत होकर गिर पड़ा, प्रेम के आँसुओं की धारा बहाते हुए। अत्यधिक खून बहने और धक्के के कारण बाली भी गिर पड़ा। तेज दर्द के कारण बाली क्रोध से फट पड़ा। उसने अपने सीने से वह विशाल बाण निकाल लिया और यह कहते हुए कि 'मैं इसके दो टुकड़े कर डालूंगा' वह खड़ा हो गया। तभी बाण के ऊपर खुदे हुए नाम को पढ़कर उसकी आँखें आश्चर्य से खुली रह गयीं। वह राम का पवित्र नाम था, आदिम मंत्र शब्द जो तीनों लोक को मुक्ति दे सकता था; अनुपम मंत्र जो दिव्य आनन्द प्रदान कर सकता था! अमृत जो युगों से संचित कर्मों को तुरन्त तार सकता था।

बाली का राम पर अभियोग

राम झाड़ी के पीछे से निकलकर आए और वह करुणाजनक दृश्य देखा जिसमें बाली खून बहते घाव सहित पड़ा हुआ था और उसका छोटा भाई सुग्रीव यह न देख सकने के कारण अचेत हो गया था। बाली ने, जो एक महान भक्त और वीर था, राम की सुन्दर आकृति को देखा। अपने प्राणघातक घाव की अपेक्षा उसे इस बात की अधिक चिन्ता थी कि राम सद्गुण से हट गए हैं। राम को सम्बोधित करते हुए वह बोला, 'आप उस पवित्र आत्मा के पुत्र हैं जिसने सत्य के लिए अपनी बलि दे दी, आप भद्र भरत के भाई हैं। आपका जीवन मातृप्रेम और दया का उदाहरण रहा है। यदि कोई दूसरों को बुराई से बचाता है लेकिन खुद बुरा करता है, तो क्या बुराई को बुराई नहीं कहना चाहिए?' बाली का दोषारोपण और अधिक तीव्र हो गया और उसने एक ही स्वर में व्यंग्योक्तियों और कटूक्तियों के सारे प्रकारों को जमा किया जो राम के अनुदार कार्य के लायक थीं और उसने उनमें स्पष्टता, तर्क और बुद्धि से अधिक प्रभाव भर दिया। उसने पूछा, 'क्या मनुस्मृति में यह लिखा है कि जब कोई राक्षस तुम्हारी पत्नी का अपहरण करे, तब एक असम्बन्धित वानरराज को मारना चाहिए? यदि आप अपने को अपयश से आवृत कर लोगे तो यश का आच्छादन धारण करने की योग्यता किसमें है?' और अधिक खून बहने के साथ ही बाली ने सारा संयम तोड़

दिया और जोर-जोर से भलाबुरा कहने लगा, 'शायद अमृत माधुर्यमयी सीता से वियुक्त होकर आप उन्मत्त हो गए। आपने यह कैसा अनर्थ किया है !' राम के राजकुल का उल्लेख करके, जो अपने को सूर्य से अवतीर्ण मानता था, बाली ने कहा, 'शायद क्योंकि आकाश में चलता हुआ चन्द्रमा काला दूषित कलंक धारण करता है, इसीलिए आपने भी सूर्य के वंश पर उसी प्रकार का एक कलंक लगा दिया है जो हमेशा रहेगा। हे वीर, तुमने बाली को नहीं नष्ट किया किन्तु उस मर्यादारेखा को नष्ट किया है जो राज्यकर्त्तव्य को घेर कर रखती है और उसे बचाती है।' बाली के क्रोध की चरमसीमा निम्नलिखित गीत में पहुँच गयी है—

क्या धनुर्विद्या का आविष्कार इसलिए किया गया था
कि तुम अपना बाण मारो, आमने-सामने नहीं,
बल्कि किसी जगह छुपकर
एक शस्त्रहीन व्यक्ति के सीने में !
शर्म शर्म, तुम्हारी पत्नी के लिए जिसे दूसरा ले गया है !
शर्म शर्म, तुम्हारे उज्जवल धनुष के लिए जिसमें तुम्हारे इस काम से कलंक लग गया है।

दिव्यत्व का ज्ञान

यह समझने का विशिष्ट कारण है कि इस गीत के बाद आने वाले कई गीत अन्ध भक्तों के द्वारा कम्ब रामायण में बाली के ठोस दोषारोपण से राम का बचाव करने के लिए बाद में जोड़ दिए गए हैं। कम्बन् के प्रामाणिक अधिकार से रहित ये बचाव के गीत राम के द्वारा बचाव के ऐसे तर्क प्रस्तुत करवाते हैं जो सुरुचिविहीन और अविश्वसनीय हैं। स्वर्गीय रसिकमणि टी० के चिदम्बरनाथ मुदलियर, जिनमें काव्य को समझने की असाधारण प्रतिभा थी और जिनके द्वारा की गयी कम्बन् की प्रेरणादायिनी व्याख्याओं ने इस पुस्तिका के लेखक को अत्यधिक प्रभावित किया है, ठीक ही इन गीतों को नकली बतलाकर अस्वीकार कर दिया है और यह मत व्यक्त किया है कि कम्बन् के राम ने अपने दोष को पूरी तरह मान लिया होगा और झाड़ी के पीछे से मारने के लिए बाली से साहसपूर्वक क्षमा माँगी होगी। अपनी गलती को मान लेने के लिए दिखलाये गए राम के साहस ने राम के दिव्यत्व के विषय में बाली को विश्वस्त कर दिया और इस कारण बाली की नजरों में राम बहुत ऊपर उठ गए। बाली समझ गया कि उसने सुग्रीव को गलत समझकर सताया था। उसने सुग्रीव से राम के दिव्यत्व को समझने और उन्हें अपना पथप्रदर्शक बनाने को कहा। उसने राम से भी सुग्रीव को शरण देने के लिए निवेदन किया।

इसी समय बाली का पुत्र अंगद पहाड़ी की ढलान पर से आँखों में आँसू भरे

दौड़ता हुआ आया और अपने मरणासन्न पिता के ऊपर विलाप करता हुआ गिर पड़ा। कवि कहते हैं कि वह वाली पर जो धरती पर चन्द्रमा के समान पड़ा था, उसी प्रकार गिरा जिस प्रकार आकाश से बिजली गिरती है।

अपने पुत्र की गहन वेदना से वाली विचलित हो गया और उससे कहा कि वह अपनी बचपना भरी आँहें छोड़ दे तथा यह जान ले कि चरम सत्य के अद्वितीय तत्त्व ने पृथ्वी पर पैदल घूमते हुए और हाथों में बाण धारण करके इन्द्रियगम्य रूप धारण किया है। उसने आगे कहा, 'राम एक अमृत हैं, मेरे बेटे, जो हमें जन्म के रोग से छुटकारा दिला देंगे। वे आत्माओं की परिपक्वता पर विचार करते हैं और प्रत्येक के गुणानुरूप गौरव प्रदान करते हैं। उनके पवित्र चरणों को अपने मस्तक पर धारण करके तुम आगे बढ़ सकोगे।' तब राम की ओर देखकर वह बोला, 'अंगद उस आग के समान है जो राक्षसरूपी कपास को जला देगी। मैं इसे तुम्हारे संरक्षण में देता हूँ।' अंगद तुरन्त राम के चरणों में गिर पड़ा और राम ने अपनी सुनहली तलवार उसकी ओर बढ़ाकर कहा, 'इसे धारण करो।' जिस क्षण उन्होंने यह कहा उसी क्षण बाली ने पार्थिव जीवन त्याग दिया और लोकातीत जीवन धारण कर लिया।

दुःखी तारा को समझाना बड़ा मुश्किल हो गया। उसके दुःख को प्रगट करने के लिए कम्बन् संयमित गहनतापूर्ण शब्दों का प्रयोग करते हैं। तारा अपने विलाप में, बाली और वह एक दूसरे के दिल में रह रहे थे इस भ्रम को नष्ट करने के लिए एक अत्यन्त विनाशक तर्क का सहारा लेती है।

हे युद्धप्रिय स्कन्धों के स्वामी,
यदि मैं तुम्हारे दिल में निवास करती होती,
तो उसे भेदने वाला बाण
मेरा भी जीवन सोख लेता;
और यदि तुम्हारा निवास मेरे दिल में होता
तो इस समय भी तुम्हें जीवित रहना चाहिए था।
सच में, हममें से कोई एक दूसरे के दिल में नहीं रहा।

सुंदरकांड

सौन्दर्य सर्ग

कम्बन् सौन्दर्य सर्ग (सुन्दरकांड) का प्रारम्भ सीता की खोज से करते हैं। चारों दिशाओं में वानर अन्वेषक भेजे जाते हैं। हनुमान समुद्र को पार करते हैं और संध्या समय लंका पहुँचते हैं। लंका नगरी का दृश्य बड़ा सुन्दर दिखाई देता है और हनुमान वहाँ के भवनों का सौन्दर्य देखकर आश्चर्य करते हैं।

क्या ये धूप से बने हैं
और बिजलियों से भरे गए हैं,
अथवा पिघले हुए सोने से बने हैं
और मुक्ताओं तथा रत्नों से जटित हैं
ये कहना मुश्किल है कि ये किस चीज के बने हैं।
अरे, ये मीनारें विशाल बादलों को चीर रही हैं
और चन्द्रमा से टकरा रही हैं।

सतीत्व का दीप

हनुमान सीता को ढूँढ़ते हुए एक महल से दूसरे महल में गए, नक्काशीयुक्त खिड़कियों और दरवाजों में से झाँकते हुए; किन्तु सीता कहीं भी नहीं दिखाई दीं। निराश होकर वे नगर के बाहर अशोकवन में गए, एक वृक्ष पर चढ़े और उसके ऊपर बैठ गए। वृक्ष से कुछ ही दूरी पर एक साफ की हुई जगह थी जहां सीता बैठी हुई थीं और तरह-तरह के उदास विचार उनके मन में घूम रहे थे। कोई भी श्यामल पदार्थ, जैसे कि श्याममेघ या लड़कियों की आँखों में लगाया गया कालांजन, उनके मस्तिष्क को व्याकुल कर देता था क्योंकि वह उन्हें राम की याद दिला देता था। राम की राह देखते हुए वे चारों दिशाओं को तकती रहतीं थीं, आशापूर्वक अपनी आँखें घुमाते हुए। आशा की जगह निराशा ले लेती थी क्योंकि उन्हें आश्चर्य होता था कि क्या रावण के द्वारा उनका अपहरण किया जाना राम को पता है ? वे अपने मन में राम के उत्तम गुणों का और उनके साथ प्राप्त अनुभवों का स्मरण किया करती थीं। गंगा के जल में नाव खेने वाले निर्धन

निषाद से वे बोले थे, 'मेरा भाई तुम्हारा भाई है; मैं तुम्हारा साथी हूँ; यह महिला तुम्हारी भी है।' इस मोक्षदायिनी मित्रता की याद करके सीता दुःख से तड़प उठती थीं।

जब सीता इस प्रकार घर की याद की उदास मनोदशा में थीं तभी हनुमान ने उन्हे देखा।

जब हनुमान ने सीता को गहनवेदना की दशा में देखा तब वे सीता के अविचलित सतीत्व, शालीनता और उच्चकुल पर आश्चर्य करने लगे। राम के नेत्रों ने सीता के सौन्दर्य का तभी पान किया था जब वे प्रफुल्ल रहा करतीं थीं। किन्तु अब अपने सतीत्व को अदूषित रखने के लिए गहन तपस्या करने वाली उदास सीता हजारगुना अधिक सुन्दर थीं। हनुमान सोचते हैं, 'दुःख है कि इस भव्य दृश्य को देखना राम के नेत्रों के लिए सम्भव नहीं है।'

इसी समय रावण सीता के सामने आता हैं और उत्तेजनापूर्ण पीड़ा से हनुमान का मस्तिष्क घूमने लगता है।

रावण सीता से कुछ दूर पर नम्रता-पूर्वक संकोच-सहित खड़ा होता है। हनुमान समझ जाते हैं कि रावण अग्नि के निकट जाने से डरता है।

रावण की इच्छाशक्ति दृढ़ है और मस्तिष्क स्थिर, किन्तु सीता की उपस्थिति में उसकी कठोरता काम नहीं करती। वह सीता से कहता है—

तीनों लोकों के नागरिक
मेरे सामने झुकते हैं,
मैं तुम्हारे कदमों में झुक रहा हूँ
तुम्हारे गुलाम की तरह।
उदार बनो और मुझे स्वीकार करो।

जैसे ही वे इन शब्दों को सुनती हैं, सीता की आँखों से खून निकलने लगता है और रावण की ओर बिना देखे हुए ही वे ये शब्द कहती हैं जो क्रोध से परिपूर्ण हैं—

यदि सुमेरु पर्वत को भेदना हो,
यदि आकाश को भी दो टुकड़े कर पार करना हो,
यदि चौदह लोकों को भी नष्ट करना हो,
तो भी यह सब मेरे स्वामी का बाण कर सकता है।
हे विद्वान् मूर्ख,
क्या तुम अपने दसों सिर नष्ट कर लोगे
अनुचित शब्द कहकर ?
तुम्हारे दस सिर और बहुसंख्य कंधे
आकर्षक लक्ष्य हैं

मेरे कुशल धनुर्धारी के लिए अपने बाण चलाने हेतु
और प्रसन्न रणक्रीड़ा हेतु।
सारे वरदान और दीर्घजीवन
जो तुमने पाए हैं तपस्या आदि से,
वे सब तुम्हें मृत्युदेव यम से बचा सकते हैं
किन्तु मेरे वीर के बाण से नहीं।

जब रावण ने ये शब्द सुने, तब उसके क्रोध का आवेग मदन के आवेग से भी ज्यादा हो गया। क्रोध से पागल होकर वह अशोक वन छोड़ अपने महल में चला गया। हनुमान एक वृक्ष की सबसे ऊँची शाखा पर बैठे हुए इस रोमांचक दृश्य को देख रहे थे और प्रसन्न हुए कि सतीत्व का दीप अभी भी निरन्तर जल रहा है।

अब तक आधी रात हो गयी थी और हनुमान ने सोचा कि सीता से मिलने का यही सही समय है। जब वे वृक्ष से नीचे उतरने लगे, तब उन्होंने देखा कि अनेक राक्षसियाँ सीता के चारों ओर घेरा बनाकर बैठी हुई हैं। वे इतनी सजग और चौकस थीं कि यदि सजगता की देवी भी आँख झपका ले तो वे उसे सतर्क कर दें। हनुमान ने अपनी जादुई ताकत का इस्तेमाल किया और उन सबको संमोहित कर दिया जिससे वे सब गहरी नींद में सो गयीं। जो राक्षसियाँ कभी नहीं सोती थीं उन्हें भी सोता हुआ देखकर, सीता ने अपने को बिलकुल अकेला पाया और वे डर और दुःख के वशीभूत हो गयीं। उनके मन में यह सन्देह उत्पन्न हुआ कि क्या राम उन्हें कभी खोज सकेंगे और बचा सकेंगे। अथवा क्या राम ने उन्हे छोड़ देना तय किया है ? अन्ततः सीता ने निश्चय किया कि मर जाना ही उनका कर्त्तव्य है। इस मनोदशा में वे मालती लताओं की घनी झाड़ियों से घिरे हुए एक कुंज के भीतर गयीं। तभी हनुमान समझ गए कि वे क्या करना चाहती हैं, और दौड़कर उनके पास पहुँचे तथा बतलाया कि वे राम के दूत हैं। अविश्वास से भरी हुई सीता को कुछ ऐसी बातें बतलाकर जो राम और सीता ही जानते थे हनुमान ने अपनी प्रामाणिकता का विश्वास दिला दिया।

उन बातों को बतलाकर जिन्होंने सीता को अपने प्रति राम की कोमल भावनाओं का प्रसादपूर्ण साक्ष्य दे दिया होगा, हनुमान ने सीता को एक मुद्रिका दी जिस पर राम का नाम खुदा हुआ था और कहा, 'राम ने मुझसे इसे सावधानी से ले जाने के लिए तथा आपको देने के लिए कहा था।'

मुद्रिका को देखकर सीता भावोद्वेलित हो गईं, उसे सूँघकर अपनी छाती से लगा लिया। 'हे सज्जन' 'सीता ने हनुमान से कहा 'तुमने मुझे जीवनदान दिया है। यदि मेरा मन निष्कलंक निर्दोष है, तो तुम अनन्तकाल तक जीवित रहोगे, अपनी सम्पूर्ण शक्ति के साथ, चौदह लोकों के विनाशकारी प्रलय से भी बच जाओगे और प्रत्येक युग को एक दिन मानकर तुम हमेशा जीवित रहोगे।' सीता

को आश्चर्य था कि इतने छोटे शरीर वाले हनुमान ने समुद्र कैसे पार कर लिया। इस प्रश्न के उत्तर में हनुमान ने अपना विश्वरूप धारण किया। एक क्षणांश में ही वे ऊँचे-ऊँचे होते गए, उनके कंधे ऊपर फैलते गए, यहाँ तक कि वे आकाश की छत तक पहुँच गए, और फिर उन्होंने अपनी आकृति को झुका लिया ताकि अधिक ऊँचे होने पर वे छत से न टकरा जाएँ। इस आश्चर्यजनक प्रदर्शन ने सीता के संदेह का निवारण कर दिया और उन्हें सुरक्षा की भावना प्रदान की। सीता के आदेश पर हनुमान ने अपना मूल रूप धारण कर लिया। तब सीता ने यह कह कर हनुमान की प्रशंसा की, 'क्या यह तुम्हारी शूरता की हँसी उड़ाना नहीं है कि शत्रुतापूर्ण लंका सातों समुद्रों के उस पार स्थित नहीं है जिससे कि तुम अपना साहस सिद्ध कर सको !' इसके बाद एक मनोहर वार्तालाप है जिसमें सीता के मन को आक्रान्त करने वाले और एक के बाद एक बदलते हुए भावों का कम्बन् आरेखन करते हैं। अन्ततः वे हनुमान से कहती हैं, 'मेरे स्वामी से कहना कि मैं एक महीने तक राह देखूँगी और यदि इस समय के भीतर वे मुझे नहीं बचा सके, तो उनसे कहना कि गंगा के किनारे अपने पवित्र हाथों से मेरे अन्तिम संस्कार की क्रियाएँ पूरी कर दें।' 'और भी उन्हें याद दिलाना', सीता ने आगे कहा, 'और भी उन्हें याद दिलाना विवाह के समय की यह प्रतिज्ञा कि 'इस जन्म में मैं कल्पना में भी किसी दूसरी स्त्री का स्पर्श नहीं करूँगा।' सीता को विचलित और पुनराश्वस्त करने वाला उत्तर देकर हनुमान उनसे विदा माँगते हैं। इस अवसर पर सीता अपना चूड़ामणि हनुमान को देती हैं। राम के पास सुरक्षापूर्वक ले जाने के लिए। सीता का आशीर्वाद प्राप्त कर हनुमान अशोक वन से बाहर आते हैं, लंका में आग लगा देते हैं, समुद्र पार करते हैं और राम के पास वापिस जाते हैं।

हनुमान की वापसी

अब कवि राम की ओर प्रकाश फेंकते हैं। सीता की खोज में वानर दलों को भेज कर सुग्रीव राम के साथ ही रहता है, उन्हें भरोसा दिलाते हुए। जब वे अपना नैराश्यपूर्ण संदेह व्यक्त कर रहे थे तभी दक्षिण दिशा में एक प्रकाश चमक उठता है। मानो कि दक्षिण से सूर्य निकल रहा हो, हनुमान प्रगट होते हैं। आने के साथ ही उन्होंने राम के चरणों में प्रणाम नहीं किया, सीता की ओर अपना मुँह किए हुए उन्होंने दण्डवत् प्रणाम किया और सीता की स्तुति करने लगे। 'मैंने देखा है,' उन्होंने घोषणा की, 'अपनी आँखों से सतीत्व का आभूषण समुद्र प्रक्षलित लंकाद्वीप में। हे जगदीश्वर, अपना संदेह और अपना दुख दूर करो।' सीता के पातिव्रत्य के विषय में हनुमान द्वारा दिए गए भव्य वर्णन के द्वारा राम उदात्त भावनाओं से भर जाते हैं। अब उनके लिए कुछ काम नहीं बचा था सीता को मुक्त करने के सिवाय।

युद्धकांड

युद्धकांड अब शुरू होता है लंका के एक दृश्य से। हनुमान द्वारा जलाए जाने के बाद जब लंका भस्म हो गई, तब रावण ने उसे फिर से बनाए जाने का आदेश दिया। सृष्टि को बनाने वाले ब्रह्मा ने वास्तुचित्र तैयार किया और उसके अनुसार स्वर्ग के शिल्पी मय ने बिना समय खोये हुए नगर को फिर से बना दिया। एक बन्दर के द्वारा अपने नगर का विनाश किये जाने से अपमानित रावण ने नगर के चारों ओर घूम-घूम कर देखा कि पुनर्निर्मित नगर उससे भी ज्यादा सुन्दर है जो जल चुका था, उसका गुस्सा दूर हो गया और वह खुश हुआ। नये दरबार भवन में उसने अपनी युद्धसमिति की बैठक बुलवाई।

युद्धसमिति

एक बन्दर की उछलकूद से विनष्ट अपने राजकीय सम्मान के विषय में जब रावण ने सिंहासन पर बैठे-बैठे बतलाया तब सम्पूर्ण सभा पर एक भीतमौन छा गया। सेनापति के बाद सेनापति खड़े हुए और रावण को सलाह दी कि वह उन्हें आक्रमण करने और शत्रु का नाश करने की आज्ञा दें। इसी समय रावण का छोटा भाई कुम्भकर्ण खड़ा हुआ और बोला कि सीता का अपहरण करके रावण ने गलत काम किया है। जहाँ वाल्मीकि का कुम्भकर्ण यह कहता है कि वह सीता को विधवा बनाकर रावण के लिए विवाह करना आसान कर देगा, वहीं कम्बन् का कुम्भकर्ण सही और गलत के बारे में पूरा ज्ञान रखता है, यद्यपि भातृप्रेम के कारण वह गलती करने वाले रावण के लिए अपनी जान देने को तैयार है।

रावण का सबसे छोटा भाई बिलकुल अलग तरीके का था। वह न केवल तीनों भाइयों में सबसे अधिक ज्ञानी था बल्कि सद्गुण का कभी न झुकने वाला वीर था। वह इस प्रकार से बना हुआ था कि सद्गुण के पक्ष में जाति, परिवार और अहं के भी बन्धन तोड़ सकता था। वह खड़ा हुआ और उसने रावण को कुछ खरी-खरी ,बातें सुनाई। 'नगर और तुम्हारा यश जगन्माता सीता के सतीत्व से जले हैं। तुम यह मत समझो कि इन्हें एक बन्दर ने जलाया है', वह बोला। उसने रावण को सलाह दी कि सीता को वापिस भेज दिया जाय। उसके

भाषण से रावण क्रुद्ध हो उठा और अट्टहास करने लगा। धाराप्रवाह भाषण के द्वारा उसने विभीषण के ऊपर घृणा की बौछार कर दी, किन्तु विभीषण, जिसकी जड़ें सत्य में गहरी जम चुकीं थीं, शक्तिशाली हिरण्य की पूर्वकथा बतलाने लगा जो राम के द्वारा नरसिंह-अवतार धारण करके मारा गया था। विभीषण के भावपूर्ण भाषण को सुनकर रावण ने तुरन्त यह निर्णय लिया कि वह राम से मिला हुआ है और इसलिए उसे तुरन्त लंका से निकाल दिया, यह कह कर कि यदि वह एक क्षण भी लंका में रुका तो उसे मार डाला जाएगा। उदास विभीषण ने लंका छोड दी, रावण से यह कहते हुए, 'भाई, मैंने तुम्हें वह सलाह दी जो तुम्हारे हित की थी, किन्तु तुम मेरी बात नहीं सुन रहे हो, मेरे दोष के लिए मुझे क्षमा कर दो।'

विभीषण का समर्पण

चार महात्मा राक्षसों के साथ विभीषण ने समुद्र पार किया और उस स्थान पर आया जहाँ राम की वानर सेना का शिविर था। कुछ बन्दरों ने सोचा कि राक्षसों का एक गुप्तचर हमारे बीच में आ गया है। राम ने अपने मित्रों से सलाह माँगी। हनुमान को छोड़कर सबने दलबदलू विभीषण को स्वीकार करने के प्रस्ताव का विरोध किया। हनुमान ने विभीषण की न्याय-भावना, असीम दया और आत्मिक सद्गुणों की प्रशंसा की। सुग्रीव तथा दूसरे शंकालु वानरों की ओर देखते हुए राम ने कहा, 'हनुमान का कथन और उनके शब्दों का चुनाव व स्पष्टता अद्भुत है। हम चाहे जीतें या हारें, जिएँ या मरें, हमें शरणार्थी का स्वागत कर उसे स्वीकार करना चाहिए। जिस दिन विपत्ति में शरण लेने वाले को मैं अस्वीकार कर दूंगा, वही मेरी मृत्यु का दिन होगा, और जिस दिन शरणार्थी ही के धोखा भरे काम से मैं मर जाऊँगा उस दिन से ही मैं सदा अमर रहूँगा।' राम के मुख के द्वारा समर्पण के उदात्त सिद्धान्त को स्पष्ट करने के इस अवसर का कम्बन् लाभ उठाते हैं, जिसके अनुसार भगवान अपनी असीम दया के वशीभूत होकर समर्पण करने वाले के पापों को पूरी तरह प्रक्षालित कर देते हैं और उसे अपने आनन्दतत्त्व में लीन कर लेते हैं।

राम के आदेश से सुग्रीव विभीषण को लेने जाते हैं। इन दोनों के शुद्ध हृदय एक दूसरे को देखते ही एक दूसरे में मिल जाते हैं और जब गोरे सुग्रीव काले विभीषण को अपने गले लगाते हैं तब अपनी विशिष्ट प्रगल्भता और अनुसन्धान शीलता से कवि कहते हैं कि मानो दिन और रात एक दूसरे से मिल रहे हों।

अतिशय भक्ति से भरा हुआ विभीषण राम के पास जाता है और जैसे ही वह राम को देखता है वैसे ही उनके रूप से मुग्ध हो जाता है। अभी तक विभीषण सद्गुण का निर्गुण तत्त्व के रूप में ध्यान करता रहा था। अब जैसे ही

वह राम को देखता है उसे लगता है कि सद्गुण सगुण भी है। वह आश्चर्य से पूछता है, 'क्या सद्गुण का रूप श्याम है ?' राम विभीषण की असीम भक्ति का बेरोकटोक प्रत्युत्तर देते हैं और उसे अपना भाई स्वीकार कर लेते हैं। वे कहते हैं, 'गुह से मिल कर हम पाँच भाई हो गए थे, बाद में सुग्रीव के साथ हम छह हो गए और, मेरे प्रिय मित्र, तुम्हारे साथ हम सात हो गए। मुझे अमूल्य वन प्रदान करके तुम्हारे पिता यशस्वी दशरथ पुत्रों से भरे-पूरे हो गए हैं।' इस दत्तक-ग्रहण पर वानर सेना बहुत खुश हुई।

यन्त्री नल को समुद्र के ऊपर पुल बनाने का काम दिया गया। सुग्रीव के आदेश से वानर योद्धा सभी दिशाओं में जाते हैं और कोसों दूर से पहाड़ियाँ चट्टानें और पत्थर लाते हैं।

भारत को लंका से जोड़ने वाला पुल तैयार हो गया और राम अपनी सेना के साथ इस पुल पर चलकर लंका पहुँचते हैं। रावण को अन्तिमेत्थम् देने के लिए राम अंगद को भेजते हैं जो वापिस आकर राम से निवेदन करता है, 'वह अपने मन से सीता की इच्छा तब तक नहीं निकालेगा जब तक कि उसका मुकुट-धारी सिर काटकर उसके धड़ से अलग न कर दिया जाए।'

युद्ध का प्रारम्भ

अपरिहार्य युद्ध प्रारंभ होता है। राक्षसों के दल युद्धभूमि में एकत्रित होने लगे, और वानरों के दल भी। जब वे एक दूसरे से मुठभेड़ की तैयारी कर रहे थे तभी रावण सामने आया। रावण के रथ के चारों ओर बड़े-बड़े राक्षस थे जो चमकीले शस्त्र धारण किए हुए थे और जोर-जोर से युद्ध के नारे लगा रहे थे।

राम खुश होते हैं कि रावण स्वयं मोर्चे पर सामने आया है और उससे आमना-सामना करने का मौका मिल गया है। राम के कंधे, जो सीता की याद में दुबले हो गए थे, अब खुशी से फूल उठे।

लड़ाई शुरू होती है। रावण अपने रथ में चढ़कर लड़ता है किन्तु राम हनुमान के कन्धों पर चढ़कर लड़ते हैं। रावण के बाणों को राम के बाण छिन्न-भिन्न कर देते हैं। राम के भयंकर बाणों को न सहकर राक्षससेना चारों दिशाओं में इधर-उधर भाग जाती है, रावण को अकेले अपने रथ में छोड़कर। राम कुछ भारी तलवार—जैसे बाण मारते हैं जो रावण के रथ के जोड़ों को तोड़ देते हैं और वहटुकड़े- टुकड़े हो जाता है। खुली धरती पर खड़ा हुआ रावण वीरतापूर्वक लड़ता रहता है। एक बाण उसका धनुष तोड़ देता है दूसरा उसकी तलवार। तीसरा रावण के सिर के मुकुट को गिरा देता है और उसे घृणापूर्वक उछाल देता है। यह रावण के जीवन का सबसे अधिक अपमानपूर्ण क्षण था। वह नीचा सिर किए खड़ा रहता है, उसकी आँखें नीचे देखती रहती हैं, पैरों के अंगूठे जमीन

कुरेदते हैं और उसके खाली हाथ निर्जीव होकर नीचे लटकते रहते हैं उस निष्प्राण वट-वृक्ष के समान जिसकी जटाएँ बलहीन होकर जमीन पर लटक रही हों।

राम रावण की इस दुरवस्था का लाभ नहीं उठाते। दयावश वे उदारता-पूर्वक रावण का जीवन बचा देते हैं और रावण से दूसरे दिन फिर लड़ाई में आने को कहते हैं। रावण लंका में वापिस जाता है और बिस्तर में लेटकर अपनी दुर्दशा के विषय में सोचता है। वह इस बात की परवाह नहीं करता कि उसके शत्रु उसके ऊपर हँसेंगे किन्तु यह सोचकर कि लाल ओठों वाली सीता उसकी पराजय पर हँसेगी वह शर्म से पीला पड़ जाता है।

तब रावण कुम्भकर्ण को बुलाता है, उसे अपनी पराजय के विषय में बताता है और यह इच्छा प्रगट करता है कि वह युद्धभूमि में जाकर शत्रु का नाश कर दे। कुम्भकर्ण यह सुझाव देता है कि रावण सीता को वापिस कर दे और राम के सामने आत्मसमर्पण कर दे। इससे रावण क्रुद्ध हो उठता है और गुस्से में उठकर खड़ा हो जाता है तथा यह आदेश देता है कि उसका रथदल बुलाया जावे जिससे वह स्वयं मोर्चे पर जाकर आखिरी दम तक शत्रु से लड़ सके। यह देखकर कुम्भकर्ण दाहिने हाथ में अपना विशाल त्रिशूल लेता है और कहता है, 'एक शब्द और फिर मेरी बात पूरी हो जाएगी। भाग्य मुझे गर्दन पकड़कर के आगे ढकेल रहा है मैं मर जाऊँगा और यदि मैं मर जाऊँ, मेरे स्वामी, तो सीता को वापस दे देना। यह विजय ही होगी।' उसकी विदा अत्यन्त करुणापूर्ण है। वह कहता है, 'मेरे राजा, मुझे मेरे पापों के लिए क्षमा कर दो। तुम्हारा चेहरा फिर से देखना मेरे भाग्य में नहीं है। बिदा!'

निष्ठाओं में संघर्ष

कहानी कहने की अनुपम क्षमता रखने वाले कम्बन् हमें राम के युद्ध शिविर में ले चलते हैं और राम की आँखों के जरिए विभीषण के आचरण को देखने की सामर्थ्य प्रदान करते हैं। जब कुम्भकर्ण का रथ युद्धभूमि में आता है तब राम विभीषण से कहते हैं, 'उसकी आकृति तो तुम्हारे बड़े भाई से भी ज्यादा सुन्दर है। वह कौन है?' राम बिना हिचकिचाए अपने विरोधी के व्यक्तित्व की भी प्रशंसा करते हैं। वे आगे बोलते हैं, 'कई दिनों में आँखें एक बार में ही उसे कंधे-से-कंधे तक देख पाएंगी। और बीच का शरीर! क्या यह दो पैरों वाला कोई पर्वत है? वह युद्ध के लिए उतावला मनुष्य तो नहीं मालूम देता। वह कौन है?' विभीषण राम से कुम्भकर्ण की अच्छी बातों के विषय में बतलाता हैं कि किस प्रकार उसने सीता-हरण के कारण रावण को भला-बुरा कहा था। वह यह भी बतलाता है कि कुम्भकर्ण का रावण और विभीषण पर एक समान प्रेम है। राम जो इस प्रतिवेदन को सुनकर प्रसन्न होते हैं, विभीषण से कुम्भकर्ण के पास जाने

को कहते हैं और उसे अपने पक्ष में शामिल होने के लिए मनाने को कहते हैं। तदनुसार विभीषण कुम्भकर्ण के पास जाता है और उसे प्रणाम करता है। कुम्भकर्ण उसे गले लगाता है, और कहता है, 'मैं खुश था कि राम के पक्ष में जाने के बाद तुम तो एक ऐसे भाई हो जो इस सर्वनाश से बच जाओगे। बतलाओ क्यों तुमने मेरी आशा तोड़ दी और चकराई हुई बुद्धिवाले के समान हमारे पक्ष में वापस आ गए। अपनी महान् तपस्या के द्वारा तुमने न्याय की भावना, सद्गुण की स्थिति का ज्ञान और अमर जीवन प्राप्त कर लिया है। फिर भी, हे उदात्त-हृदय, तुम राक्षस जाति की नीचता से अपने को छुड़ाने में असमर्थ हो ?' कुम्भकर्ण ये शब्द इस गलतफहमी के कारण कहता है कि विभीषण ने राम को धोखा दिया है और रावण के पक्ष में वापस आ गया है। वह आगे बोलता है, 'सर्वेश्वर वहाँ खड़े हैं, अपने युद्धोन्मुख धनुष को लिए हुए; और सब उनके पीछे खड़े हैं; मृत्यु और भाग्य हमें मारने के लिए कटिबद्ध है; तुमने राम को क्यों छोड़ा और क्यों उन लोगों के पास वापस आए जो हार चुके हैं ?' विभीषण उत्तर देता है, 'देवेश ने स्वयं मुझे प्रेमपूर्वक एक निवेदन करने तुम्हारे पास भेजा है। भाई, तुम कभी भी सद्गुण के विरुद्ध नहीं रहे और इसलिए तुम मेरे साथ आओ तथा राम से मिल जाओ।' यह शब्द कहते हुए विभीषण कुम्भकर्ण के पैरों पर गिर पड़ता है और उससे दल बदलने की प्रार्थना करता है। कुम्भकर्ण जानता है कि, विभीषण से अलग, वह जीवन मूल्यों के निम्नतर स्तर पर विद्यमान है और इसलिए रावण को छोड़ना उसके लिए कायरता और बेईमानी होगी तथा एकाएक उच्चतर सिद्धान्तों के लिए लड़ना भी। साथ ही कुम्भकर्ण विभीषण के उच्च आदर्श और उसके उद्देश्य की प्रामाणिकता को भी समझ जाता है। इसलिए वह सोचता है कि सद्गुण की स्थापना के लिए रावण के विरुद्ध युद्ध करना उसके मन के मुताबिक होगा।

जब कुम्भकर्ण रावण के महान गुणों के विषय में सोचता है, तब वह उनकी प्रशंसा किए बिना नहीं रहता। इन गुणों की याद करके कुम्भकर्ण भावुकतापूर्वक कहता है—

वह एक वीर है, अनुपम, शत्रुरहित,
उसके विशाल कंधों ने शिव के बृहत् पर्वत को उठाया था।
क्या यह उचित है कि उन कंधों से ही
बँधा हुआ पराजित यम के पाश से,
वह यम के राज्य में प्रवेश करे
अकेला अंगरक्षक विहीन ?

कुम्भकर्ण निष्ठाओं के संघर्ष से दुविधा में पड़ जाता है। अब वह अपना ध्यान विभीषण के कल्याण की ओर देता है जिससे उसका इतना ही गहरा प्रेम है

जितना रावण से। वह उससे कहता है, 'यहां एक क्षण भी मत रुको। वापिस जाओ और राम से मित्रता करो। जो कुछ भी होना है वह भाग्य के द्वारा निश्चित समय पर होगा। जो विनाश के लिए विहित है वह सावधानीपूर्वक संरक्षण करने के उपरान्त भी नष्ट होगा ही। तुमसे अधिक स्पष्टमति और ज्ञानी दूसरा कौन है ? बिना पश्चात्ताप किए हुए ही वापस चले जाओ। हमारे ऊपर करुणा मत करो, अमर विभीषण !' यह कहकर वह उसे अपनी भुजाओं में लेकर छाती से लगाता है; वह खड़ा का खड़ा ही रहता है; आहें पर आहें भरता है और देर तक उसकी ओर एकटक देखने के बाद कहता है, 'आज से हमारे भ्रातृबन्धन टूट गए।' इन शब्दों को सुनकर, विभीषण कुम्भकर्ण के पैरों पर गिर पड़ता है, उसके शरीर के साथ-साथ आत्मा भी सकुचित हो जाती है, यह समझकर कि आगे विवाद करने से कोई लाभ नहीं, वह उठता है और जाने लगता है, उसके चारों ओर के राक्षस योद्धा उसे हाथ उठाकर प्रणाम करते हैं। चलते-चलते हम यह जान लें कि वाल्मीकि की रामायण में इन दोनों भाइयों का कभी आमना-सामना नहीं होता, यह आमना-सामना तो कम्बन् के बौद्धिक साहस और नाटकीय अन्वेषण के मेल से ही उत्पन्न है।

विभीषण राम के शिविर में जाता है और कुम्भकर्ण के साथ जो कुछ घटित हुआ वह उन्हें बतलाता है। राम जो कुछ अपरिहार्य है उसे स्वीकार कर लेते हैं और लक्ष्मण को कुम्भकर्ण से लड़ने की अनुमति प्रदान करते हैं।

कुम्भकर्ण की अन्तिम इच्छा

इन दोनों सुप्रसिद्ध योद्धाओं के द्वन्द्वयुद्ध को देखने के लिए हजारों लोग इकट्ठे हो गए। कुम्भकर्ण के सामने लड़ने के लिए कोई उद्देश्य नहीं था, उसका कर्त्तव्य केवल लड़ना और मरना था। किन्तु लक्ष्मण एक महान उद्देश्य से प्रेरित थे और इसलिए वे युद्ध के उत्साह से भरे हुए थे। प्रारम्भिक वाक्युद्ध के बाद जो सूझबूझ व्यंग्य और हाजिर-जवाबी से भरा हुआ था, एक भयंकर लम्बी लड़ाई शुरू हुई प्रत्येक दूसरे से हार नहीं मानता था और दोनों थक गए। आखिरकार राम बीच में पड़े, अपने बाणों से कुम्भकर्ण की सेना को नष्ट कर दिया और कुम्भकर्ण को चकरा दिया। युद्धभूमि में सिन्दूरी रक्त की सरिता उद्भूत हुई; कुम्भकर्ण के रथों, हाथियों, घोड़ों और सैनिकों को बहाती हुई। अब अपने सुन्दर स्कन्धों और धनुष के साथ राम कुम्भकर्ण के सामने आए जो छिन्न-भिन्न अंगों सहित जमीन पर पड़ा हुआ था। राम को सम्बोधित करके कुम्भकर्ण विभीषण के लिए अपनी मर्मस्पर्शी प्रार्थना करता है, 'मेरा छोटा भाई न्याय के व्यापक तत्त्व में स्थित है जो ऋत से उद्भूत है। वह वर्ण और जाति के नीच तरीकों को नहीं जानता। हे नरेशवेशधारी ईश्वर, उसने आपकी शरण ली है और मैं आपसे उसे आश्रय देने

की प्रार्थना करता हूँ। निर्दय रावण विभीषण को कोई जगह नहीं देगा, यद्यपि वह इसका भाई है। वह इसे देखते ही मार डालेगा। मेरे स्वामी, कृपया मुझे यह वरदान दें कि युद्ध में पूरे समय वह आपकी या आपके भाई की या हनुमान की रक्षा में रहेगा। इस प्रार्थना के साथ ही, जो राम ने मान ली, उस कुम्भकर्ण ने अंतिम साँस ली जो कम्बन् की अमर सृष्टि है और जो उदात्त वीरता, न्याय की भव्य भावना और हृदय की कोमलता से परिपूर्ण है; वाल्मीकि के विलक्षण कुम्भकर्ण के बिलकुल विपरीत। विभीषण के लिए हमारी प्रशंसा है तो कुम्भकर्ण के लिए हमारे आँसू।

रावण का शोक

कुम्भकर्ण की मृत्यु के समाचार ने रावण को शोक में डुबा दिया। रावण का पुत्र क्रुद्ध आदिकाय कुम्भकर्ण की मौत का बदला लेने मोर्चे पर जाता है उसके पीछे-पीछे एक विशाल सेना भी जाती है। लक्ष्मण के साथ लड़ते हुए आदिकाय का सिर धड़ से उड़ जाता है।

इस अपमानपूर्ण पराजय का समाचार संदेश-वाहक रावण के पास ले जाते हैं। आदिकाय की मृत्यु से रावण के मन में परस्पर विरोधी भावनाएँ उत्पन्न होती हैं—

हिचकियाँ उसके सिर को ऊँचा करती हैं,
शर्म उसे नीचे झुकाती है,
मृतकों के प्रति करुणा उसकी वीरता को जगाती है,
क्रोधावेग और दुःख रावण के मन को ग्रस्त कर लेते हैं,
जो खड़ा होता है, आँखों से आँसू बहाते हुए,
उस समुद्र के समान जिसकी एक दूसरे से मिलती हुई लहरें
आगे-आगे बढ़ती जाती हैं किनारे की ओर,
और फिर लौटतीं हैं पीछे-पीछे भीतर की तरफ।
वह सोचता है कि पृथ्वी को ऊपर उछाल दे,
वह सोचता है कि स्वर्ग को नीचे खींच ले,
वह सोचता है कि एक जोरदार लात मारे
दुनिया की सारी जिन्दा चीजों को,
वह सोचता है कि दो टुकड़े कर दे
उन सबको जिनका नाम है स्त्री।

और अधिक शोक

रावण की उन्मत्तता से उसके आसपास के सभी लोग भीत हो जाते हैं।

नाटकीयता के सर्वथा-सफल ज्ञान और मनोविज्ञान की श्रेष्ठ जानकारी रखने वाले कम्बन् इस अवसर पर शोक सन्तप्त रानी को वहाँ लाते हैं। वह युद्ध में मारे गए आदिकाय की माँ है। पुत्र की मृत्यु से उत्पन्न उसका गहन शोक क्रुद्ध परन्तु अपराधी रावण को अभियुक्त बनाता है। वह एक उच्च वंश की महिला है जो राजपरम्परा में पली हुई है। रावण भी उसे सम्मान की दृष्टि से देखता है। वह अपने हाथों से बार-बार अपनी छाती पीटती हुई आती है। वह रावण के पैरों में गिर पड़ती हैं और चीखती है—

ध्यान दो, क्या तुम उस पर ध्यान दे सकते हो जो सुनते हो ?
सुनो, क्या तुम उसे सुनोगे जो मैं तुम्हें कहूंगी ?
दिखलाओ, क्या तुम दिखलाओगे मुझे
मेरा प्यारा बेटा
जो था मेरी आँखों का तारा।

रानी के महत्तर शोक के सामने रावण का सारा मुखरित क्रोध शान्त और मूक हो गया। रानी रावण को सीता के लालच के पागलपन के लिए दोषी ठहराती है और चेतावनी देती है, 'सीता के कारण होने वाली आपत्तियाँ कम नहीं हैं।' जब वह इस प्रकार से विलाप कर रही थी तभी रावण की दासियाँ स्वर्ग की अप्सराएँ उर्वशी और मेनका रानी को अपने हाथों से उठाकर राजमहल में भीतर ले जाती हैं।

तब रावण अपने सबसे अधिक वीर पुत्र इन्द्रजित् को मोर्चे पर भेजता है। वह एक रहस्यमय शस्त्र ब्रह्मास्त्र का प्रयोग करता है जो शत्रु पर जहरीली गैस छोड़कर अपने मालिक के पास वापिस आ सकता था। उसने अपना ब्रह्मास्त्र आधीरात के समय भेजा जब राम लक्ष्मण और उनकी सेना गहरी नींद में थे। जहरीली गैस ने उन सबको बेहोश कर दिया और वे मृतक जैसे पड़े रहे। इन्द्रजित् खुशी-खुशी अपने महल में गया और सो गया। जाम्बवान् की सलाह पर हनुमान संजीवनी पर्वत पर दौड़े गए, उसे उखाड़ लिया और लेकर आ गए। पर्वत की औषधियों की गंध सूँघकर राम लक्ष्मण और सेना सचेत हो गए। जब राम की मूर्च्छा दूर हुई, तब उन्होंने विभीषण का चिन्तामग्न चेहरा देखा और उससे प्रश्न किया। विभीषण ने समझाया कि किस प्रकार हनुमान के प्रयत्नों से राम, लक्ष्मण और सेना को होश में लाया गया। तुरन्त राम ने कृतज्ञतापूर्वक हनुमान को गले लगा लिया।

सद्गुण की विजय

दूसरे दिन इन्द्रजित् को मालूम हुआ कि उसकी चालाकी बेकाम हो गई है। रावण के द्वारा प्रेरित किए जाने पर उसने भयंकर युद्ध किया जिसमें लक्ष्मण ने

एक अर्धचन्द्राकार बाण के द्वारा उसका सिर काट लिया। उसकी मृत्यु के समाचार ने रावण को अत्यधिक विक्षुब्ध कर दिया।

रावण को ऐसा लगा कि उसकी सारी विपत्ति के मूल में सीता है और क्रोधावेग में वह सीता को मारने का निर्णय लेता है और अशोक वन की ओर जाता है। महोदर उसे रोकता है और उसे बतलाता है कि यदि वह सीता को मार डालेगा तो हमेशा के लिए बदनाम हो जाएगा। वह उसके दाक्षिण्य और यश के आन्तरिक प्रेम की दुहाई देता है और उसे इस उन्मत्तता भरे काम से वापिस लौटा देता है।

रावण के दुख की उन्मत्तता अब युद्ध की उन्मत्तता में बदल जाती है। राम से मुठभेड़ होने पर वह अद्भुत वीरता के साथ लड़ता है। परन्तु राम का बाण उसकी गर्दन काट देता है और उसका सिर जमीन पर गिरा देता है। राम का शौर्य और सद्गुण विजयी होता है। बन्दिनी सीता छुड़ाई जाती हैं। विभीषण मृत राक्षसों का अन्तिम संस्कार करता है।

विजयी योद्धा अयोध्या की ओर विभीषण, सुग्रीव और हनुमान के साथ रवाना होते हैं।

शत्रुघ्न का एकाकी वचन

इसी बीच चौदह उत्सुकता भरे वर्षों तक प्रतिनिधि के रूप में राज्य-कार्य चलाने वाले भरत प्रतिदिन राम के आगमन हेतु दक्षिण दिशा में देखते हैं। आज चौदहवाँ साल समाप्त हो रहा है। भरत एक ऊँची मीनार पर चढ़ते हैं और दक्षिण दिशा की ओर देखते हैं, किन्तु राम के आने का कोई चिह्न नहीं दिखाई देता। निराश होकर वे जलती हुई आग में कूदकर मर जाने की अपनी प्रतिज्ञा पूरी करने का निर्णय लेते हैं। उनके आदेश से उनके नौकर एक विशाल अग्नि प्रज्ज्वलित करते हैं। भरत ऋषियों और नागरिकों को बुलवाते हैं और उनसे दृढ़तापूर्वक कहते हैं कि निश्चित समय के बाद वे एक क्षण भी जिन्दा नहीं रहेंगे। उन्हें मनाने के सारे प्रयत्न निष्फल हो जाते हैं। उसी समय भरत के छोटे भाई शत्रुघ्न वहाँ आते हैं। भरत उनसे कहते हैं, 'आज निश्चित किया हुआ दिन है और राम वापिस आने में असफल हुए हैं। आत्मबलिदान के पहले मैं तुमसे एक प्रार्थना करता हूँ। राम के आने तक तुम इस राज्य पर शासन करना और फिर उन्हें सौंप देना।'

जब शत्रुघ्न इन उद्वेजक शब्दों को सुनते हैं, तब वे आत्म-घृणा से भर जाते हैं। वे एक मौन पात्र हैं जो पूरी कम्बरामायण में केवल एक बार बोलते हैं और जब वे बोलते हैं इस समय तब कम्बन् अपनी सारी लयात्मक मधुरता उनके वचन में भर देते हैं। उनके वचन का अर्थानुवाद निम्नलिखित है, किन्तु लय-विहीन—

एक भाई वह है जो उनका संरक्षक बनकर गया
जिन्होंने वसुधा-दासी को छोड़कर जंगल में जाकर राज्य किया,
वह भी एक भाई है जो अपना प्रिय जीवन छोड़ देने पर तुला है,
क्योंकि जो गए थे वे समय पर वापिस नहीं आए।
अलग-थलग एक अनासक्त दर्शक के समान
क्या मुझे बेशर्म होकर इस राज्य पर शासन करना पड़ेगा।
मधुर है सचमुच यह उत्फुल्ल प्रभुता।

इस कविता के मूल की लयात्मक रचना इस प्रकार सुयोजित है कि प्रत्येक लय और अनुप्रास का आघात वहीं पड़ता है जहाँ भावनाओं का आघात है। यदि हम दो आरेख खीचें, एक में शत्रुघ्न के वचन की भावनात्मक गहनताओं को रेखांकित करते हुए और दूसरे में शब्दों की, तो इन दोनों में इतना पूर्ण सामंजस्य होगा, गहराई से गहराई और ऊँचाई से ऊँचाई मिलाते हुए, कि तमिल का मूल गीत ठीक ही काव्यमय उपलब्धि का एक आश्चर्य माना जाता है।

राज्याभिषेक

अयोध्या के नागरिक शत्रुघ्न की इस करुणामयी स्थिति के और भरत के दृढ़ अविचलित निश्चय के द्वारा चक्कर में पड़ जाते हैं। इसी क्षण वहाँ पर हनुमान दौड़ते हुए चिल्लाते हुए आते हैं, 'राम आ रहे हैं।' अपने हाथों से वे उस विशाल अग्नि को बुझा देते हैं, अपने हाथों से तालियाँ बजाते हैं और खुशी से नाचते हैं। राम के आगमन के शुभ समाचार से भरत हर्षोन्मत्त हो जाते हैं वे पागल जैसा काम करने लगते हैं। वे अपने चारों ओर के लोगों को प्रणाम करते हैं, वे अपने नौकर-नौकरानियों को प्रणाम करते हैं, वे स्वयं अपने को प्रणाम करते हैं। उनका आनन्द उन्हें इतना मदमस्त कर देता है कि कवि यह विचार व्यक्त करते हैं—

प्रेम नामक यह वस्तु
निश्चय ही
मद्य का अर्क है।

कुछ ही देर में विभीषण सुग्रीव और वानर सेना के साथ राम लक्ष्मण और सीता आते हैं। सारी अयोध्या आनन्दमग्न हो जाती है। वाद्य-संगीत के साथ राम का राज्याभिषेक होता है।

उपसंहार

दस हजार से अधिक पद्यों वाले कम्बन् के महान काव्य के साथ इस छोटी सी पुस्तिका में कठिनाई से ही न्याय किया जा सकता है। पूरे महाकाव्य में वे उस व्यक्ति के आत्मविश्वास और आत्मसमर्पण के साथ बोलते हैं जिसने जीवन के नियामक केन्द्र का पता पा लिया है। उदाहरणार्थ' हिरण्यवादै को लें जिसमें वे एक गहन मौलिक नाटकीय स्थिति का निर्माण करते हैं। इस दृश्य में ईश्वर के सर्जक रूप ब्रह्मा चरमसत्य विष्णु के सामने आते हैं और उनसे ब्रह्म-संवाद करते हैं। (हिरण्य के पुत्र) प्रह्लाद के आह्वान पर ईश्वर ब्रह्माण्ड को फोड़कर और आकाश की छत को तोड़कर अविश्वासी हिरण्य के सामने सिंह के सिर वाले मानव रूप में धरा पर अवतीर्ण होते हैं तथा लाल नाखूनों और दाँतों से उसे मार डालते हैं। जब नरसिंह अनन्त क्रोध से गर्जते रहते हैं, तब कम्बन्, भव्य कलात्मकता और हास्य वृत्ति के साथ, विश्व के सिंह को मनाने के दृश्य में ब्रह्मा को सामने लाते हैं। प्रेममय व्यंग्य से संमिश्र प्रगाढ़ भक्ति की भावना से ब्रह्मा बोलते है—

अपने को इस रूप में अवक्षिप्त करके,
हे देवाधिदेव,
आपने यह सिद्ध कर दिया
कि आपने अपने को बनाया होगा !
किन्तु स्वयं अपने को बनाकर,
मेरे स्वामी
क्या आपने मेरे अधिकार क्षेत्र में दखल नहीं दिया है
और निष्प्रयोजन कर दिया प्रयोजन मुझे बनाने का
बनाने के लिए असंख्य आकृतियाँ।

ब्रह्मा की इस चुटीली शिकायत में कि सर्वशक्तिमान् को, जो अधिकार क्षेत्र बाँट सकते हैं, उसमें दखल देने का अधिकार नहीं है, तर्क की अपेक्षा भक्ति अधिक है। किन्तु ब्रह्मा के द्वारा अपने प्रमुख पर लगाए गए निम्नलिखित अभियोग में सत्यता है—

असंख्य तारे और ग्रह
निलम्बित है तुम्हारे आदिमतत्त्व में
महासागर में अनिलम्बित बुद्बुदों के समान;
आपके है असंख्य रूप
किन्तु अफसोस, इस एकाकी रूप को धारण करके
क्या अपने अनावश्यक रूप से नहीं बनाई
एक संकुचित सीमा
अपने अनन्त बहुत्व की।

ईश्वर की असीमता और उनके अवतार की सीमा के बीच की असंगति बतलाकर ब्रह्मा ईश्वर के अन्तर्भाव और ईश्वर के सर्वव्यापकत्व के बीच की पहेली व्यक्त करते हैं—

आपसे अलग मेरा कोई अस्तित्व नहीं है,
आपकी महिमा के बिना मैं न जीवन बना सकता हूं न पदार्थ,
न ही मेरा अस्तित्व है पहले या बाद में,
मैं एक सुनार के समान हूँ
आपके हिरण्यतत्त्व में उत्पन्न
उस तत्त्व को आकार देते हुए
आपकी महिमा से।

इस प्रकार से कम्बन् अपने सृष्टिकर्ता के साथ अध्यात्म तर्क करते हैं एक कविताओं की लम्बी शृंखला में जो अपने दर्शन की सम्पन्नता और प्रगल्भता में, सम्मानपूर्ण व्यंग्य और करुणा के विस्तार में तथा अपने काव्य और नाटकीयता की व्यापिनी भव्यता में संसार के सर्वोत्तम साहित्य से बराबरी कर सकती हैं। अद्वैत दर्शन का मेल उन लोगों की बुद्धि को चकरा देता है जो सापेक्षता की इस दुनिया में रहते हैं, किन्तु कम्बन् की कवि-वृत्ति इस बुद्धि भ्रम को नाटकीय और ठोस रूप देते हुए, इसे स्वीकार करती है और इसे ही अद्वैत सत्य के निश्चित प्रमाण के रूप में प्रयुक्त करती है।

कम्बन् के द्वारा प्राप्त सफलता जो वे कहते हैं उसके कारण इतनी ज्यादा नहीं है जितनी कि वे किस प्रकार कहते हैं। उनका प्रत्येक शब्द उनकी मनवाने की शक्ति का केन्द्र विन्दु है जिसमें उनका सजीव विश्वास मानव-स्वर के स्पन्दनों में रूपान्तरित हो गया है। और जो इन स्पन्दनों का अनुभव करना चाहते हैं, वे कम्बन् के मूल गीतों को सुनें, न कि अनुवादक के क्षीण और अनुत्पादक स्पन्दनों को।

कम्बन् के लिए जीवन एक मूर्ख द्वारा कही गई कहानी नहीं है, कोलाहल और आवेग से पूर्ण किन्तु निरर्थक। उनके लिए जीवन सार्थकता, नियम और

गौरव से भरा-पूरा है। सभी सजीव और निर्जीव पदार्थों के प्रति असीम सहानुभूति ही कम्बन् की कला का स्रोत है। उनकी दृष्टि में जीवन सांसारिक यात्रा का एक अस्थायी किन्तु आवश्यक पड़ाव है और पार्थिव जीवन की घटनाओं को वे पूर्व-जन्म के कारणों का कार्य तथा मरणोत्तर जीवन का कारण समझते हैं। इसलिए वे जीवन में गहरे-गहरे जाते हैं, भूतकालीन अनन्तता को गहरे-गहरे खोदते हैं और भविष्यकालीन अनन्तता को गहरे-गहरे देखते हैं। यह समझकर कि मनुष्य कालविहीन अनन्तता का एक अंश है। यह बात ही उन्हें जीवन की छायावलि को एकटक देखने, जीवन के विभिन्न खंडों को सामंजस्य में लाने तथा एक गहन आशावाद व अन्तर्दृष्टि के प्रकाश द्वारा इन सबको समझने की सामर्थ्य प्रदान करती है। यही दृष्टि कम्बन् को स्थिरता प्रदान करती है और जो इमरसन ने प्लेटों के विषय में कहा था वही हम कम्बन् के विषय में कह सकते हैं कि अपनी सूर्यसदृश्य केन्द्रीयता के द्वारा उन्हें एक निश्कलंक विश्वास प्राप्त था।

इसका यह मतलब नहीं कि कम्बन् एक बोझिल आध्यात्मिक कवि अथवा धार्मिक बर्तनों के एक प्रचारक फेरीवाले हैं। उनकी जड़ें पात्र और परिस्थिति के वास्तविक संसार में हैं और उनके महाकाव्य के कदमों के भीतर जीवन और प्रकृति की वास्तविकताएँ आ जाती हैं। एक तप्त मरुस्थल की शुष्कता का वर्णन करते समय वे उसकी तुलना उस रागविहीनता से कर सकते हैं जो एक साधारण वेश्या और जीवनमुक्ति हेतु प्रयत्नशील तपस्वी की विशेषता है। समुद्र के ऊपर पुल बनाए जाने का वर्णन करते समय वे ललित चलचित्रात्मक विवरण देकर एक बन्दर के द्वारा तीन पहाड़ियाँ एक साथ ले जाए जाने के करतब का वर्णन करते हैं—एक उसके पैरों के नीचे लुढ़कती रहती है, दूसरी उसके ऊपर उठे हुए हाथों में है और तीसरी उसकी पूँछ में फँसी है। तात्कालिकता की देन के साथ और वैयक्तिक संसर्ग की भावना से वे एक सौ युद्धों का वर्णन कर सकते हैं, हर एक दूसरे से अलग ढंग से कल्पित और वर्णित, रोमांच, कुतूहल और तीव्र गति से परिपूर्ण। मानव हृदय के समीक्षक के रूप में वे मानवीय क्रिया-कलाप के गूढ़तम निर्झरों को भी प्रकट कर सकते हैं। महाकाव्य की कठोरता को वे नाटक के लचीलेपन से निराकृत कर सकते हैं और दोनों में अपनी गीतमयी गहनता की छवि भर सकते हैं।

वे जो कुछ भी करते हैं, पाठक में महत्वपूर्ण बातों के साथ भावनात्मक निकटता की अनुभूति बनाये रखने में समर्थ रहते हैं। वे अपनी रामायण के शुद्धिकारक जल में डुबकी लगाने और उबरने के लिए पाठक को प्रेरित करते हैं उष्णतर आदर्श के साथ, सद्गुण को धारण करने में व्यग्र व्यक्तिगत भाग लेने की अनुभूति के साथ, सत्यम् शिवम् सुन्दरम् की तीक्ष्णतर भावनाओं के साथ, चरम प्रश्न पूछने के महत्तर साहस और उन्हें हल करने के सुगमतर विश्वास के साथ।

और ये सब वे प्राप्त करते हैं अपनी कविता की महान देन के द्वारा। कम्बन् की लय में एक अनुपम पूर्णता, विविधता और पर्याप्तता है। वे अपनी स्वर और व्यंजन ध्वनियों को इतने कौशल और जादू के समान प्रयुक्त करते हैं कि वे किसी भी दशा और भावना का स्वर्गिक रूप दिखलाती हैं। और उनके लयात्मक आविष्कार पाठक के वाचाल मस्तिष्क को मूक करने तथा उसे कवि का सन्देश ग्रहण करवाने की क्षमता रखते हैं, व्यक्तिगत इच्छा के दबाव से अनाकृष्ट। इस कौशल में श्रमविहीन स्वयंस्फूर्तता है, न कि काव्य रचना की शब्दयोजना-पूर्ण पीड़ा। सृष्टि के पीछे छिपे हुए किसी गहन अदम्य उद्देश्य का वर्णन करते समय अथवा अस्तित्व के अन्तःकक्षों की एक झलक बतलाते समय उनकी लय प्रभावोत्पादक रूप से मनन के क्षण को लम्बा कर देती है। सचमुच ऐसा है कम्बन् के काव्य का इत्र कि तमिलजनों की सर्वसम्मति से कम्बन् को ठीक ही माना गया है कविचक्रवर्ती।

संदर्भग्रंथ सूची

कम्बन् सम्बन्धी पुस्तकें—तमिल में

१. अशोकवनम्—प्रो. ए. मुथुशिवम्
२. उंगल कम्बन्—संगोष्ठी
३. कम्बर् थारुम् रामायणम्—रसिकमणि टी. के चिदम्बरनाथ मुदलियर
४. कम्बर् यर् ?—रसिकमणि टी. के. चिदम्बरनाथ मुदलियर
५. कम्ब चित्रम्—पी. श्री आचार्य
६. कम्ब रामायणम्—वी. एम. गोपालकृष्णमाचार्य
७. कम्ब-रामायण-सारम्—वी. पी. सुब्रमनिय मुदलियर
८. कम्बन् काव्य निलय—मुरुगप्पा
९. कल्वियिल् पेरियवर् कम्बर्—ए. वी. सुब्रमनिय अय्यर
१०. रावणन् मत्चियुम् वीषचियुम्—प्रो. ए. एस. ज्ञानसंबंदम्
११. वीर मानगर्—डॉ. आर. पी. सेतु पिल्लै
१२. सीता-कल्याणम् व पादुका-पट्टाभिषेकम्—टी. एम. भास्कर

इंग्लिश में

१. स्टडीज़ इन कम्ब रामायण—वी. वी. एस. अय्यर
२. सिलेक्ट ट्राँसलेशंस फ्राम कम्बन्—वी. एस. मुदलियर

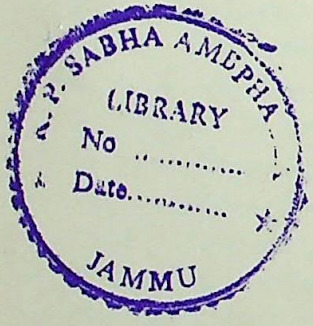

S. P. SABHA AMEPHA
LIBRARY
No ....
Date............
JAMMU

भारतीय साहित्य के निर्माता

१. केशवसुत : प्रभाकर माचवे
२. प्रेमचंद : प्रकाशचंद्र गुप्त
३. लक्ष्मीनाथ बेजबरुआ : हेम बरुआ
४. इलंगो अडिगल : मु० वरदराजन
५. नामदेव : माधव गोपाल देशमुख
६. वीरेशलिंगम् : नार्ल वेंकटेश्वर राव
७. शाह लतीफ : कल्याण बू० आडवाणी
८. ईश्वरचंद्र विद्यासागर : हिरण्मय बनर्जी
९. सचल सरमस्त : कल्याण बू० आडवाणी
१०. राजा राममोहन राय : सौम्येन्द्रनाथ टैगोर
११. प्रमथ चौधरी : अरुणकुमार मुखोपाध्याय
१२. श्रीपाद कृष्ण कोल्हटकर : मनोहर लक्ष्मण वराडपांडे
१३. तरु दत्त : पद्मिनी सेनगुप्त
१४. गालिब : मुहम्मद मुजीब
१५. कुमारन् आशान : के० एम० जॉर्ज
१६. चण्डीदास : सुकुमार सेन
१७. जीवनानंद दास : चिदानंद दासगुप्त
१८. ज्ञानदेव : पुरुषोत्तम यशवंत देशपांडे
१९. काजी नजरुल इस्लाम गोपाल हाल्दार
२०. नानालाल : उमेदभाई मणियार
२१. बंकिमचंद्र चटर्जी : सुबोधचंद्र सेनगुप्त
२२. ताराशंकर बन्द्योपाध्याय : महाश्वेता देवी
२३. पोतन्ना : दिवाकर्ल वेंकटावधानी
२४. वेदम वेंकटराय शास्त्री : वेदम वेंकटराय शास्त्री (कनिष्ठ)
२५. सरोजिनी नायडू : पद्मिनी सेनगुप्त
२६. बाणभट्ट : के० कृष्णमूर्ति
२७. माणिक वंद्योपाध्याय : सरोज मिश्र
२८. महर्षि देवेन्द्रनाथ ठाकुर : नारायण चौधुरी
२९. बि० एम० श्रीकंठय्य : ए० एन० मूर्तिराव
३०. भारतेन्दु हरिश्चंद्र : मदनगोपाल
३१. नरसिंह चिंतामणि केलकर : रामचन्द्र माधव गोले
३२. कल्हण : सोमनाथ दर
३३. श्यामसुंदरदास : सुधाकर पांडेय
३४. मेघाणी : वसन्तराय जटाशंकर त्रिवेदी
३५. राधानाथ राय : गोपीनाथ महांती
३६. नर्मदाशंकर : गुलाबदास ब्रोकर
३७. भारती : प्रेमा नंदकुमार
३८. कम्बन : एस० महाराजन
३९. सूर्यमल्ल मिश्रण : विष्णुदत्त शर्मा
४०. सरला दास : कृष्णचन्द्र पाणिग्राही

साहित्य अकादेमी राष्ट्रीय महत्त्व की संस्था है, जिसकी स्थापना भारत सरकार ने सन् १९५४ में की थी। यह एक स्वायत्त संस्था है, जिसकी नीतियाँ अकादेमी की परिषद् द्वारा निर्धारित होती हैं। परिषद् में विभिन्न भारतीय भाषाओं, राज्यों और विश्वविद्यालयों के प्रतिनिधि होते हैं।

साहित्य अकादेमी का प्रमुख उद्देश्य है भारतीय भाषाओं की साहित्यिक गतिविधियों का समन्वयन और उन्नयन करना और अनुवादों के माध्यम से विभिन्न भारतीय भाषाओं में उपलब्ध उत्तम साहित्य को समग्र देश के पाठकों तक पहुँचाना। अपने इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए साहित्य अकादेमी ने एक विस्तृत प्रकाशन-योजना हाथ में ली है। इस योजना के अंतर्गत जो ग्रंथ प्रकाशित हो चुके हैं उनकी सूची साहित्य अकादेमी के विक्रय-विभाग से प्राप्त की जा सकती है।

प्राप्ति-स्थान

रवीन्द्र भवन, ३५, फ़िरोज़शाह रोड, नई दिल्ली-१
ब्लाक ५-बी, रवीन्द्र सरोवर स्टेडियम, कलकत्ता-२९
२९ एल्डाम्स रोड, तेनाम पेट, मद्रास-१८
१७२, नायगाम क्रास रोड, दादर, बम्बई-१४